RNI No. 1302753 | Title Code : MPBIL02221 Year 1 | Issue 3

बीईंग माइंडफुल

October 2018 | Price : 70/-

अभी और यहीं !

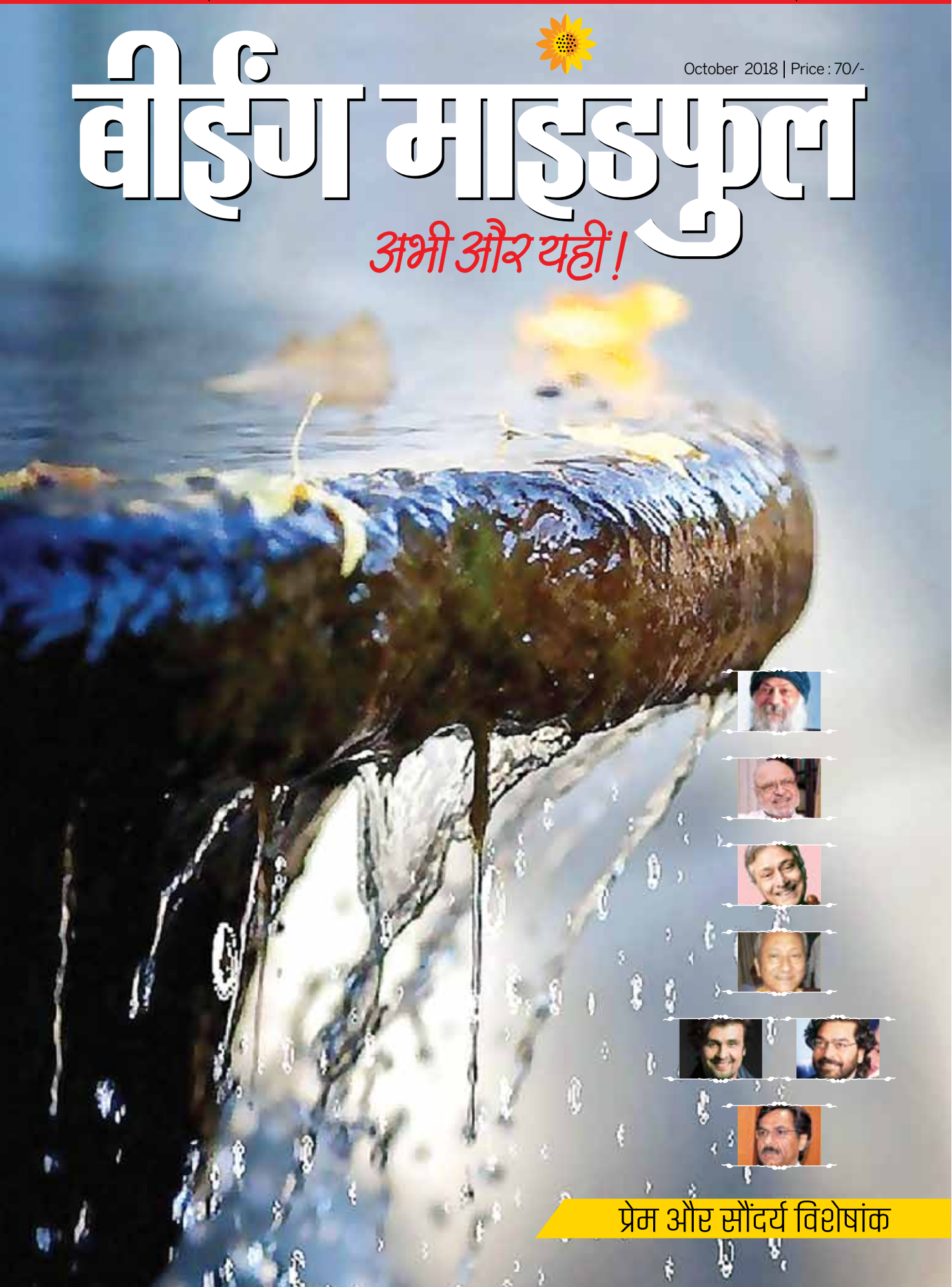

प्रेम और सौंदर्य विशेषांक

बीईंग माइंडफुल
अभी और यहीं!

संरक्षक	टीएल शर्मा बिपिन शर्मा
प्रधान संपादक	रितु शर्मा
संपादक	निशांत शर्मा
वरिष्ठ संपादक	मनोज दुबे
सलाहकार	संजीव पाठक, शैलेन्द्र महाजन, ललिता पाठक, जयरतन, सुधीर कुमार, निवेदिता, संजय पाण्डेय, देवेन्द्र शर्मा एवं आरती शर्मा
कानूनी सलाहकार	कमल किशोर वर्मा, अंकित शर्मा
आकल्पन	गगन / अमित / अखिलेश 9893948799 / 7566720984 / 7772002220
टाईपिंग	मोहसिन डायर
मूल्य	70/-

(आवरण : पिनट्रेस्ट से साभार)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रधान संपादक रितु शर्मा एवं संपादक निशांत शर्मा द्वारा, जोशी प्रिंटर्स 9, प्लॉट नं. 207, साईबाबा कॉम्पलेक्स, जोन-I, एमपी नगर, भोपाल (मप्र) से मुद्रित तथा ए-08, गौतम नगर, गोविन्दपुरा, भोपाल-462023 (मप्र) से प्रकाशित। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल कोर्ट रहेगा।

सभी अधिकार सुरक्षित

प्रधान संपादक - रितु शर्मा
मो. नम्बर - 9522560786, 9131371120
E-mail : editorbeingmindful@gmail.com

सौजन्य

- संस्थापक और एमडी आर सिस्टम्स इन्टरनेशनल।
- संस्थापक : रेखी सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस फॉर द साइंस हैप्पीनेस, आईआईटी खड़गपुर

श्री रेखी मानव के पूर्णतावादी उत्थान के हितैषी हैं और महिला सशक्तिकरण के लिए कटिबद्ध हैं।

श्री सतिंदर सिंह रेखी

बीईंग माइंडफुल हेतु विशेष सहयोग के लिए आभार।

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
ए-8, गौतम नगर, गोविन्दपुरा, भोपाल-462023 (मप्र)
फोन : 09522560786, 9425371820, 9131371120

Title Code : MPBIL02221
Year 01 | Issue 03

प्रेम और सौंदर्य विशेषांक

बीईंग माइंडफुल

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं साक्षात्कार स्वतंत्र विचार एवं मत हैं। जिससे संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
-प्रधान संपादक

बीईंग माइंडफुल

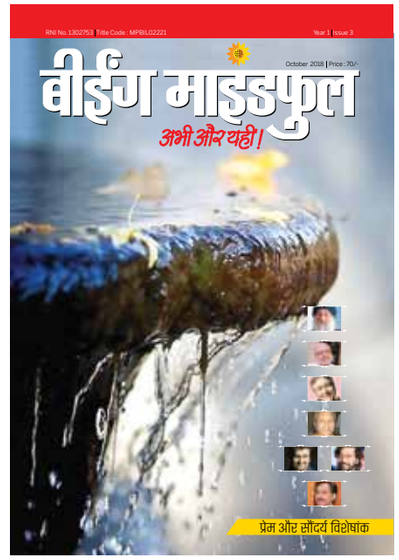

- पत्रिका के अर्द्धवार्षिक अंकों की अपार लोकप्रियता और सफलता को देखते हुए अब यह पत्रिका अक्टूबर से प्रतिमाह प्रकाशित की जा रही है। जिसकी कीमत अब नवम्बर माह से 40 रुपए मात्र होगी। हर माह एक नई थीम विविधता के साथ सुधी पाठकों के लिए प्रस्तुत की जाएगी।
- हमारे जीवन की खुशी या दुःख का सीधा संबंध इच्छाओं से होता है, लेकिन इच्छा और आवश्यकता में अंतर जानने पर ही हम जीवन को सुंदर और संतुलित ढंग से जी सकते हैं। इसलिए इस बार के नवम्बर अंक की थीम "इच्छा और आवश्यकता" के लिए अपने शोधपरक/मौलिक आलेख (हिन्दी या अंग्रेजी) तथा थीम से संबंधित फोटोग्राफ्स, ए4 साइज पेपर में यूनिकोड या मंगल फोन्ट में पासपोर्ट साइज फोटो सहित पूरे पते (ई-मेल, फोन नम्बर) के साथ 25 अक्टूबर 2018 तक ई-मेल editorbeingmindful@gmail.com करें:-

यह अंक आपको कैसा लगा, आपके विचार या सुझाव हमारे लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। इन्हें ऊपर दिए मेल एड्रेस पर भेजिए। प्रतिक्रियाएं भी प्रकाशित की जाएंगी।

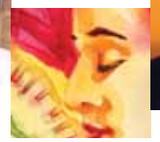

कहां क्या है... पढ़िए

प्रेम, संबंध नहीं है	ओशो	06
फूल, संगीत, खुशबू, रंग, अग्नि; किसी धर्म के नहीं	अमजद अली खां	10
follow your instinct	श्याम बेनेगल	14
बारम्बार	प्रो. सत्यमोहन वर्मा	15
राजा ने जीडीपी की बजाय खुशी पर ज़ोर दिया...	डॉ. सामधू क्षेत्री	16
प्रेम आंतरिक अनुभव की मिठास है	इकबाल सिंह बैंस	18
प्रेम में शून्यता, आनंद का चरम	सोनू निगम	20
क्या प्रेम को हम आचरण में उतार सके हैं...	आशुतोष राणा	22
प्रेम नकारने नहीं, स्वीकार किए जाने की मांग है	विजय बहादुर सिंह	24
सौन्दर्य के प्रति निर्द्वंद बहाव ही प्रेम है	डॉ. विभेश कुमार चौबे	26
आत्म संगीत	मुंशी प्रेमचंद	28
प्रेम हमें अंदर से सुंदर बनाता है	पंकज सुबीर	30
क्या आप प्रेम में हैं ?	डॉ. विनय मिश्रा	32
गुरु का पीड़ा सहना प्रेम, शिष्य का रुदन सौंदर्य	प्रशांत पाण्डेय	34
प्रेम और सौंदर्य क्या आसपास रहते हैं या...	विनयश्री दुबे	36
अंतस् में आनंद	अजय कुमार सिंह	38
दान से मुक्ति और उससे खुशी का दर्शन	मानस श्री डॉ.नरेन्द्र कुमार मेहता	40
एकात्मता का अवबोध प्रेम	प्रभाकर पाण्डेय	42
सौंदर्यजन्य शाश्वत प्रेम	डॉ. अतुला भास्कर	44
`समै-समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न होय...	डॉ. प्रशांत पाठक	48
प्रेम निर्लिप्त और प्रेम पवित्र	परिधि भंडारी	50
रब को जो मंज़ूर था सो हो गया...	ग़ौसिया खान	53
प्रेम..... भावना नहीं आपका अस्तित्व है	गुरमीत सिंह सलूजा	54
प्रेम स्वयं एक सौंदर्य	वन्दना नौहोरिया	56
हवाओं में बिखर जाए न साँसों में भरी नफ़रत	सीमाहरि शर्मा	58
विषवत कष्ट निगलता चल मन यायावर चलता चल	हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'	59
सौंदर्य मन की प्रेम कहानी!	डॉ. अजय वर्मा	60
प्रेम का फूल तोड़ो मत सौंदर्य गंवा देगा	विनय गोपाल त्रिपाठी	62
Love & Beauty	डॉ. शालिनी सक्सेना	64
क्या प्यार से अधिक कुछ सुन्दर है ?	डॉ. रीना वालिया	66
लोकमानस का सौन्दर्य	डॉ. अनीता शर्मा	68
इश्क़े-मिज़ाजी इश्क़े-हक़ीक़ी	मनोज कुमार मिश्र	70
जीवन की चिड़िया	शशि भूषण सिंह	72

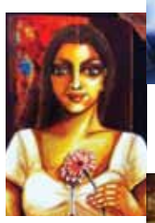

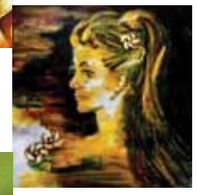
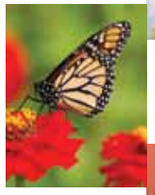
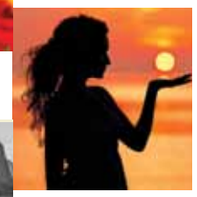
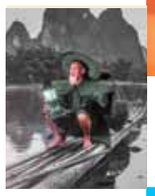

संपादकीय

रितु शर्मा
प्रधान संपादक

प्रेम ही परिवर्तन का एकमात्र सुन्दरतम उपाय है

प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समाय!
जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान!!

सच कह गए कबीर, प्रेम की संकरी गली में 'दो' एक साथ नहीं समा सकते। 'दूसरे' से अर्थ 'अहं' से है। जब 'अहं' गया तब ही 'प्रेम' नामक अमृत का रसास्वादन संभव है। सृष्टि का आधार भी प्रेम और कारण भी प्रेम है। कण-कण में बहने वाली अदृश्य ऊर्जा भी प्रेम। शिव का रूप प्रेम, सत्य प्रेम। जो भी सत्य है वह सुंदर और शाश्वत हो जाता है। अस्तित्व के तीन बहुमूल्य रत्न हैं-सत्यं, शिवं, सुंदरम! सौन्दर्य मन को लुभाने वाली प्रकृति की कला है जो सत्य के मूल से प्रस्फुटित होती है। असत्य का बोध होने पर बाह्य सुन्दरता का तिलिस्म टूट जाता है। जबकि वास्तविक सत्य का बोध,आवरण को तोड़, चिरस्थायी सौंदर्य की ओर उन्मुख करता है। बाहरी सौंदर्य, निसर्ग के सत्य को उद्घाटित करने का द्वार है।

मनुष्यों में 'राग' प्रेम का विरल रूप है। 'त्याग' उत्कृष्ट,और 'क्षमा' सर्वोत्कृष्ट है। प्रेम के अधूरेपन की युद्धभूमि ही संसार का आलंबन है। हर किसी की खोज इसी प्रेम से प्रेरित 'प्रेम' हो जाने तक के द्वंद्व की गाथा है। दृष्टि में प्रेम, दृश्य में सौंदर्य, कृत्य में सहिष्णुता शुद्धतम गुण है।

प्रेमी के लिए संपूर्ण ब्रह्मांड 'प्रेममय' है। 'मैं' भी नहीं, न ही कोई 'दूसरा' ही... । प्रेमपूर्ण हृदय की पुकार बन कपोल पर झरते अश्रु भक्ति का सौंदर्य है। मनुष्यों में प्रेम मित्रता की भूमि पर फलदार वृक्ष बनकर, आनंद के अंतरिक्ष तक असीम हो जाता है। मां का 'वात्सल्य' प्रेम है। प्राणीमात्र के लिए 'संवेदना' प्रेम है।

बिना प्रेम जीवन व्यर्थ, कोलाहल की धुंध है। तेरी मेरी श्वास में बहता प्राण, प्रेम है। प्रेम के तल से सतह पर आती 'वैविध्य' की लहरें प्रेम का सुन्दरतम प्रकटीकरण हैं। ये प्रेम ही तो है, जो मधुर शब्द, संगीत, कविता, चित्र, रस, सुगंध में एकाग्र है। एक 'बिंदु' समग्र, कोर से छोर तक, धरती से आकाश, अंधकार से प्रकाश तक तरंगित आनंद, उल्लास का अनहद राग है।

क्रोध, लोभ, मोह, छल, वासना, हिंसा और कुविचार, 'स्वप्रेम' के अधिक निकट हैं। खंडित और 'बँटी' 'स्व' के रोग है। रिक्त, मलिन हृदय प्रेम के व्याकुल हैं। यह 'विरोधाभास' भी सौन्दर्य का पूरक है। सृष्टि की चंचलता बारम्बारता का प्रतीक है। 'दोनों' को एकसाथ 'के पार', दृश्य हो पाना, सत्य है।

प्रेम की पगडंडी जिसने खोजी उससे छूटे, बंधे-बने सुगम रास्ते, भीड़... जो, अशर्त, अतर्क, विचारशून्य होकर, 'भाव' की अलख से चलता रहा, उसने जाना जीवन का रहस्य, अनंत प्रेम का आस्वाद...! फिर छूटे, मान, धन, वैभव, प्रशंसा के छद्म मणि। व्यर्थ है सब!!

धन्य हम, अनंत कृतज्ञ उस निसर्ग के आगे नतमस्तक!!!
प्रेम का बीज छुपा दिया भीतर!!
प्रेम से, प्रेम के लिए परिवर्तन ही सुन्दर उपाय है।

प्रेम सृजन है, सत्व है।
प्रेम का आरंभ द्वैत है, मिलन अद्वैत।
प्रेम राग है, रसों में श्रृंगार है।
प्रेम विरक्ति है, एकांत है।
प्रेम साकार की अभिव्यक्ति है, प्रकृति है।
प्रेम अविरल बहती नदी है, जीवन संगीत है।
प्रेम में 'मौन' स्वीकृति है।
प्रेम का रंग 'लाल' है, ऊर्जा का प्रकाश
प्रेम 'स्पर्श' की सुखद अनुभूति है।
प्रेम जीवन का उत्सव है, उल्लास है।
प्रेम निश्छल, बाल मुस्कान है।
प्रेम हृदयों को जोड़ने वाला महीन तार है।
प्रेम के सभी रूप समान है, महान हैं।
प्रेम रिश्तों की कमान है, सम्मान है।
प्रेम शक्ति है, चैतन्य का द्वार है।
प्रेम, कण में विराट का दर्शन, ईश्वर का वरदान है।
प्रेम समयातीत, इंद्रियातीत, मधुर अमृतपान है।
प्रेम एक से अनेक में फैलता ब्रह्माण्ड है।
प्रेम में ईर्ष्या, द्वेष, कामना अभिशाप हैं, ढलान हैं।
प्रेम में आनंद, सर्वोच्च सोपान है, विश्राम है।

E-mail : editorbeingmindful@gmail.com

प्रेम, संबंध नहीं है

ओशो

(सौजन्य, ओशो इंटरनेशनल)

प्रेम शब्द जितना मिसअंडरस्टुड है, जितना गलत समझा जाता है, उतना शायद मनुष्य की भाषा में कोई दूसरा शब्द नहीं! प्रेम के संबंध में जो गलत-समझी है, उसका ही विराट रूप इस जगत के सारे उपद्रव, हिंसा, कलह, द्वंद्व और संघर्ष हैं। प्रेम की बात इसलिए थोड़ी ठीक से समझ लेनी जरूरी है। जैसा हम जीवन जीते हैं, प्रत्येक को यह अनुभव होता होगा कि शायद जीवन के केंद्र में प्रेम की आकांक्षा और प्रेम की प्यास और प्रेम की प्रार्थना है। जीवन का केंद्र अगर खोजना हो, तो प्रेम के अतिरिक्त और कोई केंद्र नहीं मिल सकता है।

समस्त जीवन के केंद्र में एक ही प्यास है, एक ही प्रार्थना है, एक ही अभीप्सा है--वह अभीप्सा प्रेम की है। और वही अभीप्सा असफल हो जाती हो तो जीवन व्यर्थ दिखायी पड़ने लगे--अर्थहीन, मीनिंगलेस, फस्ट्रेशन मालूम पड़े, विफलता मालूम पड़े, चिंता मालूम पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं है। जीवन की केंद्रीय प्यास ही सफल नहीं हो पाती है! न तो हम प्रेम दे पाते हैं और न उपलब्ध कर पाते हैं। और प्रेम जब असफल रह जाता है, प्रेम का बीज जब अंकुरित नहीं हो पाता, तो सारा जीवन व्यर्थ-व्यर्थ, असार-असार मालूम होने लगता है।

जीवन की असारता प्रेम की विफलता का फल है। जब प्रेम सफल होता है, तो जीवन सार बन जाता है। प्रेम विफल होता है तो जीवन प्रयोजनहीन मालूम होने लगता है। लेकिन यह प्रेम है क्या? यह प्रेम की अभीप्सा क्या है? यह प्रेम की पागल प्यास क्या है? कौन-सी बात है, जो प्रेम के नाम से हम चाहते हैं और नहीं उपलब्ध कर पाते हैं? जीवन भर प्रयास करते हैं? सारे प्रयास प्रेम के आसपास ही होते हैं। युद्ध प्रेम के आसपास लड़े जाते हैं। धन प्रेम के आसपास इकट्ठा किया जाता है। यश की सीढ़ियां प्रेम के लिए पार की जाती हैं। घर-द्वार प्रेम के लिए बसाये जाते हैं और प्रेम के लिए छोड़े जाते हैं। जीवन का समस्त क्रम प्रेम की गंगोत्री से निकलता है। जो लोग महत्वाकांक्षा की यात्रा करते हैं, पदों की यात्रा करते हैं, यश की कामना करते हैं, क्या आपको पता है, वे सारे लोग यश के माध्यम से जो प्रेम से नहीं मिला है, उसे पा लेने की कोशिश करते हैं! जो धन की तिजोरियां भरते चले जाते हैं, अंबार लगाते जाते हैं, क्या आपको पता है, जो प्रेम से नहीं मिला, वह पैसे के संग्रह से पूरा करना चाहते हैं! लेकिन यह प्रेम की अभीप्सा क्या है? पहले इसे समझें तो बात समझी जा सकेगी। जैसा मैंने कहा, मनुष्य का जन्म होता है, मां से टूट जाता है संबंध, शरीर का। अलग एक इकाई अपनी यात्रा शुरू कर देती है। अकेली एक इकाई जीवन के इस विराट जगत में अकेली यात्रा शुरू कर देती है! मां से व्यक्ति अलग होता है। एक बूंद टूट गयी सागर से और अनंत आकाश में भटक गयी है। वह बूंद वापस सागर से जुड़ना चाहती है। वह जो व्यक्ति है, वह फिर समष्टि के साथ एक होना चाहता है। वह जो अलग हो जाना है, वह जो पार्थक्य है, वह फिर से समाप्त होना चाहता है। प्रेम की आकांक्षा--एक हो जाने की, समस्त के साथ एक हो जाने की आकांक्षा है।

प्रेम की आकांक्षा, अद्वैत की आकांक्षा है। प्रेम की एक ही प्यास है, एक हो जाये सबसे; जो है, समस्त से संयुक्त हो जाये। जो पार्थक्य है, जो व्यक्ति का अलग होना है, वही पीड़ा है व्यक्ति की। जो व्यक्ति का सबसे दूर खड़े हो जाना है, वही दुख है, वही चिंता है। वापस बूंद सागर के साथ एक होना चाहती है। प्रेम की आकांक्षा समस्त जीवन के साथ एक हो जाने की प्यास और प्रार्थना है। प्रेम का मौलिक भाव एकता खोजना है। लेकिन जिन-जिन दिशाओं में हम यह एकता खोजते हैं, वहीं-वहीं असफल हो जाते हैं। जहां-जहां यह एकता खोजी जाती है, वहीं-वहीं असफल हो जाते हैं। शायद जिन मार्गों से हम एकता खोजते हैं, वे मार्ग ही अलग करने वाले मार्ग हैं, एक करने वाले मार्ग नहीं। इसलिए प्रेम के नाम से झूठे सिक्के प्रचलित हो गये हैं। मनुष्य जो एकता खोजता है, वह शरीर के तल पर खोजता है। लेकिन शायद आपको पता नहीं, पदार्थ के तल पर जगत में कोई भी एकता संभव नहीं है। शरीर के तल पर कोई भी एकता संभव नहीं है। पदार्थ अनिवार्य रूप से एटामिक है, आणविक है और एक-एक अणु अलग-अलग है। दो अणु पास तो हो सकते हैं, लेकिन एक नहीं हो सकते। दो अणुओं के बीच अनिवार्य रूप से जगह शेष रह जायेगी, फासला, डिस्टेंस शेष रह जायेगा। पदार्थ की सत्ता एटामिक है, आणविक है। प्रत्येक अणु दूसरे अणु से अलग है।

हम लाख उपाय करें तो भी दो अणु एक नहीं हो सकते। उनके बीच में फासला है, उनके बीच में दूरी शेष रह ही जायेगी। ये हाथ हम कितने ही निकट ले आयें, ये हाथ हमें जुड़े हुए मालूम पड़ते हैं, लेकिन ये हाथ फिर भी दूर हैं। इनके जोड़ में भी फासला है। इन दोनों हाथ के बीच में दूरी है, वह दूरी समाप्त नहीं हो सकती। प्रेम में हम किसी को हृदय से लगा लेते हैं। दो देह पास आ जाती हैं, लेकिन दूरी बरकरार रहती है, दूरी मौजूद रह जाती है। इसलिए हृदय से लगाकर भी पता चलता है कि हम अलग-अलग हैं, पास नहीं हो पाये हैं, एक नहीं हो पाये हैं। शरीर को निकट लाने पर भी, वह जो एक होने की कामना थी, अतृप्त रह जाती है। इसलिए शरीर के तल पर किये गये सारे प्रेम असफल हो जाते हों, तो आश्चर्य नहीं। प्रेमी पाता है कि असफल हो गये। जिसके साथ एक होना चाहा था, वह पास तो आ गया; लेकिन एक नहीं हो पाये। लेकिन उसे यह नहीं दिखायी पड़ता कि यह शरीर की सीमा है कि शरीर के तल पर एक नहीं हुआ जा सकता, पदार्थ के तल पर एक नहीं हुआ जा सकता, मैटर के तल पर एक नहीं हुआ जा सकता। यह स्वभाव है पदार्थ का कि वहां पार्थक्य होगा, दूरी होगी। लेकिन प्रेमी को यह नहीं दिखायी पड़ता है! उसे तो यह दिखायी पड़ता है कि शायद जिसे मैंने प्रेम किया है, वह मुझे ठीक से प्रेम नहीं कर पा रहा है, इसलिए दूरी रह गयी है।

शरीर के तल पर एकता खोजना नासमझी है, यह उसे नहीं दिखायी पड़ता! लेकिन दूसरा--प्रेमी दूसरी तरफ जो खड़ा है, जिससे उसने प्रेम की आकांक्षा की थी, वह शायद प्रेम नहीं कर रहा है, इसलिए एकता उपलब्ध नहीं हो पा रही। उसका क्रोध प्रेमी पर होता है, लेकिन दिशा ही गलत थी प्रेम की, यह खयाल नहीं आता! इसलिए प्रेमी एक-दूसरे पर क्रुद्ध दिखायी पड़ते हैं। पति-पत्नी एक-दूसरे पर क्रुद्ध दिखायी पड़ते हैं! क्योंकि वह आकांक्षा जो एक होने की थी, वह असफल हो गयी है। और वे सोच रहे हैं कि दूसरे के कारण असफल हो गयी है! प्रत्येक यही सोच रहा है कि दूसरे के कारण असफल हो गया हूं, इसलिए दूसरे पर क्रोध कर रहा है! लेकिन मार्ग ही गलत था। प्रेम शरीर के तल पर नहीं खोजा जा सकता था, इसका स्मरण नहीं आता है। इस एकता की दौड़ में, जिसे हम प्रेम करते हैं, उसे हम 'पजेस' करना चाहते हैं, उसके हम पूरे मालिक हो जाना चाहते हैं! कहीं ऐसा न हो कि मालकियत कम रह जाये, पजेशन कम रह जाये तो एकता कम रह जाये। इसलिए प्रेमी एक-दूसरे के मालिक हो जाना चाहते हैं। मुट्ठी पूरी कस लेना चाहते हैं। दीवाल पूरी बना लेना चाहते हैं कि प्रेमी कहीं दूर न हो जाये, कहीं हट न जाये, कहीं दूसरे मार्ग पर न चला जाये, किसी और के प्रेम में संलग्न न हो जाये। तो प्रेमी एक-दूसरे को पजेस करना चाहते हैं, मालकियत करना चाहते हैं। और उन्हें पता नहीं कि प्रेम कभी मालिक नहीं होता। जितनी मालकियत की कोशिश होती है, उतना फासला बड़ा होता चला जाता है, उतनी दूरी बढ़ती चली जाती है; क्योंकि प्रेम हिंसा नहीं है, मालकियत हिंसा है, मालकियत शत्रुता है। मालकियत किसी की गर्दन को मुट्ठी में बांध लेना है।

मालकियत जंजीर है। लेकिन प्रेम भयभीत होता है कि कहीं मेरा फासला बड़ा न हो जाये, इसलिए निकट, और निकट, और सब तरफ से सुरक्षित कर लूं ताकि प्रेम का फासला नष्ट हो जाये, दूरी नष्ट हो जाये। जितनी यह चेष्टा चलती है दूरी नष्ट करने की, दूरी उतनी बड़ी होती चली जाती है। विफलता हाथ लगती है, दुख हाथ लगता है, चिंता हाथ लगती है। फिर आदमी सोचता है कि यह प्रेम शायद इस व्यक्ति से पूरा नहीं हो पाया है, इसलिए दूसरे व्यक्ति को खोजूं। शायद यह व्यक्ति ही गलत है। तब आंखें दूसरे प्रेमियों की खोज में भटकती हैं, लेकिन बुनियादी गलती वहीं की वहीं बनी रहती है। शरीर के तल पर एकता असंभव है, यह ख्याल नहीं आता! यह शरीर और वह शरीर का सवाल नहीं है। सभी शरीर के तल पर एकता असंभव है। आज तक मनुष्य-जाति शरीर के तल पर एकता और प्रेम को खोजती रही है, इसलिए जगत में प्रेम जैसी घटना घटित नहीं हो पायी। जैसा मैंने आपसे कहा, यह जो पजेशन और मालकियत की चेष्टा चलती है, स्वभावतः उसके आसपास ईर्ष्या का जन्म होगा। जहां मालकियत है, वहां ईर्ष्या है। जहां पजेशन है, वहां जेलसी है। इसलिए प्रेम के फूल के आसपास ईर्ष्या के बहुत कांटे, बहुत बागड़ खड़े हो जाते हैं और ईर्ष्या की आग के बीच प्रेम कुम्हला जाता हो, तो आश्चर्य नहीं। वह जन्म भी नहीं पाता है कि जलना शुरू हो जाता है! जन्म भी नहीं हो पाता कि चिता पर सवारी शुरू हो जाती है! जैसे किसी बच्चे को पैदा होते ही हमने चिता पर रख दिया हो, ऐसे ही प्रेम ईर्ष्या की चिता पर रोज चढ़ जाता है। ईर्ष्या वहां पैदा होती है, जहां मालकियत हैं। जहां मैंने कहा, 'मैं', 'मेरा', वहां डर है कि कहीं कोई और मालिक न हो जाये। ईर्ष्या शुरू हो गयी, भय शुरू हो गया, घबराहट शुरू हो गयी, चिंता शुरू हो गयी, पहरेदारी शुरू हो गयी। और ये सारे के सारे मिलकर प्रेम की हत्या कर देते हैं।

प्रेम को किसी पहरे की कोई जरूरत नहीं। प्रेम का ईर्ष्या से कोई नाता नहीं है। लेकिन प्रेम है ही नहीं। प्रेम के किनारे जाकर आदमी की नौका टूट जाती है। जो नौका बननी चाहिए थी, जिस पर हम यात्रा करते, वह टूट जाती है; क्योंकि हमने प्रेम को बिल्कुल ही गलत ढंग से शुरू किया है। पहली बात आपसे यह कहना चाहता हूं, पदार्थ के तल पर कोई प्रेम संभव नहीं है। वह इम्पॉसिबिलिटी है। वह मेरी और आपकी असफलता नहीं है, वह मनुष्य-जाति, जीवन के लिए, असंभावना है। पदार्थ के तल पर कोई एकता उपलब्ध नहीं हो सकती। जब तक यह एकता उपलब्ध नहीं होती, सब तरफ चिंता और विफलता दिखायी पड़ती है, तो कुछ शिक्षक यह कहने लगते हैं कि यह प्रेम ही गलत है, यह प्रेम की बात ही गलत है, प्रेम का विचार ही गलत है! छोड़ो प्रेम के भाव को, उदासीन हो जाओ! जीवन को उदासी से भर लो, जीवन से प्रेम की सब जड़ें काट दो! यह दूसरी गलती है। प्रेम गलत दिशा में गया था, इसलिए असफल हुआ है। प्रेम असफल नहीं हुआ, गलत दिशा असफल हुई है। लेकिन कुछ लोग इसका अर्थ लेते हैं कि प्रेम असफल हो गया है! तो अप्रेम की शिक्षाएं हैं--अपने प्रेम को सिकोड़ लो, अपने से बाहर मत जाने दो! अपने से बाहर तो बंधन बनेगा, मोह बनेगा, आसक्ति बनेगा! अपने भीतर बंद कर लो! प्रेम को बाहर मत बहने

दो! उदासीन जीवन के प्रति हो जाओ! प्रेम की खोज ही बंद कर दो! एक यह दिशा पैदा होती है। यह विफलता का ही परिणाम है, यह प्रतिक्रिया है कुंठा की। प्रेम की तरफ पीठ करके जाने वाले लोग उसी गलती में हैं, जिस गलती में प्रेम को शरीर के तल पर खोजने वाले लोग थे। व्यक्ति जब प्रेम की संभावना छोड़ देगा, तो उसके पास सिर्फ अहंकार की संभावना शेष रह जाती है, और कुछ भी शेष नहीं रह जाता। प्रेम अकेला तत्व है, जो अहंकार को तोड़ता है और मिटाता है। प्रेम अकेला रसायन है, जिसमें अहंकार गलता है और पिघलता है और बह जाता है। जो लोग प्रेम से वंचित अपने को कर लेंगे, वे सिर्फ ईगोइस्ट हो सकते हैं, सिर्फ अहंकारी हो सकते हैं और कुछ भी नहीं। उनके पास अहंकार को गलाने और तोड़ने का कोई उपाय न रहा, कोई मार्ग न रहा। प्रेम स्वयं के बाहर ले जाता है। प्रेम अकेला द्वार है, जिससे हम अपने बाहर निकलते हैं और अनंत की यात्रा पर चरण रखते हैं। प्रेम जो अनन्य है, जो जगत है, जो जीवन है, उससे जोड़ता है। लेकिन जो प्रेम की यात्रा बंद कर देते हैं, वे टूटकर सिर्फ अपने 'मैं' में, अपने अहंकार में, अपने ईगो में कैद हो जाते हैं, बंद हो जाते हैं। एक तरफ विफल प्रेमी हैं, दूसरी तरफ अहंकार से भरे हुए साधु और संन्यासी हैं! अहंकार इस बात की स्वीकृति है जैसा मैंने कहा। प्रेम इस बात की खोज है कि मैं सबके साथ एकता खोज लूं, समष्टि के साथ एक हो जाऊं। अहंकार इस बात का निर्णय है कि मैंने एकता खोजनी बंद कर दी। 'मैं' मैं हूं। मैं अलग ही रहूंगा। मैं अपनी सत्ता से निश्चिन्त हो गया हूं। मैंने मान लिया कि 'मैं' मैं हूं। बूंद ने स्वीकार कर लिया कि सागर से मिलना असंभव है या मिलने की कोई जरूरत नहीं है!

यह बूंद जो अपने में बंद हो गयी, यह भी आनंद को उपलब्ध नहीं हो सकती। यह सिकुड़ गयी, बहुत छोटी हो गयी, बहुत क्षुद्र हो गयी। अहंकार क्षुद्र कर देता है, सिकोड़ देता है, बहुत छोटा बना देता है। जहां सीमा है, वहां अंत है, वहां मृत्यु है। जहां सीमा नहीं है, वह अनंत है, वहां अमृत है। क्योंकि जहां सीमा नहीं, वहां अंत नहीं, वहां मृत्यु नहीं। अहंकारी क्षुद्र के साथ जुड़ जाता है। अपने को अलग मानकर ठहर जाता है; रुक जाता है, पिघलने से, बह जाने से, मिट जाने से; सबके साथ एक हो जाने से अपने को रोक लेता है! आदमी का अहंकार लड़-लड़ कर टूट जाता है, लेकिन मिटने को राजी नहीं होता। किससे हम लड़ रहे हैं? स्वयं के ही विराट रूप से! स्मरण रहे, प्रेम, मैंने कहा, एक हो जाने की आकांक्षा है। और एक वही हो सकता है, जो मिटने को राजी हो। एक वही हो सकता है, जो मिटने को राजी हो। जो मिटने को राजी नहीं होता, उसके लिए दूसरी दिशा खुल जाती है। वह अहंकार की दिशा है। तब वह अपने को बनाने को, मजबूत करने को, पुष्ट करने को, ज्यादा सख्त अपने आसपास दीवार उठाने को, किला बनाने को उत्सुक हो जाता है! अपने 'मैं' को मजबूत करने की यात्रा में संलग्न हो जाता है। प्रेमी असफल हो गये, क्योंकि शरीर के तल पर एकता खोजी। संन्यासी असफल हो जाते हैं, क्योंकि अहंकार के तल पर अलग होने का निर्णय करते हैं। क्या कोई तीसरा मार्ग नहीं है? उसी तीसरे मार्ग की आपसे बात कहना चाहता हूं। जब सब शब्द छूट जाते हैं और आदमी मौन होता है तो पाता है कि वहां कोई 'मैं' नहीं है। कभी मौन होकर देखें। कभी चुप होकर देखें, कभी शांत होकर देखें, वहां फिर कोई 'मैं' नहीं पाया जाता। वहां कोई 'मैं' नहीं है। वहां एक्जिसटेंस है, वहां सत्ता है, अस्तित्व है। लेकिन 'मैं' नहीं है।

'मैं' मनुष्य का आविष्कार है। बिलकुल झूठा। उतना ही झूठा, जैसे हमारे नाम झूठे हैं। क्यों? कोई आदमी किसी नाम को लेकर पैदा नहीं होता। लेकिन जन्म के बाद हम नाम दे देते हैं, ताकि दूसरे लोग उसे पुकार सकें, बुला सकें। नाम की उपयोगिता है, यूटिलिटी है, लेकिन नाम की कोई सत्ता नहीं, कोई अस्तित्व नहीं। दूसरे लोग नाम लेकर बुलाते हैं, मैं खुद क्या कहकर अपने को बुलाऊं? मैं अपने को 'मैं' कहकर बुलाता हूं। 'मैं' खुद के लिए, खुद को पुकारने के लिए दिया गया नाम है। और नाम दूसरों को पुकारने के लिए दिये गये नाम हैं। नाम भी उतना ही असत्य है, जितना 'मैं' का भाव असत्य है। लेकिन इसी 'मैं' को हम मजबूत करते चले जाते हैं! 'मैं' को मोक्ष चाहिए, 'मैं' को परमात्मा चाहिए --इसी 'मैं' को सुख चाहिए! लेकिन 'मैं' को कुछ भी नहीं मिल सकता है, क्योंकि 'मैं' बिलकुल झूठ है, 'मैं' असत्य है। जो असत्य है, उसे कुछ भी नहीं मिल सकता है। 'मैं' भी असफल हो जाता है और प्रेम भी असफल हो जाता है। और दो ही दिशाएं है--एक प्रेम की दिशा है और एक अहंकार की दिशा है। मनुष्य के जगत में दो मार्गों के अतिरिक्त कोई तीसरा मार्ग नहीं है--एक 'मैं' का, एक प्रेम का। प्रेम असफल होता है, क्योंकि हम शरीर के तल पर खोजते हैं। 'मैं' असफल होता हैं, क्योंकि असत्य है। तीसरा क्या हो सकता है?

तीसरा यह कि हम 'मैं' की सम्यक दिशा खोजें, प्रेम की सम्यक दिशा खोजें, और 'मैं' की असम्यक दिशा से बचें। प्रेम शरीर के तल पर नहीं, चेतना के तल पर घटने वाली घटना है। शरीर के तल पर जब प्रेम को हम घटाने की कोशिश करते हैं, तो प्रेम ऑब्जेक्टिव हो जाता है। कोई पात्र होता है प्रेम का, उसकी तरफ हम प्रेम को बहाने की कोशिश करते हैं। वहां से प्रेम वापस लौट आता है, क्योंकि पात्र शरीर होता है, जो दिखायी पड़ता है, जो स्पर्श में आता है। लेकिन प्रेम को अगर आत्मिक घटना बनानी है, अगर प्रेम की कॉन्शसनेस बनाना है, चेतना बनाना है तो प्रेम ऑब्जेक्टिव नहीं रह जाता, सब्जेक्टिव हो जाता है। तब प्रेम एक संबंध नहीं, चित्त की एक दशा है, स्टेट आफ माइंड है। बुद्ध एक सुबह बैठे हैं और एक आदमी आ गया है। वह बहुत क्रोध में है। उसने बुद्ध को बहुत गालियां दी हैं और फिर इतने क्रोध से भर गया है कि उसने बुद्ध के मुंह के ऊपर थूक दिया है! बुद्ध ने अपने चादर से वह थूक पोंछ लिया और उससे कहा, मित्र, कुछ और कहना है? भिक्षु आनंद बुद्ध के पास बैठा है। वह क्रोध से भर गया है। और बुद्ध की यह बात सुनकर कि वे कहते हैं कि कुछ और कहना है, वह और हैरान हो गया है। और उसने कहा, 'आप क्या कहते हैं? यह आदमी थूक रहा है और आप पूछते हैं, कुछ और कहना है!' बुद्ध ने कहा, 'मैं समझ रहा हूं, शायद क्रोध इतना भारी हो गया है कि शब्द कहने में असमर्थ मालूम होते होंगे, इसलिए उसने थूककर कोई बात कही है। मैं समझ गया हूं, उसने कुछ कहा है।

अब मैं पूछता हूं, और कुछ कहना है? वह आदमी उठ गया है, लौट गया है। पछताया है, रात भर सो नहीं सका है। दूसरे दिन सुबह क्षमा मांगने आया है। बुद्ध के चरणों में उसने सिर रख दिया। सिर उठाया, बुद्ध ने कहा, और कुछ कहना है? वह आदमी कहने लगा, कल भी आप यही कहते थे! बुद्ध ने कहा, आज भी वही कहता हूं। शायद कुछ कहना चाहते हो। शब्द कहने में असमर्थ थे, इसलिए सिर पैरों पर रखकर कह दिया है। कल थूक कर कहा था। पूछता हूं, कुछ और कहना है? वह आदमी बोला, कुछ और नहीं, क्षमा मांगने आया हूं। रात भर सो नहीं सका। मन में यह ख्याल हुआ, आज तक आपका प्रेम मिला मुझे, आज थूक आया हूं आपके ऊपर, अब शायद वह प्रेम मुझे नहीं मिल सकेगा। बुद्ध खूब हंसने लगे और उन्होंने कहा, सुनते हो आनंद, यह आदमी कैसी पागलपन की बातें कहता है! यह कहता है कि कल तक मुझे आपका प्रेम मिला और कल मैंने थूक दिया तो अब प्रेम नहीं मिलेगा! तो शायद यह सोचता है कि यह मेरे ऊपर नहीं थूकता था, इसलिए मैं इसे प्रेम करता था, जो थूकने से प्रेम बंद हो जायेगा! पागल है तू! मैं प्रेम इसलिए करता हूं कि मैं प्रेम ही कर सकता हूं और कुछ नहीं कर सकता हूं। तू थूके, तू गाली दे, तू पैरों पर सिर रखे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं प्रेम ही कर सकता हूं। मेरे भीतर प्रेम का दीया जल गया। अब मेरे पास से जो भी निकले, उस पर प्रेम पड़ेगा। कोई न निकले तो एकांत में प्रेम का दीया जलता रहेगा। अब इसका किसी से कोई संबंध न रहा। अब यह कोई संबंध न रहा, यह मेरा स्वभाव हो गया है। प्रेम जब तक किसी से संबंध है, तब तक, आप शरीर के तल पर प्रेम खोज रहे हैं, जो असफल हो जायेगा। प्रेम जब जीवन के भीतर, स्वयं के भीतर जला हुआ एक दीया बनता है--रिलेशनशिप नहीं, स्टेट ऑफ माइंड--जब किसी से प्रेम एक संबंध नहीं है, बल्कि मेरा प्रेम स्वभाव बनता है, तब, तब जीवन में प्रेम की घटना घटती है। तब प्रेम का असली सिक्का हाथ में आता है। तब यह सवाल नहीं है कि किससे प्रेम, तब यह सवाल नहीं है कि किस कारण प्रेम। तब प्रेम अकारण है, तब प्रेम इससे-उससे नहीं है, तब प्रेम है। कोई भी हो तो प्रेम के दीये का प्रकाश उस पर पड़ेगा।

जिस प्रेम की मैं बात कर रहा हूं, वह प्रभु तक ले जाने का मार्ग बनता है, लेकिन वह प्रेम संबंध नहीं है। वह प्रेम स्वयं के चित्त की दशा है, उसका किसी से कोई नाता नहीं, आपसे नाता है। इस प्रेम के संबंध में थोड़ी बात समझ लेनी, और इस प्रेम को जगाने की दिशा में कुछ स्मरणीय बातें समझ लेनी जरूरी हैं। पहली बात, जब तक आप प्रेम को एक संबंध समझते रहेंगे, एक रिलेशनशिप, तब तक आप असली प्रेम को उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। वह बात ही गलत है। वह प्रेम की परिभाषा ही भ्रांति है। जब तक मां सोचती है कि बेटे से प्रेम, मित्र सोचता है मित्र से प्रेम, पत्नी सोचती है पति से प्रेम, भाई सोचता है बहन से प्रेम, जब तक संबंध की भाषा में कोई प्रेम को सोचता है, तब तक उसके जीवन में प्रेम का जन्म नहीं हो सकता है। संबंध की भाषा में नहीं, किससे प्रेम नहीं; मेरा प्रेमपूर्ण होना है। मेरा प्रेमपूर्ण होना अकारण, असंबंधित, चौबीस घंटे मेरा प्रेमपूर्ण होना है। किसी से बंधकर नहीं, किसी से जुड़कर नहीं, मेरा अपने आपमें प्रेमपूर्ण होना है। यह प्रेम मेरा स्वभाव, मेरी श्वास बने। श्वास आये, जाये, ऐसा मेरा प्रेम--चौबीस घंटे सोते, जागते, उठते हर हालत में। मेरा जीवन प्रेम की भाव-दशा, एक लविंग एटिटयूड, एक सुगंध, जैसे फूल से सुगंध गिरती है। दीये से रोशनी बरसती है, किसके लिए? कोई अंधेरे रास्ते पर न भटक जाये इसलिए? किसी को रास्ते के गड्ढे दिखायी पड़ जायें इसलिए? दिखायी पड़ जाते होंगे, यह दूसरी बात है; लेकिन दीये की रोशनी अपने लिए, अपने आनंद से, अपने स्वभाव से, गिरती और बरसती है। प्रेम भी आपका स्वभाव बने--उठते, बैठते, सोते, जागते; अकेले में, भीड़ में, वह बरसता रहे फूल की सुगंध की तरह, दीये की रोशनी की तरह, तो प्रेम प्रार्थना बन जाता है, तो प्रेम प्रभु तक ले जाने का मार्ग बन जाता है, तो प्रेम जोड़ देता है समस्त से, सबसे, अनंत से। इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रेम तब संबंध नहीं बनेगा। वैसा प्रेम चौबीस घंटे संबंध बनेगा, लेकिन संबंधों पर सीमित नहीं होगा। उसके प्राण संबंधों के ऊपर से आते होंगे।

संबंध गहरे से आते होंगे। तब भी पत्नी पत्नी होगी, पति पति होगा, पिता पिता होगा, मां मां होगी। तब भी बेटे पर प्रेम गिरेगा। लेकिन बेटे के कारण नहीं, मां के अपने प्रेम के कारण। तब भी पत्नी का प्रेम चलेगा, बहेगा; लेकिन पति के कारण नहीं, अपने कारण। क्वालिटी भीतर होगी, भीतर से आयेगी और बहेगा। बाहर से कोई खींचेगा और बहेगा नहीं, भीतर से आयेगा और बहेगा। वह अंतरभाव होगा, बाहर से खींचा गया नहीं। अभी हम सब बाहर से खींचे गये प्रेम पर जी रहे हैं, इसलिए वह प्रेम कलह बन जाता है। जो भी चीज जबरदस्ती खींची गयी है, वह दुख और पीड़ा बन जाती है। जो भीतर से स्पॉन्टेनियस, सहज प्रकट हुई है, वह बात और हो जाती है। वह बात ही और हो जाती है। तब जीवन बहुत प्रेमपूर्ण होगा, लेकिन प्रेम एक संबंध नहीं होगा। साधक को स्मरण रखना है कि प्रेम उसकी चित्त दशा बने तो ही प्रभु के मार्ग पर, सत्य के मार्ग पर यात्रा की जा सकती है, तो ही उसके मंदिर तक पहुंचा जा सकता है। पहली बात, संबंध में प्रेम के भाव को भूल जायें। वह सिवाय असफलता के और चिंता के कहीं भी नहीं ले जायेगा। फिर दूसरी बात क्या आपके भीतर से प्रेम का जन्म हो सकता है? हमारे भीतर वह छिपा है बीज, जो फूट सकता है, लेकिन हमने कभी उस पर ध्यान नहीं दिया! हम संबंध वाले प्रेम पर ही जीवन भर संघर्ष करते रहे हैं। हमने कभी ध्यान नहीं दिया उसके--उसके पार भी कोई प्रेम की संभावना है, कोई रूप है। हम सब संबंध वाले प्रेम से जीवन को निकालने की कोशिश कर रहे हैं! प्रेम चित्त की एक दशा की तरह पैदा होता है। बस वैसा ही पैदा होता है।

जब भी होता है, वैसा ही पैदा होता है। उसे कैसे पैदा करें, वह कैसे जन्म ले ले, वह बीज कैसे टूट जाये और अंकुरित हो जाये? तीन बातें, तीन सूत्र इस संबंध में स्मरण रख लेने चाहिए। पहली बात, जब अकेले में हों तब--तब भीतर खोज करें, क्या मैं प्रेमपूर्ण हो सकता हूं? जब कोई न हो, तब खोज करें, क्या मैं प्रेमपूर्ण हो सकता हूं? क्या अकेले में लविंग--क्या अकेले में, एकांत में भी आंखें ऐसी हो सकती हैं, जैसे प्रेम-पात्र मौजूद हो? क्या अकेले में, शून्य में, एकांत में, खाली में भी मेरे प्राणों से प्रेम की धाराएं उस रिक्त स्थान को भर सकती हैं, जहां कोई नहीं, कोई पात्र नहीं, कोई आब्जेक्ट नहीं? क्या वहां भी प्रेम मुझसे बह सकता है? इसको ही मैं प्रार्थना कहता हूं। उसको नहीं प्रार्थना कहता कि हाथ जोड़े मंदिरों में बैठे हैं! एकांत में जो प्रेम को बहाने में सफल हो रहा है, कोशिश कर रहा है, वह प्रार्थना में है, वह प्रेयरफुल मूड में है। पहला सूत्र, एकांत में प्रेमपूर्ण होने का प्रयोग करें, खोजें, टटोलें अपने भीतर। हो जायेगा, होता है, हो सकता है। कभी प्रयोग ही नहीं किया उस दिशा में, इसलिए ख्याल में बात नहीं आ पायी है। एक बार एकांत में प्रेम की सुगंध पकड़ जायेगी तो आपको ख्याल आ जायेगा कि प्रेम कोई रिलेशनशिप नहीं, कोई संबंध नहीं। प्रेम स्टेट ऑफ माइंड है, स्टेट ऑफ कॉन्शसनेस है, चेतना की एक अवस्था है।

फूल; संगीत; ख़ुशबू; रंग; अग्नि- किसी धर्म के नहीं

अमजद अली खां (सरोद वादक)...

Q&A

Q अपनी उपलब्धियों और संगीतमयी यात्रा के बारे में बताइए?

» उपलब्धियों के बारे में बताना मुश्किल है, वह मेरी वेबसाइट से देख सकते हैं। मेरा बहुत सारा काम सोशल मीडिया पर मिल सकता है, लेकिन यात्रा बहुत बचपन से शुरू हो गई। ग्वालियर में 9 अक्टूबर 1945 को जन्म हुआ। संगीत के पुजारी उस्ताद हाफ़िज़ अली खान साहब मेरे पिता और गुरु भी थे और माँ राहत जहान खान, शाहजहांपुर की थीं। मेरे पिता का जन्म इसी घर में ग्वालियर में हुआ। ये घर हमारे बुजुर्गों का है। महाराजा सिंधिया का दिया हुआ घर। मेरे घर के लोग सिंधिया के दरबार में संगीतकार थे। मेरा जन्म भी इसी घर में हुआ है।

अब हमने इस घर को बदलकर म्यूजियम बना दिया है। म्यूजियम की प्रेरणा हमें जर्मनी में आई। मेरी पत्नी सुबलक्ष्मी और मैं जर्मनी में थे। वहां के एक ख्यात कंपोजर विथोबे थे। पूरी दुनिया में उनका नाम रोशन है। टिकिट लेकर हमने उनका घर देखा- उनका पलंग, पियानो, स्लीपर वहां रखे हैं। तब हमने अपने देश की ओर देखा कि क्या हमारे देश में ऐसा कोई महान संगीतकार हुआ है। दक्षिण भारत में लोगों ने ऐसा कुछ प्रयास किया है। संगीत पितामह स्वामी त्यागराजा की चीजों को कुछ संभाला है। कावेरी नदी के किनारे, मुझे वहां जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। राग शिवरंजनी उन्होंने

> 'प्रेम की समझ हर किसी को नहीं है, पश्चिम में कहते हैं कि 'आय मेड लव' इसके निहितार्थ शरीर तक सीमित होकर रह जाते हैं। जहां तक सौंदर्य की बाद है तो उसके लिए मैं भगवान का शुक्रगुजार हूं। जब सरोद के 19 ताल मिल जाते हैं तो कुछ ऐसा बजता है कि ऊपर वाले का सौंदर्य महसूस होता है।'

बनाया, जिसे मैंने बजाया। उनका अपना फाउंडेशन है, कमेटी है, जो उनके काम का संरक्षण करती है। उसी प्रकार से टैगोर के कामकाज का भी अच्छा संरक्षण हुआ है, कलकत्ता में। लेकिन जिस प्रकार से शेक्सपीयर के काम को ब्रिटेन ने संरक्षित किया है, उस प्रकार से मिर्ज़ा ग़ालिब को हम संरक्षित नहीं कर सके।

और भी महान संगीतकार हुए हमारे देश में, उन्हें हम संरक्षण नहीं दे पाए। हमारे देश का इतिहास है कि जो नेता जिस घर में मृत्यु को प्राप्त हुए, उन्हें म्यूजियम बना दिया है। जब ये सोच लेकर हम हिंदुस्तान लौटे तो तब अर्जुनसिंह जी एचआरडी मंत्री थे। एक आर्किटेक्ट के पास हम गए कि यदि म्यूजियम बनाएंगे तो क्या खर्च इसमें आएगा। तब अर्जुनसिंह जी के पास हम यह गुज़ारिश लेकर गए तो उन्होंने तत्काल इसे मंजूरी दे दी। कई अफसरों ने इस पर आश्चर्य व्यक्त किया कि इतनी बड़ी रकम कैसे मंजूर की गई। तब अर्जुन सिंह जी ने तमाम अफसरों को बुलाकर कहा कि खान साहब ने कभी कुछ नहीं माँगा, लिहाजा ये जो कह रहे हैं, हम इसे स्वीकृति दे रहे हैं। इस वजह से म्यूजियम बन सका। उसका नाम सरोद घर है। मेरे पूर्वजों के साज़ हैं, मेरे बचपन में बजाए गए साज़ हैं। कई महान लोगों के साज़ इसमें हैं। हम गरीब फकीर लोगों का घर, जिसे फकीरों का टीला कहा जा सकता है, म्यूजियम ऑफ हैरिटेज बन गया।

6 वर्ष की आयु में विक्टोरिया कॉलेज ग्वालियर में स्टेज पर बैठने की तमीज़ आई। 12 वर्ष की आयु से लोगों ने मुझे बुलाना शुरू किया। मेरे जीवन के अधिकांश कंसर्ट बंगाल, महाराष्ट्र व साउथ में हुए। देश के हर शहर में मेरे प्रोग्राम हुए। पहले 250 रु. हर प्रोग्राम के मिलते थे। इलाहाबाद में एक बहुत पुरानी संस्था प्रयाग संगीत समिति ने मुझे सरोद सम्राट का टाइटल दिया, जिससे मुझे और जिम्मेदारियों का अहसास हुआ। सरकार की ओर से हर प्रांत से पुरस्कार मिले। विदेशों से डॉक्टरेट और अपने देश में भी डॉक्टरेट मिली। बहुत सारी जिम्मेदारी का इससे अहसास हुआ। मैं हर बाशिंदे, हर पत्रकार का, मीडिया का शुक्रगुजार हूं कि उनकी वजह से मैं इस मुकाम पर पहुंचा हूं। अभी भी बहुत कुछ करना है। स्वर और लय दोनों के अपने समुद्र है। भगवान की कृपा जिस पर भी होती है, उसे यह मिल जाता है, जिससे जीवन सफल हो जाता है। खूब प्रयास किया। नए संगीतकारों का सामना होता है, तो भी सीखने को मिलता है। पिताजी बहुत बुजुर्ग थे। मैं सबसे छोटी औलाद, तीन बड़े भाई, मेरे चाचा, मेरे मामा सब गुरु समान थे, सबसे कुछ न कुछ सीखने को मिलता रहा।

Q प्रश्न-संगीत में नवाचार की आवश्यकता और किस तरह के प्रयास किए जाने चाहिए?

» उत्तर- संगीत में संगीत को सुननेवालों की रुचि बदलती जाती है। शास्त्रीय संगीतकार एक परंपरा का अनुसरण आंख बंद करके कर रहे हैं। दूसरे संगीतकार मनोरंजन के लिए हर समय अपने आपको बदलते रहते हैं। यह एक स्वस्थ पहल है। हमारे शास्त्रीय संगीत में जो भी नए लोग आए हैं, बहुत सारी युवा पीढ़ी हम बचपन से देखते आ रहे हैं, उन्हें आज उस्ताद या पंडित कहा जाता है, उन्हें देखकर खुशी होती है। उस उस्ताद और पंडित को जो भी आता है, वह हर कंसर्ट में पूरा दिखाने की कोशिश करता है। तो कहने का तात्पर्य ये है कि नीरसता थोड़ी बढ़ती जा रही है। म्यूजिक हमेशा अपीलिंग होना चाहिए, वह लाइट म्यूजिक हो, क्लासिकल संगीत हो, या लोकसंगीत हो, संगीत वही है, जो रोचक हो, या अपीलिंग हो। क्लासिकल के नाम पर जो भी संगीतकार परंपरा की ही बात करता है। उस परंपरा में नवोन्मेषिता नहीं रहती। रूढ़ी में यह है कि जो होता रहा है, वही चलने दो।

यानी लकीर के फक़ीर बने रहो। एक राग को ही लेकर चलते रहते हैं, जब तक वह हताश न हो जाए। बहुत कम संगीतकार देश में ऐसे हैं, जो इस बात को जानना चाहते हैं कि लोग क्या चाहते हैं, वक्त की माँग क्या है? परंपरा इनोवेशन की अनुमति देती है। इसीलिए ट्रेडिशन में रहते हुए हमने नया किया है और प्रेजेंटेशन में बदलाव लाए हैं। क्योंकि कहीं न कहीं इंस्ट्रूमेंटल म्यूजिक में हम लोगों ने कंपोजिशन को महत्व देना कम कर दिया था। सुधार होता रहा है, लेकिन अब ज्यादा हो रहा है। गायक लोगों ने कंपोजिशन को जिंदा रखा, लेकिन इंस्ट्रूमेंट की दुनिया के लोगों ने मुखड़ा पकड़ा और शुरू हो गए। इसलिए बंदिशें कहे रचना या कंपोजिशन, इनके मामले में खुबसूरत कंपोजिशन को मैं ज्यादा बजाता हूं। जिसमें कुछ मेरे गुरु की और कुछ मेरी होती हैं। कई बार उत्तरोत्तर सुधार किया। रात नौ बजे से सुबह सात बजे तक कलकत्ता में बजाते रहे, तीन दफा ऐसा किया। एक दफा अयान फिर अमान और फिर मैंने कलामंदिर हॉल में बजाया। उसमें टिकिट भी थी। संगीत आप कितनी देर बजा सकते हैं, इसके मायने नहीं है। संगीत में क्वालिटी होनी चाहिए, अपीलिंग हो। जिस तरह से मजहब के मामले में परंपरा अनुसरण किया जाता है। हमने वही संगीत में किया, कंपोजिशन का अनुसरण किया...। किसी भी शिक्षित व्यक्ति ने सवाल नहीं किया ऐसा क्यों? हम लग गए, आज भी लगे हुए हैं। शिक्षा से यह बदलाव नहीं होगा न ही मानव बदल सकेगा। हमारे गुरु ने यही कहा- हम सब का एक खुदा है, एक जाति है। यह बहुत बड़ी बात है। दुनिया के हर व्यक्ति को यह अहसास होना चाहिए कि हम एक ही तरह से आते हैं और एक ही तरह से जाते हैं। दूसरे तरह की गुंजाइश नहीं है।

Q प्रश्न- सरोद, संगीत व अमजद को कैसे देखते हैं?

» ये तीनों बातें, एक-दूसरे से अलग नहीं है। संगीत और सरोद दोनों का नाम अमजद है। संगीत और सरोद को हटा दें तो अमजद कुछ नहीं है। लाचार मजबूर फकीर इंसान है।

Q प्रश्न- आपकी प्रेरणा क्या है?

» प्रेरणा को बचपन से देखे तो आपका गुरु, पिता। हर बच्चे की ख्वाहिश होती है कि वह पिता या गुरु की तरह बने। यदि सही गुरु है तो वह सही शिक्षा देता है। जैसे हमारे पिता ने हमारे गुरु ने हमें कहा कि सबका खुदा एक है, हम सब एक है। हर मज़हब के पुजारी का यह कर्तव्य था कि वह इस संदेश को दुनिया तक पहुंचाता। लेकिन दुर्भाग्य से हर पुजारी का हर इबादत करने वाले का एक अपना एजेंडा होता है और इसके लिए उन्हें हर माह तनख्वाह मिलती है, तो इस संदेश को सबने दबाकर रख दिया। इसलिए हमारे गुरु ने जो बोला उसके चलते हम जहां भी होते हैं, भले ही मंदिर हो, मस्जिद हो, चर्च हो, गुरुद्वारा हो, हम सहज रहते हैं। हमारा पूरा परिवार हरेक की आत्मा से जुड़ा है, हर धर्म से हर संगीत से जुड़ा हुआ है। गुरु ने हमको यह भी समझाया कि पिता के जो समकालीन हैं, उन्हें भी वही इज्जत देना है, जो अपने पिता को देता हूं। चारों तरफ बड़े-बड़े लोगों को सुनता रहा। उस्ताद फैयाज़ खान साहब थे, उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब, उस्ताद इनायत, उस्ताद अलाउद्दीन खान साहब थे, तो इनको मैं सुनता रहता था और इनके बाद मैं इनकी औलादों को भी सुनता रहा हूं। प्रेरणा संगीतकारों से मिली है और ज्यादा मेहनत करने की कोशिश की। और फिर प्रकृति जो ईश्वर की कृति है, जिसमें तरह तरह के रंग, फूल बादल है, जो प्रेरणा देते हैं। संगीत में मैंने क्या प्राप्त किया है, जो पहला सवाल उपलब्धियों का है, वह बताने में मुझे हिचक है, लेकिन फिर भी यह कहूंगा कि हम ईश्वर को समर्पित हैं, हमारे गुरु को समर्पित हैं। फूल, संगीत, खुशबू, रंग, अग्नि, वे किसी धर्म के नहीं है, हर मजहब को फूलों की जरूरत है, अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करने के लिए। अर्थात हर चीज से प्रेरणा मिलती है। उपलब्धियों का गुमान तब होता है, जब दुनिया आपको स्वीकार कर ले। आज हमारे परिवार में जो हमारा बैंक बैलेंस है, वह पूरी दुनिया के लोगों का प्यार और आशीर्वाद है,

बाकी जो कुछ कंसर्ट से मिलता है, उससे घर चलता है। हमारा असली बैंक बैलेंस लोगों का प्यार आशीर्वाद है।

Q प्रश्न-प्रेम पर आपकी अनुभूतियां और विचार?

» बहुत ही पवित्र शब्द है, प्रेम। लेकिन पश्चिमी दुनिया में उस अल्फाज़ को लव कहा है। लव की जो परिभाषा है, उसमें सेक्स को बहुत तरजीह दी है। इसमें कहा जाता है-'आय मेड लव', इसमें इंटरकोर्स को वे लव कहते हैं। यह सही है कि यह प्रेम का हिस्सा है, लेकिन एक होता है, खुद को भूल जाने का प्रेम। यानी आप अपने गुरु को प्यार करते हैं, मां को प्यार करते हैं, पत्नी को प्यार करते हैं। या ऐसी प्रेमिका को प्यार करते हैं। हमारे जीवन में एक से एक सुंदर नारी हमारे पास आती रहीं- कहती रहीं आप अच्छा बजाते हैं, आप सुंदर हैं। ये सारी बातें सुनने के बाद भी खुदा का शुक्र है कि हमने ये कोशिश नहीं की कि उस महिला के पीछे पड़ जाएं। खुदा का शुक्र हर वक्त अदा करते हैं कि इतनी खुबसूरत औरतें भगवान ने बनाई है। वह बड़ा आर्टिस्ट है, उसने एक से एक सुंदर चीजें बनाई। हर प्रांत, हर देश में एक सुंदर नारी आ जाती है। सुंदरता का गुणगान करना है, वह भी प्रेम है, लेकिन पाश्चात्य शैली का लव नहीं। हमारे देश में हर इंसान को प्रेम या मोहब्बत का अहसास नहीं है। मोहब्बत को सेक्स का रूप युवा देते रहे हैं, क्योंकि हम विदेशों से प्रभावित रहते हैं, इसलिए ऐसा हो जाता है।

Q प्रश्न- भारत में आपकी पसंदीदा जगह?

» यह कहना मुश्किल है कि क्या पसंद है। मुझे कुल्लू-मनाली पसंद है, शिमला भी पसंद है। पर मेरी पत्नी सुबलक्ष्मीजी को पहाड़ों से डर लगता है, गाड़ी में जाने में उनको तकलीफ होती है, तो मैं जमीन पर ही रहता हूं। जहां भी समुद्र है, वहां डर और घबराहट होती है, क्योंकि इसी से सुनामी आ जाती है। तो मैं जिस जगह कंसर्ट करने बैठता हूं, वह मेरी पसंदीदा जगह है, जहां हम बजाते है, वह मेरी पसंदीदा जगह है, वहां साउंड अच्छा हो तो मुझे पंसदीदा जगह बन जाती है, श्रोता अच्छे हो तो पसंदीदा जगह बन जाती है।

Q प्रश्न- जब संगीत नहीं करते हैं तो फुर्सत में क्या करते हैं?

» दस साल तक तो मैं द वीक नाम की मैग्ज़ीन में आलेख लिखता रहा और मैं लाइट रीडिंग मैग्जीन पढ़ता हूं। पूरे अखबार की डीटेल मैं कभी नहीं पढ़ता हूं। लेकिन सरकार की राय और लोगों की राय क्या है, उसके बारे में लोगों के चर्चे सुनता हूं कि वे अच्छी बात कर रहे हैं या नाराज होते हैं। लेकिन असली पसंद का पता तब चलता है, जब चुनाव में लोग अपनी पसंद की पार्टी को चुनते हैं। फुर्सत में मैंने किताबें लिखी, कंपोजिशन करता हूं। दूरदर्शन में एक जमाने में 'गुफ्तगु' नाम का एक सीरियल आता था। हमारे मित्र हैं, सईद नक़वी, वे उसके एंकर थे, वे इसके सूत्रधार थे। सब्जेक्ट ये था कि ग़जल कब और कैसे शुरू हुई। हजरत अमीर खुसरो से लेकर अब तक। वह टीवी सीरियल था, हर शायर के लिए एक-एक एपिसोड था। गालिब भी थे, मीर तक़ी मीर और बहुत सारे शायर थे। मैंने बड़े शायरों की लिखी हुई 40 ग़जलों को नए तरह से कंपोज कर नया रूप दिया और श्री उत्तमसिंहजी सारी व्यवस्था की थी। वे आज के दौर के बहुत बड़े संगीतकार हैं और हमारे मित्र हैं। उन्होंने नौशाद साहब के साथ भी बहुत काम किया। उसका टाइटल गीत आशा भौंसले जी ने गाया। बहुत सारे गायकों ने गजलों को गाया। खाली समय में मैंने वादा नाम से एलबम बनाया था, जो रूपकुमार राठौड़ और साधना सरगम ने गाया था, गुलज़ार साहब ने लिखा था। फिर एक एलबम यारा जो टाइम्स म्यूजिक ने निकाला, जो पंकज उधास ने गाया और मदनगोपालजी ने उसको लिखा था। खाली समय में कंपोजिशन होते हैं। विदेश का एक आमंत्रण स्कॉटिश चैम्बर ऑर्केस्ट्रा की ओर से मिला। उन्होंने कहा कि आप हमारी ऑर्केस्ट्रा के लिए कुछ कंपोज करिए, तो वह कंपोजिशन बनाया पैंतालिस मिनट का। हिंदी में इसका नाम रखा समागम, दुनिया की बड़ी-बड़ी ऑर्केस्ट्रा उसे बजाती है। दुनिया का पहला ऐसा कंपोजिशन है, जो सरोद के साथ पचास-साठ, सत्तर म्यूजिशियन बजाते हैं। कभी-कभी मैं अमान और अयान बैठते हैं और सौ म्यूजिशियन हमारे पीछे इसे बजाते हैं। टैक्निकली इसे सरोद कंसर्टो कहते है। तीन अप्रैल को मास्को में मास्को सिम्फनी के साथ बजाया, ऑस्लो रेडियो, लंदन, शिकागो में बजाया, फ्रांस के नेशनल ऑर्केस्ट्रा के साथ सात शो किए हैं। समागम हर दिन कोई नई ऑर्केस्ट्रा बजा रही है। अब मैं दूसरा लिखना चाहता हूं।

Q सौंदर्य को कैसे अनुभव करते हैं?

जब जब मैं सुंदर नारी को देखता हूं तो भगवान का शुक्रिया करता हूं कि उन्होंने एक से एक सुंदर चीजें बनाई है। म्यूजिक में जब खुबसूरत कंपोजिशन मिल जाता है, या सरोद के उन्नीस ताल जब मिल जाते हैं तो कुछ ऐसी चीजें बजती है, वह ऊपर वाला ही रास्ता दिखाता है, क्योंकि संगीत में हम लिखते नहीं हैं, पढ़ते नहीं है, बस बजाना शुरू हो जाते हैं। सौंदर्य का दर्शन हमें अपने संगीत या दूसरे अपीलिंग म्यूजिक के जरिए होता है।

Q प्रश्न- आपके पसंदीदा गायक और वादक?

» पिताजी ने जिनके भी नाम लिए, जब उनका गाना-बजाना सुना और जब हम बड़े हो रहे थे, तो जो भी चारों तरफ थे, वह बड़े गुलाम अली खां साहब, अमीर खां साहब, बेगम अख्तर, पंडित रविशंकर, विलायत खां साहब, अली अकबर साहब, कुमार गंधर्वजी, बिस्मिल्लाह खां साहब इनके बीच सबके आशीर्वाद से मैं भी जुड़ा रहा। लोग मुझे भी इनके साथ बुलाने लगे। बिस्मिल्लाह खां साहब, विलायत खां साहब मेरे पिता को चचा कहते थे। इस लिहाज से इन लोगों ने मुझे छोटे भाई का दर्जा दिया। हाल ही में मैंने एक किताब लिखी है, जिसे पेंगुइन रेंडम हाउस ने पब्लिश किया है। उन्हीं लोगों ने इसका नाम रखा है 'मास्टर ऑफ मास्टर्स'। इनमें बारह ऐसे म्यूजिशियन हैं, जिनके कारण भारतीय संगीत लोकप्रिय हुआ। ये भी वजह है कि इन बारह के साथ मेरा जहीनी रिश्ता था। मैं इनके घर जाता था, वे मेरे घर आते थे। साथ खाना खाते थे। केसरबाई के साथ कभी बैठने-उठने का मौका नहीं मिला, लेकिन उनके चरण छूने का मौका मिला। बहुत वृद्ध हो चुकी थीं वे। बाकी सभी लोग ऐसे थे, जो मेरे अब्बा से मिलने आते थे, उनकी इज्जत करते थे। इसके पहले एक और किताब 'माय फादर फ्रेटनिटी' गुरु दक्षिणा के रूप में लिखी थी। 'सरोद घर' भी मेरी गुरुदक्षिणा है। इसमें भी मैंने कई म्यूजिशियन का जिक्र किया है। अब मैं आत्मकथा लिख रहा हूं, जब समय मिलता है, कुछ न कुछ लिखता रहता हूं।

Q प्रश्न-आगामी योजनाएं क्या है?

» यह कहना मुश्किल है, क्योंकि इसे प्रोफेशन नहीं कह सकते हैं, क्योंकि यह मेरा पैशन है। यह मेरा जीवन है। शास्त्रीय संगीत के लिए आपको समर्पण चाहिए। आपको गुरु को समर्पित होना पड़ता है, भगवान को समर्पित होना पड़ता है। यह भूल जाना होता है कि कल क्या होगा? यह ठीक वैसा ही जैसे आप अंधेरी सुरंग में प्रवेश कर रहे हो कि किसी दिन सूरज की किरण दिखेगी। जो भी विद्यार्थी पैसा कमाने के उद्देश्य से शास्त्रीय संगीत में आता है तो उसे निराशा होगी, क्योंकि यह पैसा कमाने का पेशा नहीं है। पैसा कमाना है तो फिल्म स्टार, एंटरटेनर, बनने की कोशिश करिए, कमेडियन, गायक बनें। शास्त्रीय संगीत ऐसी विधा है, जिसमें हमारे पूर्वज शांति को समर्पित थे, शुद्धता को समर्पित थे। संगीत की गहराई को जानने के लिए हमारा जीवन समर्पित है। सात सुरों में सारी दुनिया का संगीत है, जिसे अंग्रेजी में डोरेमिफा... कहते हैं, हम लोग सारेगामापधनि कहते हैं। हमारी पत्नी का हमारे जीवन में बहुत बड़ा योगदान है। वे असम की हैं, डांसर हैं, परफॉर्म भी करती थीं। पूरा देश उनका आभारी है कि उन्होंने देश को तो सरोदवादक अमान और अयान दिए हैं। अयान साहब के दो बेटे हुए हैं, अबीर और जुहान। उनकी पत्नी नीमा हैं। हमारी भगवान से गुजारिश हैं कि मेरे बड़े बेटे अमान साहब की जल्द शादी हो, उन्होंने शादी का फैसला नहीं किया है। खुदा से यही दुआ है कि मैं आखिरी दम तक लोगों की संगीत से सेवा करते रहूं।

follow your instinct

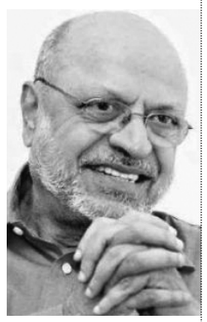

Shyam Benegal

Q How would you share your journey of film making?
A A continuing adventure. An unending exploration of life and living.

Q Your inspiration ?
A Everyday happenings and events. Finding the extraordinary in the ordinary.

Q How do you see relationships in life?
A As anchors that offer stability in life.

Q Thoughts/experience about love and beauty?
A Enriching and essential.

Q How do you see happiness as an essential part of being?
A Happiness is fleeting. Contentment is forever.

Q Your strengths?
A None.

Q Your favorite films/books?
A Too numerous to list.

Q In your opinion what initiative/innovations should be taken to make better films?
A Follow your instinct. Be true to yourself.

Q Your upcoming projects/ dreams.
A Several

Q Message for readers?
A Make your own path.

बारम्बार

प्रो. सत्यमोहन वर्मा
दमोह
मो. 9425028620
verma.abby@gmail.com

जिन्दगी के
धवल कैनवास पर
बहुआयामी आकृतियों
तथा रंग-बिरंगी अनुकृतियों को
लगातार उकेरता रहा हूँ।
कभी प्रेम, कभी श्रद्धा
कभी भय, कभी सुरक्षा
कभी मुक्ति, कभी विवशता
कभी भव्यता, कभी दरिद्रता
को अकल्पित विस्तार देकर
दुलारता रहा हूँ।
किन्तु जाने
किस प्रगल्भता वश
उस सत्य को नहीं उकेर पाया
जो यज्ञाग्नि की तरह
निरपेक्ष प्रज्वलित होता है।
रेशे रेशे बिखरा
मेरा आत्मविश्वास
निष्ठा के संकल्प को
अब भी बिसूरता है
और तूलिका को
फिर रंगों में डुबो देता है।

प्यार
प्यार को
कृपण-सा मत जोड़ो
वरना आत्म ग्लानि में
आँसू बहाते हुए
उस अँधेरे का
हिस्सा बन जाओगे
जो सुरक्षित भले लगे
पर उजियारे की चुभन से
मुक्त नहीं होता।
आत्म-रक्षार्थ
दीवारों से पीठ सटाए
जीवन का, आखिरी युद्ध लड़ने में
या फिर नदी बनने की
प्रत्याशा में
पोखर बन कर रह जाने से
क्या मिलेगा?
प्यार को इसलिए
आह्लाद की आत्मीयता-सा बाँटो
यह आत्मपीड़ा की दरिद्रता से
मुक्त करेगा और
बंजर मन को
आस्था के मोतियों से भरेगा।

कैसे बना दुनिया का सबसे ख़ुशहाल देश भूटान

राजा ने जीडीपी की बजाय खुशी पर ज़ोर दिया, प्रेम पसर गया

भूटान एक छोटा-सा देश है, लेकिन कहते हैं दिल बड़ा हो तो सब कुछ संभव है। वाकई भूटान बड़े दिल वालों का देश है जिसे सबसे अमीर कहना गलत नहीं होगा, क्योंकि वहां सबसे ज्यादा खुशहाली है, जो कि जीवन का आधार है और प्रेम के रुप में सबसे मूल्यवान वस्तु भी वहां की लोगों के दिल में बसती है। ग्रॉस हैप्पीनेस इंडेक्स की शुरुआत करने वाला दुनिया का पहला देश भूटान है। वहां के लोग हैप्पीनेस के कॉन्सेप्ट में जीते हैं। क्या है भूटान की खुशहाली का राज? इस बारे में कई पहलुओं पर बीईंग माइंडफुल से बात की भूटान के.....

डॉ. सामधू क्षेत्री

जी एन एच सेंटर भूटान के प्रमुख एवं आई आई टी खड़गपुर के "रेखी सेंटर फॉर हैप्पीनेस" में अतिथि शिक्षक

Q&A

Q प्रसन्नता और आनंद पर भूटान में क्या काम चल रहा है?

▪ भूटान में बहुत पहले से ये काम चल रहा है और पूरा भी हो गया। सरकार ने जो हैप्पीनेस इंडेक्स तैयार किया है वो रास्ता दिखाता है कि आगे सरकार के स्तर पर क्या करने की जरूरत है, व्यक्ति विशेष, परिवार और समुदाय को क्या करना चाहिए?

हम हैप्पीनेस के कॉन्सेप्ट में जीते हैं। प्रेम सबसे मूल्यवान चीज है, जीवन का आधार है। अपनी जगह हर चीज खूबसूरत है। सच तो यह है कि अगर प्रकृति है तो हम हैं। कोई चाहे कुछ भी कहे, जब तक मैं खुद उसे अनुभव नहीं कर लेता विश्वास नहीं करता।

Q ये फैसला किसने लिया, किसकी सोच थी जिससे कि सरकार ने पॉलिसी में शामिल कर इसे तैयार करवाया?

▪ हमारे महाराज ने इस बात पर जोर दिया कि ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस, ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्टिविटी (जीडीपी) की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है। उसके बाद सरकार ने इस दिशा में काम शुरू किया। 1970 से शुरू होते-होते जब हम 1990 में पहुंचे तो बाहरी दुनिया को पता चला कि हम इस कॉन्सेप्ट में जीते हैं। लोग पूछने लगे कि ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस कॉन्सेप्ट है क्या? तो हमने बताया कि हम इसी कॉन्सेप्ट में जीते हैं। हमारे महाराज ने लोगों को इस तरह बना दिया कि वो अपनी देखभाल खुद कर सकें, वो खुद को सम्मान दे सकें। फिर बात आई कि ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस का नाप-तोल कैसे करेंगे। हमने कहा इसके लिए पैसे की जरूरत पड़ेगी। 1998 में दक्षिण कोरिया के सिओल में यू.एन. की रीजनल मीटिंग हुई थी। वहां पर हमारी सरकार को बुलाया गया, तो तत्कालीन गृहमंत्री उस मीटिंग में शामिल हुए और ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस पर स्पीच दी, जिसके बाद पूरी दुनिया ने हमारी बात को सुन लिया। ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस के नापने की बात आई तो यू.एन.डी.पी. ने मदद की और सेंटर फॉर भूटान स्टडीज के अंडर में इस पर रिसर्च शुरू हो गया।

Q लोगों का ऐसा मानना होता है कि भौगोलिक परिस्थितियों का भी लोगों की खुशी पर बहुत प्रभाव पड़ता है। भूटान प्राकृतिक रूप से संपन्न है आप इसे किस हद तक मानते हैं?

▪ सच तो यह है कि अगर प्रकृति है तो हम हैं। हमारा दो-तिहाई शरीर तो पानी है, जो हम खाते हैं उससे शरीर बनता है। खाना भूमि से आता है, भूमि में पानी, वायु, धूप और कई तत्व होते हैं। अगर हम भूमिका नाश करेंगे तो वही हमारे शरीर में आएगा और हमारी कोशिकाएं भी उसी तरह जीने लग जाएंगी। प्रकृति से हमारा कनेक्शन बहुत ज्यादा है। इतना ज्यादा है कि हमारे शरीर का 99% हिस्सा प्रकृति से संबंधित है बाकी एक प्रतिशत ह्यूमन सेल्स हैं। प्रकृति की हर चीज़ चाहे वो पेड़-पौधे हों या फिर जीव-जन्तु सभी हमारे साथ ऑर्गेनिज्म में कनेक्ट हैं।

Q प्रसन्नता और आनंद को लेकर आप किस तरह प्रयास करते हैं कि खुशी बढ़े, व्यक्तिगत तौर पर क्या करते हैं?

▪ व्यक्तिगत तौर पर मैं अपने आपको ढूंढ़ता हूं। अपने अंदर झांककर देखता हूं। मैं कभी किसी के साथ तुलना नहीं करता। मैं जो हूं सो हूं। कोई चाहे कुछ भी कहे, जब तक मैं खुद उसे अनुभव नहीं कर लेता विश्वास नहीं करता। दूसरी बात यह है कि कोई गुस्सा होता है, कोई क्या कहता है मैं उसके साथ भागी नहीं रहता, चाहे कोई भी हो।

Q प्रेम और सौंदर्य को लेकर आप क्या कहेंगे?

▪ प्रेम तो सबसे मूल्यवान चीज है, जीवन का आधार है। प्रेम और सौंदर्य को लेकर यह मेरी प्रैक्टिस है कि - आई लव एवरी बॉडी... एवरीथिंग, एवरी नेचुरल थिंग, एवरी लिविंग क्रिएचर... अपनी जगह हर चीज खूबसूरत है। हमारा माइंड इतना बुरा है कि तुरंत अच्छे और बुरे में बांट देता है। अगर आप बुरे को उसी की नज़र देखेंगे तो वह बहुत सुंदर दिखता है, मेरा ये मानना है, खूबसूरती बाहरी ही नहीं आंतरिक भी होती है। फिजिकल नेचर में आप जाएंगे तो मन और अभिमान के ऊपर जाना होगा।

प्रेम आंतरिक अनुभव की मिठास है

इकबाल सिंह बैंस
चेयरमैन, राज्य आनंद संस्थान
भोपाल मध्यप्रदेश

Q आपके अनुसार आनंदित जीवन जीने के लिए सबसे बुनियादी चीज़ क्या है ?
- ऐसा दृष्टिकोण होना चाहिए।

Q व्यक्तिगत रूप से प्रेम और आनंद पर आपके विचार ?
- प्रेम आंतरिक अनुभव की मिठास है। यह State of being है। ऑब्जेक्ट से सब्जेक्ट तक की प्रेम की यात्रा ही आनंद है।

Q राज्य आनंद संस्थान के उद्देश्य और दृष्टिकोण पर आप क्या कहते हैं?
- आनंद संस्थान के उद्देश्य वेबसाइट पर स्वतः स्पष्ट है। परिपूर्ण जीवन के लिए भीतरी और बाहरी कुशलता जरूरी है। संतुलित जीवनशैली जीने के लिए लोगों को ऐसे तरीके और उपकरण के बारे में बताना होगा, जो उनके लिए आनंद का कारण बनें।

Q ऐसे कौन से कारण हैं कि सरकार ने आनंद विभाग का गठन किया गया?
- वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी से आनंद विभाग के गठन का कारण भी स्वतः स्पष्ट है। उदाहरण के लिए दूसरों की निस्वार्थ सहायता करना, जो आनंद अवधारणा का आधार है। इसमें ऐसे घरेलू सामान, जिसकी

संभवत: देश में पहली बार- मध्यप्रदेश के 15 स्कूलों में आनंद सभा सितंबर माह से

जानिए आनंद और प्रेम के बारे में श्री इकबाल सिंह बैंस क्या सोचते हैं, जो मध्यप्रदेश का राज्य आनंद संस्थान चला रहे हैं-

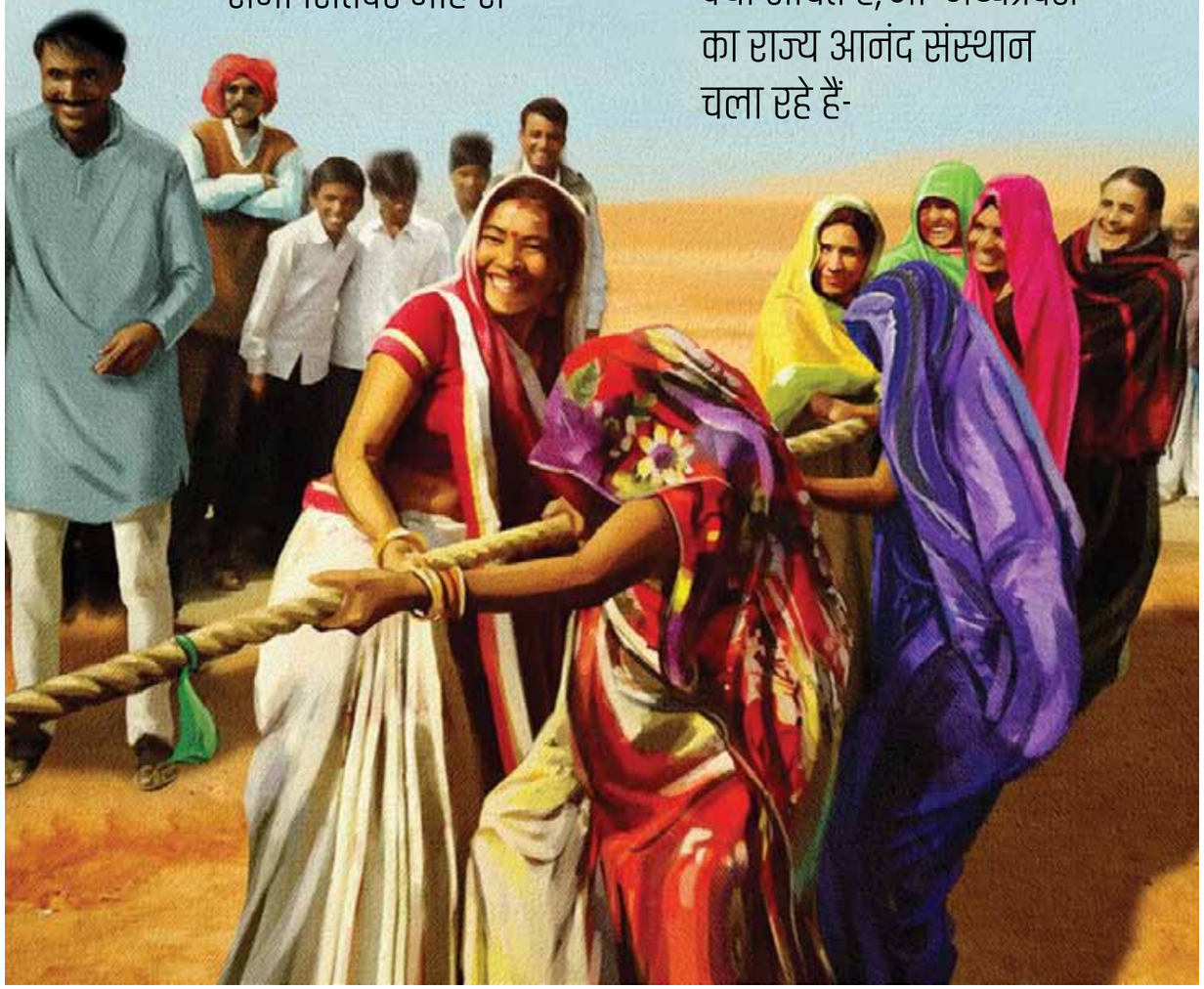

आवश्यकता नहीं है, वह एक तय स्थान पर रख दिया जाए और जिसे जरुरत हो वहां से उक्त व्यक्ति बिना किसी से पूछे ले जा सके। इससे देने वाले और लेने वाले दोनों को आनंद होगा। इस तरह से आनंद के पैमाने पहचानना, आनंद की अनुभूति के लिए कार्ययोजना व गतिविधियां तय करना होगी। लोगों की मनःस्थिति का आकलन करना और आनंद के प्रसार माध्यमों के लिए सतत अनुसंधान करना।

Q संस्थान की योजनाओं में सर्वोपरि कौन-सी योजना पर कार्य किया जा रहा है?
- आनंद उत्सव, आनंद सभा, अल्पविराम, आनंद शिविर एवं हैप्पीनेस इंडेक्स पर कार्य किया जा रहा है।

Q किस तरह की चुनौतियां/ कठिनाइयां हैं ?
- यह विभाग सामान्य शासकीय विभाग के रूप में कार्य नहीं कर सकता। खुशी, सुख तथा आनंद के बीच अंतर सामान्यतः समझने में कठिनाई है। शासकीय विभागों से अपेक्षा होती है कि वह सर्विस प्रोवाइडर के रूप में कार्य करेंगे। स्वाभाविक है कि आनंद विभाग से यह अपेक्षा है कि वह आनंद प्रदान करें। लोगों में यह समझ विकसित करना कि जीवन की परिस्थितियां बदलें अथवा नहीं परंतु उनके प्रति दृष्टिकोण बदलना आवश्यक है। यही सबसे बड़ी चुनौती है। 'अल्पविराम' के बहुत अच्छे परिणाम आ रहे हैं। लोगों का आंतरिक परिवर्तन की संभावनाओं से परिचय हुआ है।

आनंद विभाग मध्य प्रदेश

Q किस प्रकार के सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं (या संभावित) ?
- सकारात्मक दृष्टिकोण का विकसित होना।

Q भावी कार्यक्रमों के बारे में बताइये ?
- जो कार्यक्रम चल रहे हैं उन्हीं की नींव और मजबूत करना आवश्यक है। नए कार्यक्रम तैयार करने की कोई आवश्यकता अभी मैं अनुभव नहीं करता।

Q आलोचनाओं के बारे में आप क्या कहेंगे? जिस तरह कपड़े इत्यादि दान करने का कार्यक्रम हुआ ?
- आलोचनाओं से ही सुधार होता है, इसलिए हम हर तरह की आलोचनाओं को सुनने के लिए उत्सुक रहते हैं।

Q आपके विचार में अभी ऐसे और कौन से कदम शेष हैं, जिससे कसौटी पर खरा उतरा जा सके ?
- विभाग के फलसफे को लोगों तक पहुंचाना आसान है। आंतरिक परिवर्तन की संभावनाओं से उनका परिचय कराना भी आसान है, परंतु उसके बाद उन्हें निरंतर दिशा दिखाना या हैंड होल्डिंग करना सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

Q समाज में व्याप्त असंतोष, भ्रष्टाचार, यौन अपराध, आत्महत्या आदि को नियंत्रित किया जाना किस हद तक संस्थान की योजनाओं/ प्रयोग से संभव दिखाई देता है?
- जब आपके भीतर से परिवर्तन आता है तो उससे निर्मित चरित्र तथा आचरण प्रमाणिक होता है। उसे फिर किसी दूसरे सहारे की आवश्यकता नहीं होती। जाहिर है, जब भीतर से परिवर्तन होगा तो यह विषाद भी मिट सकेंगे।

Q बच्चों के लिए किस प्रकार काम किया जा रहा है? क्या आयु, जेंडर और पारिवारिक स्थिति, वातावरण का प्रसन्नता से कोई सापेक्ष संबंध है ?
- बच्चों के लिए आनंद सभा का कार्यक्रम प्रायोगिक तौर पर शुरू किया गया था। इसे आगे बढ़ाने के सभी उपाय कर लिए गए हैं। माह सितम्बर से इस कार्यक्रम को लगभग 150 विद्यालयों में शुरू करने की योजना है।

प्रेम में शून्यता, आनंद का चरम : सोनू निगम

सोनू निगम

बातचीत

Q प्रेम पर आपकी अभिव्यक्ति?

»लोगों ने या समाज ने प्रेम की जो परिभाषा गढ़ी है, मुझे लगता है वो ग़लत है। प्रेम को केवल एक भावना (इमोशन) की तरह लेना ठीक नहीं है। क्योंकि प्रेम है तो अ-प्रेम भी है। प्यार है तो नफ़रत भी है। मुझे लगता है कि जिस प्रेम का बोध मुझे है, वह आपके मन की एक ऐसी स्थिति है, जहाँ आपकी किसी से कोई इच्छा, अपेक्षा या आकांक्षा ही न रहे। वह मनोदशा जिसमें किसी के प्रति मोह या आसक्ति न हो। क्योंकि प्रेम का यह प्रचलित रूप, जो दूसरे पर निर्भर है, बंधा हुआ है, वह प्रेम नहीं है, जबकि प्रेम तो नितांत शून्य है। प्यार और नफ़रत के दो किनारों से बिल्कुल अलग अनिर्भर।

Q सुन्दरता पर?

»यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करती है जो परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है। हमारे देश में सुन्दरता की जो अभिव्यक्ति है, वह जरूरी नहीं कि दूसरे देश में भी वही हो। मुझे याद आता है, 1997-98 में एक अमेरिकी ने मुझे हॉलीवुड फिल्म में 'डार्क ईविल' का रोल ऑफर किया था। क्योंकि उसने अपने आस-पास गोरे लोगों को देखा था। उसके लिए मैं काला और ईविल था, जबकि यहां मुझे सब गोरा कहते हैं। तो उसका सौंदर्यबोध गोरेपन का है। इसलिये 'सौंदर्यबोध आपकी अपनी दृष्टि पर निर्भर है। ये आपका अपना आकलन है।' ...यह परिभाषा मुझे ठीक नहीं लगती। क्योंकि यदि सुन्दरता है, तो फिर कुरूपता भी है। पर मेरा मानना है कि हम सुन्दर असुन्दर का बोध ही क्यों करें...? इससे परे क्यों न देखें!

Q प्रेम के नाम पर आजकल तो समाज में चल रहा है उसे आप कैसे देखते है ?

»इसका संबंध किसी समय या गुण से जोड़ना उचित नहीं है। क्योंकि हर युग में ज्ञानवान, अज्ञानी या अल्पज्ञानी लोग जन्म लेते हैं, ये कोई युग विशेष की बात नहीं है। सभी तरह के लोग हर काल में रहे हैं, अच्छे भी और बुरे भी।

Q प्रेम बंधनकारी या मुक्तिदायक?

»प्रेम का शुद्ध स्वरूप 'शून्य' मुक्तिदायक- आनंददायक है, क्योंकि यह किसी पर निर्भर नहीं है। अपने आप में पूर्ण है। बाकी सब संसार के प्रेम बंधनकारी हैं, दुखदायी हैं।

Q आपके जीवन में सबसे प्यारा सबसे सुन्दर?

»**मेरा बेटा नेवान**!!

पिछले एक वर्ष में अब, यह मैं जान गया हूँ कि नेवान के प्रति मैं आसक्त नहीं हूँ। मतलब अपनी ख़ुशी के लिए उस पर निर्भर नहीं हूँ। एक स्वतंत्र आत्मा के रूप में उसके अस्तित्व का बोध मुझे उसके इस रूप में आनंद से सराबोर कर देता है, शायद यही प्रेम की पवित्र स्थिति है, जो एक स्थिर और अच्छी मनोदशा का सूचक है।

Q असुन्दर क्या है ?

»''सुन्दरता के प्रति कोई मान्यता या अवधारणा बनाना ही असुन्दर बात है। ''क्योंकि आकलन करना ही न्यायसंगत नहीं है। यदि आपने कुछ सुन्दर माना, तो दूसरी तरफ असुन्दर भी पैदा होगा, यह तुलना करना ग़लत है। हमें निर्णायक नहीं होना चाहिए। जो जैसा है वह बस है!"

प्रेम- सौंदर्य और ईश्वर को अभिव्यक्त करने वाले तीन शब्द-
''प्रेम... मिथ्या''!
''सौंदर्य... मिथ्या''!
''ईश्वर... मिथ्या''!

...समाज की दी हुई सभी परिभाषाएं मिथ्या हैं। इन तीनों शब्दों के अर्थ जरा और गहरे हैं, जो लोगों की सोच और मान्यताओं से बिल्कुल परे हैं। शायद अब मैं थोड़ा कुछ समझ पाया हूँ...

Q आपके गाए हुए गीतों में से कोई एक गीत जो प्रेम की एक सशक्त अभिव्यक्ति हो?

''हर घड़ी बदल रही है रूप ज़िन्दगी
छांव है कहीं, कहीं है धूप ज़िन्दगी...
हर पल यहां, जी भर जियो,
जो है समां, कल हो न हो...।''

वीईंग माइंडफुल

आशुतोष राणा की कलम से...

क्या प्रेम को हम आचरण में उतार सके हैं...?

प्रेम सभी भावों का जन्मदाता है। इसके शुद्ध शाश्वत स्वरुप की हम सदैव ही चर्चा करते रहे हैं, किंतु इतनी चर्चा के बाद भी प्रेम का वह आधारभूत भाव हमारी चर्या नहीं बन पाया। यह हमारे चिंतन में तो वर्तमान रहा किंतु हमारे आचरण में नहीं उतर पाया।

चाहे व्यक्ति के लिए प्रेम हो या प्रकृति के लिए प्रेम हो? परिवार के लिए प्रेम हो या राष्ट्र के लिए प्रेम हो? नीतियों के प्रति प्रेम हो या मूल्यों के प्रति प्रेम हो? जिस प्रदर्शन को हम प्रेम के नाम से जानते, मानते, और सराहते हैं, क्या ये वही प्रेम है? जिसके दर्शन की शिक्षा-दीक्षा हमें दी जाती रही है?

प्रेम व्यवहार, प्रेम से किया गया व्यवहार और 'प्रेम के नाम' पर किए गए व्यवहार में भारी अंतर होता है। हम प्रेम के नाम पर किए गए व्यवहार के प्रतिफल को ही प्रेम के प्रतिफल के रूप में जानने लगे हैं। परिणामस्वरूप प्रेम का विशुद्ध रूप हमें संदिग्ध लगने लगा और प्रेम के विद्रुप रूप को ही हम प्रेम मानने लगे, जिससे हमारा विश्वास प्रेम पर से उठ गया।

अब चूँकि हमारे अस्तित्व को बचाये रखने के लिए प्रेम अवश्यम्भावी है, इसलिए प्रेम नहीं तो प्रेम के नाम पर ही सही के भाव से प्रेरित होकर हम प्रेम की तलाश में प्रेम के पथ को छोड़ कर उससे विपरीत दिशा की ओर कूच कर गए।

सृजन और विध्वंस में हम सामान्य रूप से सृजन को कल्याणकारी मानते हैं किंतु हमें स्मरण रखना चाहिए कि 'प्रेम की भूमि पर होने वाला विध्वंस भी द्वेष, ईर्ष्या और नफ़रत की भूमि पर पैदा होने वाले सृजन से कहीं अधिक कल्याणकारी होता है।

प्रेम, मुख्यतः तीन अक्षरों का योग है, 'प' 'र' 'म'। जब ये तीनों जुड़ते हैं तो परम हो जाते हैं। परम अर्थात पूर्ण। हमारी प्रकृति के भी तीन गुण होते हैं..सत् , रज, तम। हम तीन नाड़ियों से संचालित होते हैं इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना। तीन लोक हैं और तीन ही रोग हैं (वात, कफ़, पित्त).. तीन देवों की ही धारणा है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश। हमारी तीन ही गतियाँ हैं, सृजन, संरक्षण और विसर्जन। हमने काल को भी तीन भागों में ही धारण किया है भूत, भविष्य और वर्तमान। अर्थात इस सृष्टि में जो कुछ भी है वह परम सत्ता का 'अंश' ही है। ऐसा अंश जिसके अंदर पूर्णता की पूरी सम्भावना है, क्योंकि पूर्ण विखंडित हो कर भी पूर्ण ही रहता है। यह बिलकुल वैसा ही है जैसे किसी फल में बीज होते हैं और उस बीज में पता नहीं कितने फल छिपे हुए होते हैं। इसलिए प्रेम को ही परम या पूर्ण कहा गया है या जो कुछ भी पूर्ण है, वह प्रेम ही है। हम प्रेम की उत्पत्ति के कारण नहीं है, बल्कि प्रेम ही हमारी उत्पत्ति का कारण है। सामान्य अर्थों में हम मनुष्यों की असीमित चेतना के सीमित चिंतन के कारण अलगाव जब लगाव में बदलता है तो प्रेम हो जाता है।

बिखराव जब जुड़ाव में रूपांतरित होता है तो प्रेम कहलाता है। किंतु यदि हम इसे परमसत्ता की दृष्टि से देखें तो पाएँगे कि विखंडित का संगठित उद्घोष भी प्रेम है और संगठित का विखंडित नाद भी प्रेम ही है। प्रेम सँवर के भी प्रेम रहता है और बिखर के भी वह प्रेम ही रहता है। क्योंकि जो परम है पूर्ण है उसका ना संगठन सम्भव है ना विखंडन। इसलिए प्रेम करना नहीं, होना है..

Absolute existence•• परम सत्य या परम सत्ता।

आशुतोष राणा

...शिवम् भवतु

प्रेम नकारने नहीं, स्वीकार किए जाने की मांग है

विजय बहादुर सिंह
साहित्यकार एवं आलोचक, भोपाल

दोनों बड़ी पुरानी किंतु पल-पल बदलती अवधारणाएं हैं। जितनी पुरानी उतनी ही नई और रोमांचक आकर्षणों को निरंतर जन्म देती हुईं। मनुष्य को चेतना की समानता और अभिनवता का रहस्य वस्तुतः इन्हीं दोनों शब्दों में किसी सुंदर रहस्य-सा छिपा बैठा है।

सच तो यह है कि जो हमें बार-बार अपनी ओर खींचता है, पास और पास होने का और पास होते जाने का मौन आमंत्रण देता है, वही सुंदर है। अंततः अविच्छिन्न और एकाकार होकर ही विश्राम देता और और पाता है। यह मेरा यह मैं स्वयं विसर्जित वाला भाव।

यानी कि प्रथमतः यह अभाव की अनुभूति से पैदा होने वाला एक भाव है- हमें संपूर्ण करने का। कलाएं इसीलिए तो सुंदर और कालजयी मानी जाती हैं।

अगर इसका स्थूल और व्यावहारिक अर्थ लें तो सुंदर रूप और वस्तु भी। सौंदर्य- प्रतियोगिताएं उसका निम्नतम और अतिवादी उदाहरण हैं। फिल्मी नायिकाओं में स्मिता पाटिल, शबाना आज़मी रूप के स्तर पर भले ही ड्रीम गर्ल हेमा मालिनी न हो पर कला के स्तर पर तो हेमा और रेखा के आगे हैं। इसी तरह मीना कुमारी, नरगिस, मधुबाला; ऐश्वर्या राय, प्रियंका चोपड़ा पर दोनों स्तरों पर भारी हैं। पर एक और अर्थ में इंदिरा गाँधी, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम और मेधा पाटकर या 'चमक उठी सन् सत्तावन- अट्ठावन' की रानी लक्ष्मीबाई।

इनके सामने इतिहास और लोकजीवन में और किसकी गाथाएं दोहराई जाएंगी या टिकेंगी। भारतीय पुरुषों में आज गांधी से सुंदर कौन है? हमारे राष्ट्रीय जीवन के प्राण- केन्द्र। नेहरू तो बहुत सुंदर थे पर वे गांधी तो नहीं हो सकेंगे। सौंदर्य का तब दूसरा अर्थ होगा विचार और कर्म- सौंदर्य।

स्थूल भौतिक सौंदर्य भी सुंदर ही है पर उसका बुढ़ापा भी आएगा, मौत भी। कर्म और विचार सत्ताएं उससे मुक्त और परे हैं।

आपकी जिज्ञासा कहां तक है, आप ही जान लें।

लेकिन याद रखें रूप- सौंदर्य अगर भाव- शून्य और कर्म- शून्य होगा तो जल्दी ही वितृष्णा भी पैदा करेगा।

दूसरी जिज्ञासा प्रेम को लेता हूँ;

यह भी सृष्टि का मूल भाव है जिसे दार्शनिक भाषा में 'राग' कहते हैं। संसार विरक्त व्यक्ति को इसीलिए विरागी कहा जाता है। राग को समझाते हुए कबीरदास ने एक महत्वपूर्ण दोहा कहा-

चाह गई चिंता मिटी मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछु न चाहिए सोई सातंसाह।।

बाहर से मुक्त हो जाना। पर जो संसार राग से बना भवराग तो, उससे मुक्त भी क्यों होना? काल हमें भोगना है और हम संसार को। काल का भी काम चल जाता है, हमारा राग भी सध जाता है। चार्वाकों ने तब गलत क्या कहा- नहीं हुई भी भागोगे तब भीतो भये। तब भोग करके ही क्यों नहीं मरते। सच तो यही है कि गैरिक वस्त्र पहनने वाले भी इच्छा मुक्त और भोग- रहित नहीं है। जो हम दबाते हैं वह उनकी माया और पाखंड है। हम कुछ लोग इस सत्य से परिचित हैं, सामान्य जनता को इसी पाखंड भोग में रस की अनुभूति होती है। पाखंड उसे सुहाता है। झूठ अच्छा लगता है। जैसे कि सोने का हिरन। आप समझ गई होंगी कि मैं कहना क्या चाहता हूं।

इसलिए पूरा समाज हमसे प्रेम की इच्छा ही नहीं रखता, भीतरी मन से पाने की गहरी साध भी रखता है। ये आदर- श्रद्धा आदि इसी के उप-चरण हैं। इसलिए प्रेम नकारने नहीं, स्वीकार किए जाने की मांग है। आप पूछिए किसी से वह क्या कहता है।

आधुनिक हिंदी के महान कवि और महाकाव्य कामायनी के रचयिता जयशंकर प्रसाद ने लिखा-

काम- मंगल से मंडित श्रेय,
सर्ग, इच्छा का है परिणाम।
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल,
बनाते हो असफल भावधाम।।

यह संपूर्ण संसार ही काम मंडित संसार है। उससे मुकरना सृष्टि को मूल- सृजन- इच्छा को ही नकारना है। इस बात को भी कई- कई बार

ग्रंथ में कहते हैं। एक और बात देखिए! पुराणों में चाहे इंद्र हों या विष्णु, राम हों या कृष्ण, इनमें से एक भी वैराग्य- धर्मी में नहीं है। सब गृहस्थ हैं। इंद्र और उनके छोटे भाई उपेंद्र यानी कृष्णावतार में कृष्ण को लीलाओं से आप कहानी के स्तर पर तो परिचित होंगे ही। कृष्ण- लीला में गोपियाँ (जीवात्माएं) और कृष्ण (ब्रह्म) एक- दूसरे में सघन- भाव से आनंद-विभोर हैं। यही तो पुराण- दर्शन हैं।

तथापि इंद्र की तरह का अनियंत्रित काम- विहार भारतीय समाज व्यवस्था को मंजूर नहीं..... पर अपवाद तो होते आए हैं। होते रहेंगे। पर यह नियम नहीं है।

प्रेम का एक और चरण वासना या ऐन्द्रिक भूख है। परिष्कृत शब्दावली में काम- भूख और काम- संतुष्टि। अंग्रेजी में सेक्स की मांग और संतुष्टि। मां, बहन, बेटी के संदर्भ में यह अपना रूप बदलकर एक और स्तर पर पहुंच जाता है। कोई चाहे तो इसे परिवार- प्रेम और घर- प्रेम, देश- प्रेम, विश्व- प्रेम के उत्तुंग शिखर तक ले जा सकता है। बुद्ध, गांधीजी आदि संत- पुरुषों की तरह।

पर यह विरल होता है। साधारण या औसत मनुष्य में तो यह दिखता नहीं। औसत तो इसे भी देह की सामान्य भूख की तरह महसूस करता है। इसकी अति मनुष्य को हैवानियत तक ले जाती है। मर्यादा, अनुशासन, आदर्श नागरिकता की ओर।

पर एक और टुकड़ा प्रतिभा- सम्पन्न कलाकारों और कवि- लेखकों का भी है। जिनके बारे में दार्शनिक प्लूटो से लेकर अपने यहां के मुनि, कला-चिंतक भरत ने कहा- क्या ही अच्छा हो कि इनकी बस्तियां सामान्य नागरिक बस्तियों से अलग हों।

प्रतिभाओं का एक अपवादपूर्ण लक्षण बने- बनाए कला- व्याकरण की चली आती परिस्थितियों को नए कला- स्वाद के लिए बदल डालना। लोक पीटने वाला नए आस्वाद का जन्मदाता कैसे हो सकता है। उदाहरण के लिए बॉलीवुड की मसाला फिल्में। पर उन्हीं के बीच आमिर ख़ान आदि जैसे कुछ-एक विरले भी हैं जो प्रायः हमेशा नया सोचते और करते हैं। कवियों में ग़ालिब, प्रसाद, निराला, अज्ञेय या फिर लोकप्रिय कवियों में नीरज, दुष्यंत, कुमार आदि। लेखकों में मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव आदि।

ये या फिर चित्रकारों में राजा रविवर्मा, अमृता शेरगिल आदि। ये वे असाधारण और मौलिक सृष्टा हैं, जिनमें अद्वितीयता का सौंदर्य है।

रहा प्रश्न समाज और लोकव्यवस्था का तो जवाब होगा- उसके लिए इतनी सारी औसत भीड़ तो हाजिर है। कोई जरूरी नहीं कि प्रतिभाएं भी उसके साथ अपने मन और भावों की कुर्बानी करें। इनमें औसतों जैसी अतिरिक्त भूख- पैसों की न होकर कुछ और बातों की तब क्यों नहीं हो सकती। अगर आमदनी, पूंजी, सत्ता-भूख को आप अनैतिक करार नहीं देते तो किस आधार पर मन की अतिरिक्त भूख को आप अपराध की श्रेणी में रखना चाहेंगे?

सौन्दर्य के प्रति निर्द्वंद बहाव ही प्रेम है

डॉ. विभेश कुमार चौबे
स. प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र,
एन.पी.यू., मेदिनीनगर,
पलामू, झारखंड
vibheshchoubey@gmail.com

प्रेम और सुंदरता की जब भी बात आती है तो हमारा मन-मस्तिष्क अपने तरुणाई के दिनों की स्मृति मे एक बार जरूर गोता लगाता है और उस पल की झलक ले लेता है जब हम फिदा हुए थे। उसके आगे तो हर व्यक्ति की अपनी-अपनी कहानियाँ हैं.....कुछ छोटी तो कुछ लंबी....कुछ रोचक तो कुछ बोझिल। लेकिन जो कौंधता है, वह है फिदा होने का प्यारा-सा पल..... वह पल जिसने हमारे जीवन को सौंधी-सौंधी खुशबू से भरा था.....दुनिया नई, ताजी और बिंदास लगने लगी थी..... जीवन अर्थ से भर उठा था ..... चारों ओर आनंद ही आनंद पसरा नजर आता था। प्रेम और सुंदरता को समझने के लिए उस पल को समझ लेना ही सबसे कारगर है। लेकिन केवल वही पल..... उसके आगे पीछे तो उलझा देने वाली व्यथा-कथा का कचरा है .....और अक्सर हम उस कचरे में घुसकर प्रेम और सौन्दर्य की खोज कर रहे होते हैं। यह कचरा ही पोथी है और वह पल ही ढाई अक्षरी है।

फिदा होने के दिनों में तरुणों के बीच प्रेम विषय पर बहुत संवाद हुआ करता है। प्रेम को अनेकानेक तरीके से परिभाषित किया जाता है। वैसे ही संवादों में एक संवाद मुझे आज तक याद है। दो तरुणों ने "प्रेम क्या है" विषय पर लंबा संवाद किया और हर निष्कर्ष को यह कहकर खारिज करते गए कि यह तो प्रेम का उपफल है। प्रेम में होने के अनेकानेक बायप्रोडक्ट होते हैं और हम उन्हीं में से किसी एक या एकाधिक को प्रेम कह लेते हैं। लेकिन यह सब प्रेम में होने के पल के बाहर की अवस्था है। प्रेम को उसके पल से बाहर जाकर नहीं समझा जा सकता। अंततः संवाद के चरम पर एक प्रेमी के मुख से निकला कि – "प्रेम सौन्दर्य के प्रति निर्द्वंद्व बहाव है"। मुझे यह कथन बेहद प्रीतिकर लगा और जब भी कहीं प्रेम विषयक संवाद होता है तो यह मुझे अनायास ही याद आ जाता है।

उस तरुण ने अपने फिदा होने के पल की व्याख्या अब उस पल की अंतरंगता में की। उसने कहा कि जब वह उसे (अपनी प्रेमिका) देखता है या उसके साथ होता है, उसका सौन्दर्य उसे अभिभूत कर देता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वह उसके संपूर्ण सौन्दर्य की ओर बहा चला जा रहा हो। उसका बोलना, हँसना, उठना, बैठना सबकुछ अप्रतिम सौन्दर्य से भरा प्रतीत होता है। वहाँ सिर्फ आनंद ही आनंद महसूस होता है..... ऐसा आनंद जो हर प्रकार के द्वंद्व या संघर्ष से मुक्त है। सौन्दर्य के एक सम्पूर्ण प्रभामंडल की ओर निर्द्वंद्व बहाव। क्या यही प्रेम नहीं है? लेकिन यह पल टिकता नहीं। अगले ही पल इच्छा/वासना जग उठती है..... उसे अपना बना लेने की, उसपर आधिपत्य कर लेने की। इच्छा के जगते ही प्रेम का वह पल गिर जाता है और द्वंद्व का संसार खड़ा हो उठता है। अब शुरू होता है व्यथा-कथा ..... तृष्णा को प्रेम सिद्ध कर देने का ..... द्वंद्व/संघर्ष को जीवन की सच्चाई सिद्ध कर देने का। ढाई अक्षरी पर पोथी हावी हो जाती है।

प्रेम सौन्दर्य के प्रति निर्द्वंद्व बहाव ही तो है। माँ-बाप का अपने बच्चों की निश्छलता के सौन्दर्य में भावित होना, शिष्य का अपने ज्ञानी गुरु की प्रज्ञा के सौन्दर्य में भावित होना, मित्र का अपने मित्र के निःस्वार्थता के सौन्दर्य में भावित होना इत्यादि अनेकानेक शेड्स हैं जो प्रेम के साक्षी हैं। सत्य ही सुंदर है और सुंदर के प्रति भावित होना ही प्रेम है। जब हमारा अस्तित्व निर्द्वंद्व हो जाता है तो हम खुद ही प्रेम हो उठते हैं। परंतु तृष्णा हमें निर्द्वंद्व नहीं होने देती। गुलाब के फूल के सौन्दर्य के प्रति बहना प्रेम है, परंतु उसे तोड़कर अपना बना लेना हमारी तृष्णा है। प्रेम में हम पौधे को सिंचित करते हैं, तृष्णा में हम उसके पुष्प तोड़ लेते हैं। जब प्रेमी प्रेमिका पर आधिपत्य चाहता है, माँ-बाप अपने बच्चों को अपनी तृष्णा का वाहक समझ लेते हैं, गुरु की प्रज्ञा हमारे लाभ का साधन बन जाती है तो यह सिर्फ द्वंद्व, संघर्ष, बेचैनी और पागलपन ही खड़ा करती है। सौन्दर्य के प्रति प्रवाहित होने की हमारी क्षमता को यह कुंद कर देता है। हमारा जीवन एक पोथी बन जाता है ..... कि जीवन तो अंतहीन संघर्ष कथा है।

वस्तुतः अपने सर्वोच्च रूप में अस्तित्व की निर्द्वंदता ही प्रेम है। स्थूल या मूर्त के प्रति हमारा सौंदर्यात्मक प्रवाह महज प्रेम का एक पल देता है। तृष्णा आच्छादित जीवन में वह पल बेहद छोटा और कभी-कभी आने वाला होता है। इसीलिए हम उस पल को कभी समझ नहीं पाते। वह एक सपने की तरह लगता है। हम उसे काल्पनिक और अयथार्थ मानकर अपने तृष्णा के द्वंद्व में ही प्रेम की रियलिस्टिक व्याख्या खोजते रहते हैं। हम यह कभी नहीं समझ पाते कि तृष्णा या इच्छा की दुनिया मे केवल संघर्ष होता है। जीवन में प्रेमपूर्णता के जो भी थोड़े बहुत पल आते हैं वह तभी आते हैं जब हमारी तृष्णा कुछ कम हुई होती है। यह बिल्कुल प्रत्यक्ष अनुभव का विषय है और बेहद रियलिस्टिक भी। परंतु हमने कभी खुद को देखना ही नहीं सीखा होता है। हमारा मानस बाह्योन्मुखता के प्रति यांत्रिक हो चुका होता है। हम यथार्थ को इसी यांत्रिकता में खोजते हैं।

यथार्थ तो पल के विज्ञान में निहित है। हमारा जीवन पलों का समुच्चय है। एक पल से दूसरा पल इतनी बारीकी से गुंथा हुआ होता है कि हम पल से अधिक इस गूंथन को सत्य समझ बैठते हैं। जिन पलों की सातत्यता अधिक होती है उसे ही हम जीवन का यथार्थ समझ बैठते हैं। सातत्यता के कारण हम उसमें स्थायित्व का प्रक्षेपण कर लेते हैं और उन पलों को मिथकीय श्रेणी में डाल देते हैं, जिनकी घटनशीलता और आवृत्ति कम है। जो भी श्रेष्ठ है उसकी घटनशीलता और आवृत्ति सदैव न्यून होती है। हमारी ऐंद्रिकता ही सतत घटनशील और आवृत्त होती है। इसीलिए हम अपनी इंद्रियजनित इच्छाओं के संसार को ही असली या रियलिस्टिक संसार मान लेते हैं। इस प्रक्षेपित यथार्थ के संसार में प्रेम, सौन्दर्य, करुणा जैसे श्रेष्ठ भावों की घटनशीलता के पल इतने कम उपस्थित होते हैं कि हमारा मानस उनके प्रति सशंकित-सा रहता है। प्रक्षेपण जितना रूढ़ होता है, श्रेष्ठ पलों का स्पंदन भी उतना ही न्यून होता है। इसीलिए ऐंद्रिकता में आकंठ डूबे हुए लोग क्रूरता की हद तक असंवेदनशील हो जाते हैं। प्रेम के उच्च भाव के स्पंदन मात्र से वे महरूम होते हैं।

आज हम अपने चारों ओर पसरे जीवन-जगत में अजीबो गरीब निष्ठुरता पाते हैं। वीभत्स किस्म की हिंसा में जिस तरह का विस्तार दिखता है वह मनुष्य की संवेदनहीनता की कहानी कहता है। यह सब मानव जीवन से प्रेम और सौन्दर्य की स्पंदनों की विलुप्ति की कथा है। ऐंद्रिकता या तृष्णा का जगत अंतहीन द्वंद्व और संघर्ष का जगत है। मनुष्य जब सतत द्वंद्व में होता है तो या तो अवसादग्रस्त हो जाता है या फिर हिंसक। द्वंद्व के संपूर्ण स्थूल दबाव को प्रेम के निर्द्वन्द पल ही अनियंत्रित होने से रोकते हैं। भले ही ये पल अपनी उपस्थिति और आवृत्ति में न्यून हों परंतु प्रभाविता में बेजोड़ होते हैं। मनुष्य होने की संवेदनशीलता और सार्थकता इनके होने में ही निहित है। प्रेम के स्पंदनों के निर्द्वन्द पल हमारे जीवन में ताजी हवा की तरह होते हैं जो द्वन्द की उबकाई में पड़े जीवन को तरोताजा कर विश्रांति देने वाले हैं। जरुरत श्रेष्ठ पलों के यथार्थ को देखने-पहचानने की होती है।

यथार्थ की यथार्थ समझ ही हमें प्रेम की ओर ले जाती है। जिस दिन हम इस यथार्थ को देखने मे सफल होते हैं कि हमारे जीवन में आया हुआ प्रेम का पल हमारी अपनी ही तृष्णा की न्यूनता के कारण घटित हुआ था और जब हम उस पल को अपने आधिपत्य में करने की ओर बढ़े तो वह भीषण बेचैनी और पीड़ा से भरा हुआ था, उसी दिन हम प्रेम के जीवन की ओर पहला कदम बढ़ा देते हैं। तृष्णा के ढीला पड़ने पर ही जीवन के अनंत सौन्दर्य के प्रति हमारा सहज (निर्द्वंद) बहाव हो पाता है ..... और यह बहाव ही प्रेम में होना है। प्रेम अस्तित्व की अपनी ही बाध्यताओं से मुक्ति का गीत है। जब हम अपने जकड़े हुए मन के प्रति सावधान होते हैं, उसका तटस्थ अवलोकन करते हैं और उसके भारीपन को देख पाने में समर्थ होते हैं तो हमारा मन हल्का होने के लिए छटपटाना शुरू कर देता है। जैसे-जैसे हम चित्त की लघुता की ओर बढ़ते हैं सत्य और सुंदर को ग्रहण करने की हमारी क्षमता विस्तार पाती है। हल्का चित्त अपने ही जीवन के उन पलों को समझने लगता है, जबकि उसने प्रेम का आस्वादन किया था। अब वह उस पल का विस्तार चाहता है न कि उस पर आधिपत्य। तृष्णा विमुक्ति ही उसका विस्तार है। अस्तित्व का पूर्णतः तृष्णा विमुक्त होना, संपूर्णतः निर्द्वंद हो जाना है ..... वही सौन्दर्य के प्रति निर्बाध प्रवाह है .....वही प्रेम की पराकाष्ठा है ..... वही बुद्ध हो जाना है।

इत्तफाकन अब अधेड़ हो चुके उस तरुण से मुलाक़ात हो गई। वह बेहद प्रसन्नचित्त जान पड़ा। मैंने कहा- लगता है तुम्हारा प्रेम-प्रसंग सफल हुआ। उसने कहा- प्रसंग तो असफल हुआ परंतु प्रेम सफल रहा। प्रसंग ने प्रेम और तृष्णा के तीव्र पल उपस्थित किए। सौभाग्य यही रहा कि प्रेम के स्पंदनों के पल को मैंने तिरोहित नहीं होने दिया। तृष्णा तो अपने रास्ते खोज लेती है। जब उसका ज्वार ठंडा पड़ा तो प्रेम के वही स्पंदन जीवन-सूत्र बन गए..... सौन्दर्य की ओर निर्द्वन्द बहाव। जीवन तो चहुंओर सुंदरता से भरा पड़ा है। इच्छा-महत्वाकांक्षा का दबाव न हो तो वह दिखने लगता है। बोझिल रोजमर्रेपन का नूतन हो जाना ही प्रेम का सबसे बड़ा प्रतिफल है। चित्त जब हल्का हो जाता है तो वह प्रेमी होता है। प्रेमी मन के लिए रोजमर्रापन ही आदि और अंत है। मैं इसलिए प्रसन्न नहीं हूँ कि मेरा प्रसंग सफल/असफल हुआ। मैं तो इसलिए प्रसन्न हूँ कि यही मेरा भाव हो गया। प्रेम का सुंदर पल जीवन के कैनवास पर पसर गया। अब मैं अपने रोजमर्रेपन के सौन्दर्य में सुबह से शाम तक प्रवाहित होते रहता हूँ। मधुर संगीत सुनता हूँ, सुस्वादु भोजन बनाता हूँ, बच्चों संग खेलता हूँ, बीवी संग गप्पे लड़ाता हूँ, दुखी मित्रों को ढाँढ़स देने पहुँच जाता हूँ, आए हुए का खूब सत्कार करता हूँ..... और यह सब करने में आनंद ही आनंद रहता है। आखिरकार तृष्णा के न्यूनतम दबाव वाले रोजमर्रेपन के सौन्दर्य मे बहते जाना ही तो प्रेम का सबसे रियलिस्टिक आख्यान है।

आत्म संगीत

मुंशी प्रेमचंद
उपन्यासकार
कालजयी रचना

बीइंग माइंडफुल

अंतस के प्रेम और सौंदर्य को पा लेने के लिए एक महारानी सर्वस्व देने को तैयार थी, झोपड़े में रहने वाले माँझी के मार्ग के कंकड़ तक बीन लेने को तैयार थी, मगर....

आधी रात थी। नदी का किनारा था। आकाश के तारे स्थिर थे और नदी में उनका प्रतिबिम्ब लहरों के साथ चंचल। एक स्वर्ग की सी संगीत की मनोहर और जीवनदायिनी, प्राण-पोषिणी ध्वनियाँ इस निस्तब्ध और तमोमय दृश्य पर इस प्रकाश छा रही थी, जैसे हृदय पर आशाएं छायी रहती हैं, या मुखमंडल पर शोक।

रानी मनोरमा ने आज गुरु-दीक्षा ली थी। दिन-भर दान और व्रत में व्यस्त रहने के बाद मीठी नींद की गोद में सो रही थी। अकस्मात् उसकी आंखें खुलीं और ये मनोहर ध्वनियाँ कानों में पहुँची। वह व्याकुल हो गई—जैसे दीपक को देखकर पतंगा वह अधीर हो उठी, जैसे खाँड की गंध पाकर चींटी। वह उठी और द्वारपालों एवं चौकीदारों की दृष्टियाँ बचाती हुई राजमहल से बाहर निकल आई—जैसे वेदनापूर्ण क्रन्दन सुनकर आँखों से आँसू निकल जाते हैं।

सरिता-तट पर कँटीली झाड़ियाँ थीं। ऊँचे कग़ारे थे। भयानक जंतु थे। और उनकी डरावनी आवाजें! शव थे और उनसे भी अधिक भयंकर उनकी कल्पना। मनोरमा कोमलता और सुकुमारता की मूर्ति थी। परंतु उस मधुर संगीत का आकर्षण उसे तन्मयता की अवस्था में खींचे लिया जाता था। उसे आपदाओं का ध्यान न था।

वह घंटों चलती रही, यहाँ तक कि मार्ग में नदी ने उसका गतिरोध किया।

मनोरमा ने विवश होकर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई। किनारे पर एक नौका दिखाई दी। निकट जाकर बोली—माँझी, मैं उस पार जाऊँगी, इस मनोहर राग ने मुझे व्याकुल कर दिया है।

माँझी—रात को नाव नहीं खोल सकता। हवा तेज है और लहरें डरावनी। जान-जोखिम हैं।

मनोरमा—मैं रानी मनोरमा हूँ। नाव खोल दे, मुँहमाँगी मजदूरी दूँगी।

माँझी—तब तो नाव किसी तरह नहीं खोल सकता। रानियों का इस में निबाह नहीं।

मनोरमा—चौधरी, तेरे पाँव पड़ती हूँ। शीघ्र नाव खोल दे। मेरे प्राण खिंचे चले जाते हैं।

माँझी—क्या इनाम मिलेगा?

मनोरमा—जो तू माँगे।

'माँझी—आप ही कह दें, गँवार क्या जानूँ, कि रानियों से क्या चीज माँगनी चाहिए। कहीं कोई ऐसी चीज न माँग बैठूँ, जो आपकी प्रतिष्ठा के विरुद्ध हो?

मनोरमा—मेरा यह हार अत्यन्त मूल्यवान है। मैं इसे खेवे में देती हूँ। मनोरमा ने गले से हार निकाला, उसकी चमक से माँझी का मुख-मंडल प्रकाशित हो गया—वह कठोर, और काला मुख, जिस पर झुर्रियाँ थी।

अचानक मनोरमा को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो संगीत की ध्वनि और निकट हो गई हो। कदाचित कोई पूर्ण ज्ञानी पुरुष आत्मानंद के आवेश में उस सरिता-तट पर बैठा हुआ उस निःस्तब्ध निशा को संगीत-पूर्ण कर रहा है। रानी का हृदय उछलने लगा। आह! कितना मनोमुग्धकर राग था! उसने अधीर होकर कहा—माँझी, अब देर न कर, नाव खोल, मैं एक क्षण भी धीरज नहीं रख सकती।

माँझी—इस हार हो लेकर मैं क्या करुँगा?

मनोरमा—सच्चे मोती हैं।

माँझी—यह और भी विपत्ति हैं माँझिन गले में पहनकर पड़ोसियों को दिखायेगी, वह सब डाह से जलेंगी, उसे गालियाँ देंगी। कोई चोर देखेगा, तो उसकी छाती पर साँप लोटने लगेगा। मेरी सुनसान झोपड़ी पर दिनदहाड़े डाका पड़ जाएगा। लोग चोरी का अपराध लगाएंगे। नहीं, मुझे यह हार नहीं चाहिए।

मनोरमा—तो जो कुछ तू माँग, वही दूँगी। लेकिन देर न कर। मुझे अब धैर्य नहीं है। प्रतीक्षा करने की तनिक भी शक्ति नहीं हैं। इन राग की एक-एक तान मेरी आत्मा को तड़पा देती है।

माँझी—इससे भी अच्छी कोई चीज दीजिए।

मनोरमा—अरे निर्दयी! तू मुझे बातों में लगाये रखना चाहता हैं। मैं जो देती है, वह लेता नहीं, स्वयं कुछ माँगता नहीं। तुझे क्या मालूम मेरे हृदय की इस समय क्या दशा हो रही है। मैं इस आत्मिक पदार्थ पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सकती हूँ।

माँझी—और क्या दीजिएगा?

मनोरमा—मेरे पास इससे बहुमूल्य और कोई वस्तु नहीं है, लेकिन तू अभी नाव खोल दे, तो प्रतिज्ञा करती हूँ कि तुझे अपना महल दे दूँगी, जिसे देखने के लिए कदाचित तू भी कभी गया हो। विशुद्ध श्वेत पत्थर से बना है, भारत में इसकी तुलना नहीं।

माँझी—(हँस कर) उस महल में रह कर मुझे क्या आनंद मिलेगा? उलटे मेरे भाई-बंधु शत्रु हो जाएंगे। इस नौका पर अँधेरी रात में भी मुझे भय न लगता। आँधी चलती रहती है और मैं इस पर पड़ा रहता हूँ। किंतु वह महल तो दिन ही में फाड़ खाएगा। मेरे घर के आदमी तो उसके एक कोने में समा जाएंगे। और आदमी कहाँ से लाऊँगा ; मेरे नौकर-चाकर कहाँ? इतना माल-असबाब कहाँ? उसकी सफाई और मरम्मत कहाँ से कराऊँगा? उसकी फुलवारियाँ सूख जाएंगी, उसकी क्यारियों में गीदड़ बोलेंगे और अटारियों पर कबूतर और अबाबीलें घोंसले बनाएंगी।

मनोरमा अचानक एक तन्मय अवस्था में उछल पड़ी। उसे प्रतीत हुआ कि संगीत निकटतर आ गया है। उसकी सुंदरता और आनन्द अधिक प्रखर हो गया था—जैसे बत्ती उकसा देने से दीपक अधिक प्रकाशवान हो जाता है। पहले चित्ताकर्षक था, तो अब आवेशजनक हो गया था। मनोरमा ने व्याकुल होकर कहा—आह! तू फिर अपने मुँह से क्यों कुछ नहीं माँगता? आह! कितना विरागजनक राग है, कितना विह्वल करने वाला! मैं अब तनिक धीरज नहीं धर सकती। पानी उतार में जाने के लिए जितना व्याकुल होता है, श्वास हवा के लिए जितनी विकल होती है, गंध उड़ जाने के लिए जितनी व्याकुल होती है, मैं उस स्वर्गीय संगीत के लिए उतनी व्याकुल हूँ। उस संगीत में कोयल की-सी मस्ती है, पपीहे की-सी वेदना है, श्यामा की-सी विह्वलता है, इससे झरनों का-सा जोर है, आँधी का-सा बल! इसमें वह सब कुछ है, इससे विवेकाग्नि प्रज्ज्वलित होती, जिससे आत्मा समाहित होती है और अंतःकरण पवित्र होता है। माँझी, अब एक क्षण का भी विलंब मेरे लिए मृत्यु की यंत्रणा है। शीघ्र नौका खोल। जिस सुमन की यह सुगंध है, जिस दीपक की यह दीप्ति है, उस तक मुझे पहुँचा दे। मैं देख नहीं सकती इस संगीत का रचयिता कहीं निकट ही बैठा हुआ है, बहुत निकट।

माँझी—आपका महल मेरे काम का नहीं है, मेरी झोपड़ी उससे कहीं सुहावनी है।

मनोरमा—हाय! तो अब तुझे क्या दूँ? यह संगीत नहीं है, यह इस सुविशाल क्षेत्र की पवित्रता है, यह समस्त सुमन-समूह का सौरभ है, समस्त मधुरताओं की माधुरताओं की माधुरी है, समस्त अवस्थाओं का सार है। नौका खोल। मैं जब तक जीऊँगी, तेरी सेवा करुँगी, तेरे लिए पानी भरुँगी, तेरी झोपड़ी बहारुँगी। हाँ, मैं तेरे मार्ग के कंकड़ चुनूँगी, तेरे झोंपड़े को फूलों से सजाऊँगी, तेरी माँझिन के पैर मलूँगी। प्यारे माँझी, यदि मेरे पास सौ जानें होती, तो मैं इस संगीत के लिए अर्पण करती। ईश्वर के लिए मुझे निराश न कर। मेरे धैर्य का अन्तिम बिंदु शुष्क हो गया। अब इस चाह में दाह है, अब यह सिर तेरे चरणों में है।

यह कहते-कहते मनोरमा एक विक्षिप्त की अवस्था में माँझी के निकट जाकर उसके पैरों पर गिर पड़ी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे वह संगीत आत्मा पर किसी प्रज्ज्वलित प्रदीप की तरह ज्योति बरसाता हुआ मेरी ओर आ रहा है। उसे रोमांच हो आया। वह मस्त होकर झूमने लगी। ऐसा ज्ञात हुआ कि मैं हवा में उड़ी जाती हूँ। उसे अपने पार्श्व-देश में तारे झिलमिलाते हुए दिखायी देते थे। उस पर एक आमविस्मृत का भावावेश छा गया और अब वही मस्ताना संगीत, वही मनोहर राग उसके मुँह से निकलने लगा। वही अमृत की बूँदें, उसके अधरों से टपकने लगीं। वह स्वयं इस संगीत की स्रोत थी। नदी के पास से आने वाली ध्वनियाँ, प्राणपोषिणी ध्वनियाँ उसी के मुँह से निकल रही थीं।

मनोरमा का मुख-मंडल चन्द्रमा के तरह प्रकाशमान हो गया था, और आँखों से प्रेम की किरणें निकल रही थीं।

प्रेम हमें अंदर से सुंदर बनाता है

पंकज सुबीर

संपादक : ▪ विभोम स्वर,
▪ शिवना साहित्यिकी
subeerin@gmail.com

प्रेम को लेकर जितना लिखा गया है, कहा गया है, उतना किसी और विषय को लेकर शायद नहीं लिखा गया होगा। और उसके बाद भी प्रेम अभी तक अव्यक्त और अपरिभाषित ही है। कोई नहीं जानता कि वास्तव में प्रेम है क्या। जब हम प्रेम में होते हैं, तब भी यह ठीक-ठाक नहीं समझ में आता है कि हम जिस अवस्था में हैं, उसे यदि परिभाषित करना हो, तो कैसे किया जाएगा। कोई पूछेगा कि तुम्हें क्या हुआ है, तो हम बताएँगे क्या? जब से दुनिया बनी है, जब से यहाँ जीवन है, तब से यहाँ प्रेम और नफ़रत दोनों साथ-साथ अस्तित्व में हैं। दोनों एक दूसरे के प्रभाव को समाप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। नफ़रत चूँकि एक नकारात्मक भाव है, इसलिए इसका काम आसान होता है, प्रेम एक सकारात्मक भाव है, इसलिए इसका काम कठिन या बहुत कठिन होता है। अंतर वही होता है, जो निर्माण और ध्वंस में होता है। प्रेम को निर्माण करना होता है। निर्माण करते समय बहुत धैर्य, बहुत कौशल, बहुत एकाग्रता की आवश्यकता होती है। ध्वंस के लिए कुछ नहीं चाहिए होता। नफ़रत ध्वंस का कार्य करती है, इसलिए ही हर युग में, हर समय में उसका काम बहुत आसान होता है। प्रेम के लिए और कठिन होता है, नफ़रत द्वारा ध्वंस किये गए समय में फिर से निर्माण करना। मानव मन की प्रवृत्ति होती है वह आसान कार्य को अपने लिये पहले तय करता है। शायद इसीलिए दुनिया की अधिकांश आबादी हर समय नफ़रत में व्यस्त रहती है। और कुछ मुट्ठी भर लोग होते हैं, जो अपने लिए कठिन रास्ता चुन लेते हैं प्रेम का, जिनके लिए कबीर ने कहा है –'जो घर फूँके आपना, चले हमारे साथ'। इसी घर फूँकने को जिगर मुरादाबादी कुछ दूसरी तरह से कुछ यूँ कहते हैं –'इक आग का दरिया है और डूब के जाना है'। लेकिन मानवता के लिए सबसे बड़ी राहत की बात यही है कि ये मुट्ठी भर लोग हमेशा, हर युग में अंततः ध्वंस के पत्थरों से ही निर्माण करने में सफल रहते हैं।

प्रेम को लेकर एक बहुत सपाट-सी परिभाषा यह दी जाती है कि मानव, पशु, पक्षी, सभी में अपने से विपरीत लिंग को लेकर जो आकर्षण होता है, वही प्रेम होता है। कितनी संकुचित और सीमित परिभाषा है यह प्रेम की। यदि यही प्रेम है, तो फिर तो इसके अलावा कुछ और प्रेम है ही नहीं। और फिर यह प्रेम तो चूँकि विपरीत ध्रुवों के बीच का आकर्षण है, तो फिर यह तो भौतिक हुआ, और यह तो देह या शरीर का आकर्षण हुआ, क्योंकि यह तो शरीर की दो अवस्थाओं के बीच का खिंचाव है। जिस प्रकार चुंबक के दो विपरीत ध्रुव एक दूसरे को खींचते हैं। यह आकर्षण तो शरीर पर आकर समाप्त होगा। यहाँ पर 'समाप्त' शब्द का उपयोग इसलिए किया जा रहा है, कि जो भी आकर्षण होता है, वह प्राप्ति के बाद समाप्त होता ही है। जो नहीं मिला है, वही आकर्षित करता है, जो मिल गया, वह विरक्ति पैदा करता है। इसका मतलब यह वह प्रेम तो नहीं ही है, जिसके बारे में कबीर चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं कि –'प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय'।

प्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई लेखक सैम कीन कहते हैं 'प्रेम किसी परफेक्ट व्यक्ति की तलाश नहीं है, प्रेम इम्परफेक्ट व्यक्ति में परफेक्शन की तलाश है।' यह प्रेम की अद्भुत व्याख्या है। प्रेम हमारे देखने का नज़रिया बदलता है। वह जो कुछ है, उसी में सुंदरता तलाश करने की समझ देता है। प्रेम हर असुंदर में सुंदरता तलाश कर ही लेता है। प्रेम के लिए कुछ भी असुंदर नहीं होता, प्रेम का शब्दकोश बदसूरत शब्द से मुक्त होता है। यह शब्द वहाँ होता ही नहीं है। प्रेम चेतना के स्तर पर कार्य करता है। चेतना का वह स्तर, जहाँ सब कुछ सुंदर ही है। ओशो भी प्रेम के लिए यही कहते हैं 'प्रेम स्टेट आफ माइंड है, स्टेट आफ कॉन्शसनेस है, चेतना की एक अवस्था है।' प्रेम में होना सबसे सजग होना होता है। सजग इसलिए कि जो कुछ भी आस पास घट रहा है, गुज़र रहा है, उस सब का आनंद लेना है। चेतना का अर्थ ही यही होता है कि आप हर क्षण आनंद में रहें। आनंद का अर्थ यह कि जो कुछ भी हो रहा है, उसी में आनंद को तलाश कर लें। आनंद के लिए आपको किसी पर्व, किसी त्योहार, किसी अवसर विशेष की आवश्यकता ही नहीं पड़े। हमारे आस पास हर क्षण ऐसा बहुत कुछ होता रहता है, जो हमें आनंद दे सकता है, मगर हम जड़ बने रहते हैं, चेतन हो ही नहीं पाते। ओशो इसी को चेतना की अवस्था कहते हैं कि जिसमें हम प्रेम में पड़े होते हैं, हर गुज़रते हुए क्षण और उसमें घटती

हुई घटनाओं के प्रेम में। कबीर भी बार-बार मन की आँखों का ज़िक्र करते हैं, वे आसमान से लगातार, अनवरत, बरसती हुई आनंद की वर्षा की बात करते हैं। हम इसे केवल दार्शनिक बात कह कर टाल देते हैं। मगर सच यही है कि जो कुछ सैम कीन कहते हैं, वही ओशो कहते हैं, और वही कबीर भी कहते हैं। सब कहते हैं कि दुनिया इतनी असुंदर नहीं है, यहाँ सुंदरता बिखरी पड़ी है, मगर इस सबको देखने के लिए प्रेम में होना पड़ेगा।

ओशो कहते हैं 'जब तक आप प्रेम को एक संबंध समझते रहेंगे, एक रिलेशनशिप, तब तक आप असली प्रेम को उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। वह बात ही गलत है। वह प्रेम की परिभाषा ही भ्रांति है। संबंध की भाषा में नहीं, किससे प्रेम नहीं ; मेरा प्रेमपूर्ण होना है। मेरा प्रेमपूर्ण होना अकारण, असंबंधित, चौबीस घंटे मेरा प्रेमपूर्ण होना है। किसी से बंधकर नहीं, किसी से जुड़कर नहीं, मेरा अपने आपमें प्रेमपूर्ण होना हैं। यह प्रेम मेरा स्वभाव, मेरी श्वास बने। श्वास आये, जाये, ऐसा मेरा प्रेम--चौबीस घंटे सोते, जागते, उठते हर हालत में। मेरा जीवन प्रेम की भाव-दशा, एक लविंग एटिटयूड, एक सुगंध, जैसे फूल से सुगंध गिरती है। प्रेम भी आपका स्वभाव बने--उठते, बैठते, सोते, जागते; अकेले में, भीड़ में, वह बरसता रहे फूल की सुगंध की तरह, दीये की रोशनी की तरह, तो प्रेम प्रार्थना बन जाता है, तो प्रेम प्रभु तक ले जाने का मार्ग बन जाता है, तो प्रेम जोड़ देता है, समस्त से, सबसे, अनंत से।' ओशो का यह दर्शन प्रेम को बहुत सुंदरता से व्यक्त करता है। प्रेम में होना जीवन की सबसे विशिष्ट अवस्था है। सबसे ज़रूरी है जीवन में प्रेम होना। वह जो पूरे चाँद की रात में झिर-झिर बरसता हुआ महसूस होता है, वह प्रेम होता है। वह जिसे महसूस करके समुद्र की लहरें भी ऊपर उठने लगती हैं, वह प्रेम है। वह सब, जो केवल महसूस ही किया जा सकता है। उसे पाँच इंद्रियों में से कोई भी अनुभूत नहीं करता, केवल मन महसूस करता है, वह प्रेम होता है। वह इंद्रियों से परे है, इसीलिए गुलज़ार उसके लिए कहते हैं –हाथ से छूके इसे रिश्तों का इल्ज़ाम न दो...। वह सुगंध जैसा है, रंगों जैसा है, रेशम जैसा है, शहद जैसा है, मीठे स्वर जैसा है, ये पाँचों गुण उसमें हैं, जो पाँचों इंद्रियों से महसूस किये जाते हैं, मगर फिर भी वह इंद्रियों से परे है। क्योंकि यह इंद्रियों से परे है, इसलिए आप जीवन भर प्रेम में रह सकते हैं, इसका जीवन या उम्र की किसी विशिष्ट अवस्था से कोई लेना-देना नहीं है। हमें जीवन भर प्रेम में रहना ही चाहिए। जब आप प्रेम में होंगे तभी आपको फूलों से लदे गुलमोहर, कोहरे के धुँधलके में मौन खड़े नीले पर्वत, टूट कर बरसते हुए बादल, वसंत और शरद की गुनगुनी रातों में खिला हुआ पूरा चाँद, जंगलों से गुज़रती हुई पगडंडियाँ, ये सब अच्छे लगेंगे। इन सबको देखने के लिए मन की जो आँखें चाहिए, वो आँखें प्रेम का स्पर्श पाकर ही खुलती हैं। प्रेम जब अपने मोरपंखिया स्पर्श से मन को छूता है, तो मन की पाँचों इंद्रियाँ जाग उठती हैं। बाँसुरी का स्वर जब कानों से सुना जाता है, तो वह केवल एक वाद्य यंत्र से निकला स्वर होता है, लेकिन जब मन उसे सुनता है, तो वह परा ध्वनि होती है। कृष्ण की बाँसुरी की परा ध्वनि। मगर मन तभी सुनेगा, जब प्रेम में होगा। कृष्ण की बाँसुरी को बिना प्रेम के सुना ही नहीं जा सकता। ओशो जिसे प्रभु कहते हैं, वह यही परा आनंद है, जो शरीर की इंद्रियों से महसूस ही नहीं किया जा सकता। जब मन प्रेम का स्पर्श पाता है, तो ओशो के मुताबिक हम चौबीस घंटे प्रेमपूर्ण होते हैं।

प्रेम में कभी कहा जाता था कि प्रेम में देह 'भी' हो सकती है, अब कहा जाता है कि प्रेम में देह 'ही' हो सकती है। प्रेम अब केवल और केवल देह पर केन्द्रित हो गया है। यदि हो गया है, तो क्या उसे हम प्रेम कहेंगे? क्या आप इसे भी प्रेम कहेंगे कि एक लड़का किसी लड़की से एकतरफ़ा प्रेम (....?) करता है और लड़की की तरफ़ से नकारात्मक उत्तर पाकर उस पर तेज़ाब डाल देता है। नहीं.... वह लड़का और किसी भी अवस्था में हो सकता है, लेकिन प्रेम में तो कभी नहीं हो सकता। यह निश्चित रूप से नफ़रत की एक दूसरी अवस्था है। वह लड़का केवल उस लड़की की देह को पाना चाहता था और असफल रहने पर उस देह को मिटा देना चाहता है, विकृत कर देना चाहता है। यदि उसके बाद भी आप कहेंगे कि वह लड़का एकतरफ़ा 'प्रेम' में था, तो माफ़ कीजिए आपकी बुद्धि और ज्ञान पर संदेह होगा। प्रसिद्ध दार्शनिक नीत्शे कहते हैं 'प्रेम हमेशा कुछ पागलपन की तरफ़ ले जाता है, लेकिन हर पागलपन में कुछ कारण अवश्य होता है।' प्रेम हमेशा रचनात्मक पागलपन की तरफ़ ले जाता है। यह पागलपन सकारण होता है। इस दुनिया को बहुत से पागलों की आवश्यकता है। दुनिया को पागलों की आवश्यकता हमेशा पड़ती है। प्रेम में डूब कर पागल हो चुके लोगों की। वे पागल जो इस दुनिया को बता सकें कि प्रेम किस प्रकार परिवर्तन लाता है। यह जो चित्रकार, कवि, शायर, गायक, संगीतकार, पर्वतारोही, फोटोग्राफ़र, रंगकर्मी होते हैं, यह सब पागल ही तो होते हैं। प्रेम में आकंठ डूबे हुए पागल। दुनिया को दूसरी तरह से देखते हुए पागल। दुनिया की सीधी और सुखकर राह को छोड़कर तिरछी और कठिन राह पर चलते हुए पागल। कुछ रच देने, कुछ सृजन कर देने के आनंद में डूबे हुए पागल। प्रेम एक यात्रा है, जो अनंत काल तक चलने वाली होती है। इसमें यात्री कभी नहीं थकता। जब सिर पर जुनून, पागलपन सवार होता है, तो पैर थकते ही नहीं हैं। इन प्रेमियों को बरसों पहले कबीर ने कहा 'जो घर फूँके आपना चले हमारे साथ' और ये उसी रास्ते पर निकल पड़े जिस पर कबीर गए। प्रेम का रास्ता। वह रास्ता जहाँ शरीर कष्ट पाता है, लेकिन मन आनंद में होता है। इस रास्ते पर चलने के लिए जुनून होना, पागलपन होना सबसे जरूरी है। प्रेम में जुनून नष्ट करने का नहीं होता, प्रेम में बचाने का, बनाने का जुनून होता है। जूनून जब नकारात्मक होता है, तो साइको किलर्स, बर्बर तानाशाहों, अत्याचारियों को पैदा करता है, और जब सकारात्मक होता है तो अमीर ख़ुसरो, कबीर, ग़ालिब, गांधी, ईसा, सुकरात, बुद्ध जैसे प्रेमियों को पैदा करता है, इंसानियत के प्रेमियों को। दुनिया हिटलर को भी पागल कहती है, सनकी कहती है और गांधी को भी, लेकिन हिटलर को घृणा के साथ पागल कहती है और गांधी को प्रेम के साथ। प्रेम तो वह होता है, जिसमें प्रेमी उस पर एक खरोंच भी बर्दाश्त नहीं कर सकता, जिससे वह प्रेम कर रहा है। इसीलिए तो कुछ पागल लोग, जो नदियों से, जंगलों से, पहाड़ों से प्रेम करते हैं, वो इनको बचाने के लिए पूरा जीवन लगा देते हैं। जुनून की तरह। यह प्रेम है। यहीं पर आकर प्रेम बहुत व्यापक अर्थ वाला शब्द हो जाता है। वह फैल जाता है। यह जो फैलाव है, इसी को लेकर जिगर मुरादाबादी ने कहा है –'इक लफ़्ज़-ए-मोहब्बत का अदना ये फ़साना है, सिमटे तो दिल-ए-आशिक़ फैले तो ज़माना है'। जब प्रेम फैलता है तो वह किसी एक शरीर को पाने की चाह के रूप में नहीं रहता। असल में प्रेम कुछ पाने के लिए नहीं होता, प्रेम तो बचाने के लिए होता है, मानवता को बचाने के लिए।

क्या आप प्रेम में हैं?

डॉ. विनय मिश्रा
प्रोफेसर बीएसएस कॉलेज, भोपाल
drvinaymishra@rediffmail.com

लेंटाइन डे बीत जाने के बाद भी हवा में प्रेम की अभिव्यक्तियाँ तैरती रहती हैं। कवियों की तुलना में प्रेम को परिभाषित करने में मनोचिकित्सक कुछ ख़ास नहीं कर पाते। प्रेम में डूबे कुछ जोड़ों के सर्वे के बाद कुछ मनोचिकित्सकों ने प्रेम की इस भावना को गहन आकर्षण या चाहत का नाम दिया। आप अपने अनुभव से संभवतः यह महसूस कर सकते हैं कि प्रेम केवल वयस्कों या विपरीत लिंगी लोगों तक ही सीमित नहीं होता। एक बच्चा अपने माता-पिता और दादा-दादी के प्रति भी प्रेम महसूस करता है। आप कुत्ते-बिल्ली जैसे अपने पालतू पशुओं को भी प्यार करते हैं। हालाँकि इस अध्याय में हम पशुओं नहीं, बल्कि हमउम्र के साथ गहरे प्रेम के बारे में बात करेंगे।

जुनूनी प्रेम किसी भी आयु में हो सकता है, पर युवाओं के बीच यह प्रश्न बड़ा लोकप्रिय होता है- "आप कैसे जानते हैं कि आप सचमुच प्रेम में हैं?" मनोचिकित्सक कई बार इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं, "यदि आपको यह पूछना पड़ रहा है, तो इसका अर्थ है कि आप प्रेम में नहीं हैं।" कुछ सुझाते हैं कि कोई भी रिश्ता प्रेम में तब बदलता है, जब दो दोस्तों को यह लगने लगता है कि वे योग्य सेक्स पार्टनर हैं। विद्यार्थियों और सामान्य लोगों पर बड़े स्तर पर किए गए अध्ययन यह बताते हैं कि दोस्ती कब प्रेम में बदल जाती है, इसका कोई सटीक विवरण नहीं मिलता। बल्कि 'प्रेम में पड़ने' की माप के कारक 'दोस्ती में बँधने' की माप के कारकों से बहुत अलग होते हैं।

जब लोगों से प्रेम और दोस्ती में पड़ने के उनके अनुभवों के बारे में पूछा गया, तो उनकी प्रतिक्रियाओं से पता चला कि प्रेम के पीछे कई वांछनीय पहलू शामिल होते हैं, जैसे- आकर्षक व्यक्तित्व और रूप-रंग। इसके अलावा एक-दूसरे के प्रति सराहना और आदर का भाव भी होता है। दोस्ती और प्रेम कई मायनों में एक समान होते हैं, मगर एक-दूसरे के प्रतिरूप नहीं होते। दो व्यक्तियों की आपसी निर्भरता शायद इन दोनों के बीच का एक समान सूत्र है।

जो लोग अपने आप को प्रेम में डूबा हुआ मानते हैं, उन पर किए गए अध्ययन कई समान लक्षणों की ओर इशारा करते हैं। रोमांटिक प्रेम में डूबा व्यक्ति अपने साथी के ख़्यालों में घिरा रहता है। उनमें एक-दूसरे को आदर्श मानने की प्रवृत्ति होती है। जब व्यक्ति एक-दूसरे के संपर्क में होते हैं, तो शारीरिक आकर्षण होता है और एक-दूसरे की ख़ुशहाली का भाव भी रहता है। प्रेम में स्थित व्यक्ति रिश्तों में कुछ दिक्कतें आने पर बहुत दुखी हो उठता है और अपने साथी के साथ ही रहना चाहता है। प्रेम में पड़े व्यक्ति के लिए यह जानना आवश्यक है कि उनकी भावनाएँ साझा हैं, अर्थात उसका साथी भी वही सब महसूस करता है जो वह कर रहा है और दोनों ही एक-दूसरे की उतनी ही परवाह करते हैं।

एक प्रश्न हमेशा हरेक के मन में उठता रहता है कि क्या मैं सचमुच प्रेम में हूँ? क्या प्रेम पर हुए अध्ययन इस महत्वपूर्ण प्रश्न का कोई उत्तर सुझाते हैं? शायद हाँ। आप नीचे दिए गए निर्देशों का पालन करके किसी व्यक्ति के बारे में अपने प्रेम का पता लगा सकते हैं।

किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें, जिसके बारे में आपको लगता हो कि आपको उससे प्रेम है। हर कथन के नीचे उस व्यक्ति का नाम लिखें और हर प्रश्न का उत्तर उसके सामने कोई अंक लिखते हुए दें। यदि आप कथन से पूरी तरह से सहमत हैं और उसे बिलकुल सही मानते हैं, तो उसके आगे 9 लिखें।

यदि असहमति है और आपको लगता है कि कथन पूरी तरह ग़लत है तो 1 लिखें। इस तरह आप अपने प्रेम को मापने के लिए 1 से 9 तक के अंकों का उपयोग कर सकते हैं।

1. मुझे लगता है मैं... को सारी बातें (गुप्त रखने वाली भी) बता सकती/सकता हूँ।
2. मैं... के लिए कुछ भी कर सकती/सकता हूँ।
3. यदि मैं... के साथ नहीं होती/होता हूँ, तो मैं दुखी रहती/रहता हूँ।
4. यदि मैं अकेलापन महसूस करता/करती हूँ, तो मेरे ज़ेहन में पहला ख़्याल... को देखने का आता है।
5. मेरी पहली चिंता... की भलाई है।
6. मैं... को किसी भी बात/ग़लती के लिए माफ़ कर सकता/सकती हूँ।
7. मैं... की भलाई के लिए अपने आप को ज़िम्मेदार मानता/मानती हूँ।
8. मैं... के साथ छुप-छुपकर होने से बहुत आनंद महसूस करती हूँ/ करता हूँ।
9. मेरा उसके बिना मेरे लिए जीना बहुत मुश्किल होगा।

सारे प्रश्नों के जवाब देने के बाद अपने अंकों का योग करें। गहन प्रेम के अंक-81, सबसे कम के अंक-9, यदि अंकों का योग 60-65 के बीच है तो संभवतः आप प्रेम में हैं। 70 से ऊपर के अंक बताते हैं कि प्रेम को लेकर आपकी भावनाएँ प्रबल और गहन हैं।
प्रेम के लिए शुभकामनाएँ।

गुरु का पीड़ा सहना प्रेम, शिष्य का रुदन सौंदर्य

प्रशांत पाण्डेय
सहा. प्राध्यापक, भोपाल
prashant_hos@rediffmail.com

प्रेम अपरिभाषित है, क्योंकि यह एक अनुभूति है। अनुभूतियाँ गहरे तक अनुभव तो की जा की जा सकती हैं परंतु उन्हें शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। सौंदर्य प्रेम का परिणाम है। यह भी अनुभूत भावना है और शब्दों में ठीक-ठीक वर्णित नहीं की जा सकती। आदिकाल से विद्वानों ने प्रेम और सौंदर्य को परिभाषित करने का प्रयास किया किंतु वे उनके संपूर्ण प्रयास नहीं रहे। बस अनुभूतियों को शब्दों में बांधने का प्रयास भर रहा। इसीलिए कोई सटीक परिभाषा न मिल सकी।

मनुष्य प्रायः अनुभूतियों को परिभाषित करने या दूसरों को बताने में असफल ही रहता है। वह अनुभूति का रसास्वादन करता है और परिणाम में उत्पन्न सौंदर्य को भोगता है।

हो न हो संसार में प्रेम का प्रथम प्रस्फुटन आदिपुरुष की इच्छा में मिलता है। जिसमें उसने इच्छा की, 'अहं बहुस्यामी' यानी मैं अनेक हो जाऊं। इसके बाद उसने संसार की रचना की, जो उस से उपजा सौंदर्य है। मैं एक से बढ़कर अनेक हो जाऊं। यह स्वयं से और उससे आगे बढ़कर दूसरों के प्रति प्रेम है। इस प्रेम के प्रकटीकरण हेतु संसार का निर्माण हुआ। यह इस प्रेम की सौंदर्यात्मक परिणति है। प्रेम एक उदात्त भावना है, जो विस्तारवादी सदैव सौंदर्य का सृजन करती है। मनुष्य ईश्वर का अंश है, क्योंकि उसने प्रेम के वशीभूत होकर हमें बनाया। यदि हम उसके प्रेम का प्रकटीकरण न होते तो कभी उसे पाना न चाहते। उसके प्रेम की अदृश्य डोर सदैव मनुष्य को अपनी ओर खींचती है। इसलिए ईसा, मीरा, तुकाराम आदि हो गए। उसके प्रेम को पाने के लिए लालायित रहना, भाव- विह्वल होकर आंसू बहाना, सदियों तक जन्म- जन्मांतर प्रत्तीक्षारत रहना उसका सौंदर्य है। सौंदर्य अपार एवं अपरिभाषेय है जो मनुष्य अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार समझता एवं अनुभव करता है। रामकृष्ण परमहंस का मां काली के लिए कैंसर की अपार पीड़ा सहन करना प्रेम है। स्वामी विवेकानंद का अपने गुरु की इस हालत पर रुदन करना सौंदर्य है। उनका कष्ट लेने की इच्छा करना सौंदर्य है। तरुण सन्यासी नरेंद्र का भूखे- प्यासे देश के लोगों की सेवा करना, क्षयरोगियों का उपचार करना, दर-दर भटकना प्रेम है।

एक प्रेम से भरे हृदय को सब कुछ सुंदर लगता है। उसे संसार में सौंदर्य खोजना नहीं पड़ता, बल्कि हर चीज पर पड़ने वाली उसकी प्रेम- दृष्टि उसे सौंदर्यबोध से भर देती है। फिर इसी भावना को अलग- अलग नाम दिया जाता है। जैसेः ममता, त्याग, देशभक्ति या सेवा। जो मन भावना है, वही सौंदर्य नहीं है, जो मन में नौ रसों की उत्पत्ति करे वह सौंदर्य है। अब यह मनुष्य पर है कि वह इन रसों में स्वयं को कैसे अभिव्यक्त करता है।

आरूणि का अपने गुरु के प्रति प्रेम उसकी आज्ञाकरिता में प्रकट होता है। गुरु धौम्य ने आज्ञा दी- 'जाओ वर्षा के पानी के बहाव में पूरे खेत की मेड़ को सुधार कर आओ।' आरुणि गया, चेष्टा करता रहा। सुबह से शाम हो गई सफल न हुआ। आखिर मेड़ को बंद करने के लिए खुद ही लेट गया। पूरी रात्रि बीत गई परंतु असफल होने के बोध ने उठने न दिया। सुबह ऋषि धौम्य ने आकर अपने शिष्य की यह चेष्टा देखी तो आनंद आंसू बहाने लगे। आरूणि की आज्ञाकारिता प्रेम है; ऋषि धौम्य का अश्रु बहाना उससे उपजा सौंदर्य है। सारा संसार प्रकाशित हो उठा। सूर्य के रहने तक की मिसाल बन गई। वह एक लापरवाह, आलसी और पढ़ाई से जी चुराने वाला बालक था। गुरुजी तन पर काठी बरसा- बरसाकर थक चुके थे। आखिर एक दिन अपने शिष्य के प्रति प्रेम, तन की बजाय मन पर वार करने के लिए उकसाने लगा। शिष्य आया तो सुनने को मिला- 'अब से तुम्हें मैं शिक्षा न दूंगा। तुम कभी भी पढ़ न सकोगे, क्योंकि तुम्हारे हाथ में विद्या की रेखा ही नहीं है।' पहली बार लड़के के मन पर चोट पड़ी। अपने गुरु से यह जानकर की हाथ में विद्या की रेखा कहां होती है, थोड़ी देर बाद लहूलुहान हथेली लेकर लौटा और बोला- 'लो गुरूवर! मैंने विद्या की रेखा कटार से बना ली है। अब आप मुझे पढ़ाओ, मैं विद्यवान बनूँगा।' गुरूजी लड़के का संकल्प देखकर अवाक रह गए। लड़के की लगन ने उसे साधारण से असाधारण संस्कृत व्याकरणविद पाणिनी में बदल दिया। गुरु का लड़के को ताड़ना देना प्रेम है, और लड़के का साधारण से असाधारण हो जाना उस से उपजा असीम सौंदर्य है।

संसार में समस्त भावनाओं का मूल एकमात्र प्रेम है। यही है प्रेम से सौंदर्य और सौंदर्य से प्रेम। प्रकृति का एक चिरस्थाई कारण- कार्य संबंध जो मनुष्य को ईश्वर से मिलाता है।

विनयश्री दुबे
इंदौर
manojsantbudhhi@gmail.com

प्रेम और सौंदर्य क्या आसपास रहते हैं या...

प्रेम और सौंदर्य दोनों ऐसे शब्द हैं, जो लगता है कि आसपास ही रहते हैं। मन इस तर्क को ही मानता है कि जहां पर सौंदर्य है, वहां पर प्रेम आ ही जाएगा। प्रेम को सौंदर्य का आश्रय इस तर्क में मिलने लगता है। प्रेम की जो व्याख्या रूमानी कवियों ने की है, वह भी कुछ इसी प्रकार से हैं, क्योंकि रूमानियत को समाज की खूबसूरती भी माना जाता रहा है, माना जाता है कि जिनमें रूमानियत हैं, उनमें सौंदर्य का बोध है, तभी तो वे रूमानी हो गए हैं।

इस प्रकार से जो भी चिंतन है, वह गूढ़तम धरातल पर कितना सही है, यह अलग विषय है, लेकिन अस्तित्व और व्यक्तित्व दोनों में ही प्रेम और सौंदर्य दोनों बेहद दूर हैं। दरअसल, सौंदर्य इंद्रियों पर आश्रित है, लेकिन प्रेम आपके आनंदमय कोष का भाग है, जो वहां से रिसता रहता है। सौंदर्य में आकर्षण है, तो उसे प्राप्त करने की इच्छा होती है, जबकि प्रेम में विरलता है, तो वह देने को तत्पर रहता है। जब हम सुंदरता देखते हैं तो उसमें एंद्रिक अनुभव ज्यादा आभासित होने लगते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आप सुंदरता के प्रति आसक्त हैं, तो इसका अर्थ हैं कि आपके शरीर में मौजूद पंच महाभूतों में से पृथ्वी तत्व और अग्नि तत्व काम कर रहे हैं और जल तत्व उसमें घी का काम कर रहा है। इसलिए सौंदर्य या सुंदरता के प्रति आसक्ति सिर चढ़कर बोलने लगती है। सौंदर्य क्या है?

यदि कवियों की माने तो वे प्रेमिका के लिए असंख्य पंक्तियों में उसका वर्णन कर देंगे, लेकिन क्या सौंदर्य विपरीत लिंगी आकर्षण मात्र है या और भी कुछ है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो देहध्यास होना या किसी की आंख, नाक, मुखमंडल देखकर कसीदे पढ़ना सौंदर्य नहीं है। फिर यदि वह इतना ही सुंदर होता तो सभी को सुंदर लगता। पर ऐसा नहीं होता है। क्योंकि अधिकांशतः ऐसा होता है कि जो आपको सुंदर लग रहा है, वह आपके भाई, पिता, मां, बहन, पत्नी, बेटी और बेटे को सुंदर नहीं लग रहा है। उन्हें कोई और ही सुंदर लगता है। इसका अर्थ है कि सुंदरता को लेकर मतभेद है, यानी किसी के लिए वह सुंदर है, तो किसी के लिए नहीं। तो फिर वह अलौकिक सौंदर्य नहीं कहा जा सकता। पारब्रह्म सौंदर्य नहीं माना जा सकता। वह अकाट्य सौंदर्य नहीं माना जा सकता। इसी को यदि सौंदर्य माना जाता है तो आध्यात्मिक दृष्टि से यह माया है और माया से इतर कुछ भी नहीं, जो भरमा रही है। ऐंद्रिक लिप्सा को और भड़काती जा रही है।

जहां तक प्रेम की बात है तो वह सौंदर्य पर निर्भर नहीं है। जो प्रेम सौंदर्य पर निर्भर है, वह निरी वासना है, जो प्रति पल बढ़ती है और प्रतिपल बदल भी जाती है। वासना हेय है या ग्राह्य है, यह उस माया में झुलसने पर ही प्रतीत होता है। वासना यानी जो शरीर में आसन लगाए बैठी है, लेकिन प्रेम बैठता नहीं है, वह बहने वाली धारा के समान है। वह मां के लिए अलग है, किसी आदिवासी बालक के लिए अलग प्रस्फुटित हो रहा है। प्रेम का भाव लिंग का मोहताज नहीं है, किसी को अपने दोस्त से इतना प्रेम है कि उसमें उसे खुदा दिखता हो, भले ही उक्त मित्र को इसका अनुभव न हो, लेकिन जो मित्रता को ईश्वर मान चुका है, तो फिर क्या बात है। कृष्ण और सुदामा को ही लें तो कृष्ण के लिए सुदामा ईश्वर ही थे, भले ही सुदामा उन्हें मानते हो या न मानते हो, लेकिन कृष्ण ने ही उनके पैर पखारे थे। यह मित्रता का ईश्वरीय प्रतीक है। अब न तो सुदामा इतने सुंदर थे और न ही कृष्ण के मोह का कारण थे, वह उनका प्रेम ही था, जो मित्र में ईश्वर के दर्शन कराता था। क्योंकि सुंदरता तो कृष्ण में ही इतनी है कि उनका नाम ही कृष से बना है, जिसका गूढ़तम अर्थ आकर्षण है। तो ये जरूर कह सकते हैं कि सौंदर्य आकर्षण सापेक्ष है, लेकिन प्रेम बहुत ही उच्च शिखर पर विराजित भाव है। प्रेम है, तो सबके प्रति है, यदि महज कुछ ही लोगों के प्रति है, तो वह संभवतः प्रेम नहीं है।

भगवान ने गीता में कहा है-

ममवांश जीव लोकेशु जीवभूत सनातन.....

यानी मेरा अंश प्रत्येक जीव में विद्यमान है, तो फिर कोई असुंदर कैसे हो सकता है। सुंदरता सभी में है। यहां दृष्टि अवश्य माया सापेक्ष है, क्योंकि दृष्टि में भेद के कारण किसी को वह सुंदर लगता है, किसी को असुंदर। प्रेम का ऐसा नहीं है, प्रेम का संबंध आत्मतत्व से है। प्रेम और सौंदर्य केवल दो ही जगह मिलते हैं और दोनों की अपनी दिव्यता भी चरम रहती है। ये दो स्थान हैं, मां और गुरु।

अंतस् में आनंद

अजय कुमार सिंह
(अज्जू जी प्रेममूर्ति)
शोध छात्र, दर्शनशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्व विद्यालय, इलाहाबाद
ajay.aryan27@gmail.com

कला, **'कं लीयते'** को यदि समझा जाय तो पूर्णतः समझ में नहीं आता और जो न समझ पाया वो कम से कम उस कला के प्रति एक सम्मान की दृष्टि तो रखता ही है। वह उस विशाल सुंदरता के लिए विभिन्न दृष्टियों को पनपने के लिए अवश्य छोड़ देता है। वह उसको अपनी वाणी व दृष्टि प्रदान करके उसे दूषित व सीमित नहीं करना चाहता। इसीलिए वह उस में गोते लगाना व लगाकर उसमें डूबे रहना ही पसंद करता है, और जो डूबा हुआ है उसे सतह पर आकर वाणी और दृष्टि प्रदान करने की फुरसत कहाँ है। वह तो तलहटी में बैठा हुआ है,जहां विशाल संपदाएं संचित हैं। उन्हें बाहर आने की फुरसत कहाँ। जो आनंद वहाँ अनुभूत हो रहा है, वह सतह पर संभव नहीं है। सतह तो कोलाहलयुक्त है। क्या मन, क्या वाणी, क्या कर्म? सब कुछ दूषित हो जाता है, सतह पर।

समुद्र विज्ञान जानता है कि सागर का तल कितना धनी व मनोरम है। आदमी अंतरिक्ष में शांति के लिए अपना घर बना रहा है। पृथ्वी को अशांत कर वह अब अंतरिक्ष की ओर बढ़ा है। लेकिन, इसे कैसे भूला जा सकता है कि अशांत मन वाला जहां भी जाएगा अशांति ही फैलाएगा। वह बाहर की ही दौड़ लगाएगा अंतरतम तो उसके लिए महज एक कल्पना, कोरी कल्पना ही लगती है।

जिस प्रकार सागर अपनी सतह की अपेक्षा अपने तल में गहनतम व शांत है, उसी प्रकार मानव का अंतरतम्-तल भी अत्यंत गहन व शांत स्वरूप वाला है। सतह कितना भी उच्छृंखल क्यों न हो, किन्तु अंतरतम उतना ही शांत है। बचपन को देखो, बड़ा ही उद्दंड होता है। बड़ा ही मतवाला व मोहक होता है। पता होना चाहिए कि, एक मां के लिए उसके आनंद की सीमा उस बच्चे की शरारतों की सीमा तक ही नहीं,अपितु उसके पार; जब बच्चा थक कर सो जाता है, तब मां उसके चेहरे पर झलकते बालपन को देखकर और भी भाव-विभोर हो जाती है। उसका हृदय ममत्व के गहनतम बिन्दु पर जा टिकता है। वह अंदर ही अंदर भाव विभोर हुए जाती हैं। जैसे-जैसे उसको निहारती जाती हैं, वैसे-वैसे वह उसके अंतरतम में प्रवेश करती जाती हैं।

अब है तो वह नवजात ही। बिल्कुल वैसे ही जैसे-कुम्हार ने मिट्टी से अभी कच्चा घड़ा बनाया हो और वह अभी सूखा न हो। वह तो अभी भी रिक्त है- अपने मूल तत्व से। उसमें, उसी मूल मिट्टी की ख़ुशबू आएगी जिस मिट्टी को उसने खोदा, उसे भिगोया, गूंथा और चाक पर चढ़ाया। कलई किया और फिर उसे घूमते हुए चाक पर निहारता है। स्वयं अपनी कला को

जब किसी नए जन्मे शिशु का अंतरतम और मां का अंतरतम तदाकार होते हैं तो यह मिलन ही प्रेम और आनंद की चरम सीमा होगी। अनुभूति ने ही इसको अनुभूत किया होगा। एक काया का अपने अंश में चिन्मय ही तो आनंद है।

वह उस पात्र में उड़ेल देना चाहता है। सब कुछ, अपना जो कुछ भी था; उसे देने का प्रयास करता है। हजारों कलाओं की प्रतिमा बनाकर वह उस चाक से उतार कर जमीन पर सजा देता है। परन्तु, है वह प्रतिमा अभी भी 'रिक्त' ही। बिल्कुल अपने मूल से च्युत नहीं है। उसमें अपने मूल की महक अभी भी विद्यमान है।

मूल की इस ख़ुशबू को हम सब भी पहचान सकते हैं। जाइए, किसी कुम्हार के घर, उसके चाकघर से सदैव उस मूल की ख़ुशबू ही मिलेगी और कुछ नहीं; जिसमें उसकी कलाकारी, अदाकारी व अदायगी सब कुछ दिख जाएगी आपको भी।

बिल्कुल ऐसे ही मां का वह नवजात शिशु भी है, जिसमें अभी उसका अंतरतम ही मुखरित है। उसमें मूल मिट्टी की भांति ही अंतरतम की ख़ुशबू व महक उड़ रही है। उसका अंतरतम प्रदीप्त हो रहा है। उसमें ऊपरी आवरण अभी क्षेपित नहीं हुआ है। वह अभी भी चाक पर घूम रहा है। मां उसको निहार रही है। उसमें विभिन्न अदायगिओं के माध्यम से, उसको कला पूर्ण बनाना चाह रही हैं। नवजात का अंतरतम और मां का अंतरतम दोनों मेल खा जाते हैं। और जब दो अंतरात्माओं का ऐसा मेल होता दिखाई देता है, तब प्रेम व आनंद की कौनसी सीमा होगी, यह तो सिर्फ स्वयं अनुभूति ही जानती है; वाणी या दृष्टि नहीं।

'आनंद' की यही तो कला है। 'कला',जो छिपी हुई है, जो स्वयं अतल में है, बिल्कुल शांत, भावपूर्ण चित्त-तन्मयता में। इसीलिए विश्व की कलाएं शांत व भावपूर्ण मुद्राओं में देखी गई हैं। विश्व की कोई भी कला निर्मूल नहीं है। उपजी वह उसी मूल से है। जगत की कला की तो बात ही न पूछो। वह तो 'सुंदरम्' की साक्षात् प्रतिमा है। देखने वालों को दृष्टिभ्रम है और अंतरतम् में झांकने वालों के लिए वह कला अनुभूत व साक्षात है।

दान से मुक्ति और उससे खुशी का दर्शन

मानस श्री डॉ.नरेन्द्र कुमार मेहता
मानसशिरोमणि एवं विद्यावाचस्पति
उज्जैन
drnarendrakmehta@gmail.com

सदा-सदा के लिए जन्म मरण के चक्र एवं बंधन से मुक्त होना, अर्थात भगवत प्राप्ति है। भारतीय धर्मशास्त्र के ग्रन्थों में इसके उपाय चारों युगों में वर्णित हैं। चारों युगों में सफल एवं सुखी मानव जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु धर्मशास्त्र के राजाषिमनुजी ने चारों ही युगों के भिन्न-भिन्न चार साधन बताए हैं :-

तपः परंकृत युगेत्रेतायांज्ञानमुच्यते।
द्वापरे यज्ञमेवाहुदनिमेकंककलौयुगे।।

सत्य युग में तप,त्रेता में ज्ञान, द्वापर में यज्ञ और कलियुग में मात्र दान ही मनुष्य के कल्याण का परम साधन है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने दान की महिमा का वर्णन बहुत ही अल्प शब्दों में अत्यन्त ही प्रभावशाली ढंग से बताया है:-

प्रगटचारि पद धर्म के कलि महुँ एकप्रधान।
जेन-केन बिधि दीन्हें दान करइकल्यान।।

दान से ही मनुष्य का कल्याण एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है किन्तु दान क्या किया जाएं? वास्तव में दान के अनेक रूप हैं। कुछ में तो प्रत्यक्ष दान ऐसे हैं, जिसमें द्रव्य (धन का) का विनियोग अर्थात् अर्जित धन का त्याग करना पड़ता है जैसे-अन्नदान, जलदान, वस्त्रदान, भूमिदान, गृहदान, स्वर्णदान, शैय्यादान, तुलादान, पिण्डदान, आरोग्यदान, गाय दान, जलदान आदि।
दान पर विचार करने पर कुछ दान ऐसे भी हैं, जिनके लिए हमें किसी भी प्रकार का धन व्यय नहीं करना पड़ता हैं। इस प्रकार दानों का भी कम महत्व नही हैं, जैसे-मधुर वचनों का दान, प्रेम का दान, क्योंकि संसार में सबके प्रति प्रेम रखना ही एक प्रकार से परमात्मा के प्रति प्रेम है। आश्वासन का दान, निराश व्यक्ति के जीवन में नकारात्मकता से सकारात्मकता भर देता है। आजीविका दान व्यक्ति के परिवार के पालन-पोषण की व्यवस्था करता है। छाया दान में वृक्षारोपण कर छायादान ही नहीं, अपितु पर्यावरण की रक्षा का दान भी निर्मित हो जाता है। श्रमदान एवं भूदान के महत्व का प्रतिपादन श्रद्धेय विनोबाजी की शिक्षा से भरा है। हमारे आस-पास के वृद्ध या अशक्त व्यक्ति के छोटे-मोटे कार्य एवं बाजार से सामान लाकर कर सकते हैं जो कि दान की ही श्रेणी में आते है। दानदाता का हृदय पवित्र हो तो उसकी खुशी दोगुनी हो जाती है।
आधुनिक काल में शरीर के अंगों के दान का महत्व कम नहीं है। मानव शरीर 'शरीरंव्याधि मन्दिरम्' हैं। आज मानव जीवन कुछ असाध्य रोगों से ग्रस्त है। अतः रक्तदान, गुर्दा (किडनी) दान, नेत्रदान, यकृत (लीवर) दान कर इनका प्रत्यारोपण हो रहा है। कई लोग अपने जीवनकाल में चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थियों को शरीर रचना ज्ञान के लिए मृत्यु पश्चात शरीर दान वसीयत कर दे जाते हैं। उनके शरीर से लिए गए हृदय, मज्जा, एवं अस्थि भी दूसरे के जीवन को बचाने में काम आ रहे हैं।
इन दानों के अतिरिक्त समयदान, क्षमादान, सम्मानदान, विद्यादान, पुण्यदान, जपदान, भक्तिदान, आशीषदान, आश्रयदान, गाय का दान, वस्त्रदान, कन्यादान, अभयदान, आदि है। संक्षिप्त में हम शंकरजी के समान तो दानी नहीं बन सकते हैं किन्तु हम कम से कम हरीशचंद्र, राजा बालि, कर्ण, युधिष्ठिर, एवं दधीची के दान स्मरण कर प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए अथर्व वेद में बताया है-
शतहस्तसमाहरसहस्त्रहस्त सं किर।3/24/5
सैकड़ों हाथों से इकटठा करो और हजारों हाथों से बाँटों।।

एकात्मता का अवबोध प्रेम

विम्मी मनोज

प्रभाकर पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र
साँची बौद्ध. भारतीय ज्ञान अध्ययन
विश्वविद्यालय बारला, रायसेन
prabhakar.pandey@subis.edu.in

भाषा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। किन्तु जब बात भावों की होती है, यह माध्यम भी तुच्छ साबित होने लगता है। शोक से शांति की तरफ जानेवाली भावयात्रा ही जीवन के विविध आयामों को स्पंदित करते हुए प्रेम के रूप में अपने उत्कर्ष को प्राप्त करती है। स्पंदित भाव प्रवाह के उत्कर्ष होने के कारण ही प्रेम को शब्दों में व्यक्त करना अत्यंत कठिन कार्य हो जाता है। यह मानव स्वभाव की विचित्रता ही है कि वह असाध्य को साध्य बनाने में सदैव उत्सुक रहा है। प्रेम इससे अछूता नहीं है। बुद्धिजीवियों ने जिन अमूर्त तत्वों को व्यक्त करने में अपनी मेधा का सर्वाधिक उपयोग किया है, प्रेम भी उनमें से एक है। किन्तु तथ्य से सत्य को पहचानने और उसे बताने की ये कवायद प्रेम के स्वरूप को बताने की एक सीमित चेष्टा बन कर रह गई, जो अब तक जारी है। यह एक प्रयास है जिसमें एक आस है, उस अव्यक्त को व्यक्त करने का। व्यक्त और अव्यक्त की ये ऊहापोह ही प्रेम को अलौकिक और दिव्य बनाती है।

बुद्धि विलास से इतर काव्य जगत ने प्रेम को ज्यादा करीब से छुआ है। काव्य रचना में आनन्द की पूर्णावस्था के प्रवर्तक भाव के रूप में प्रेम को दर्शाया गया है। दीप्ति, माधुर्य और कोमलता जैसे आलम्बन और उद्दीपन प्रेम को सहेजते हुए प्रतीत होते हैं। सुख, दुख और मोह को समेटे प्रेमानन्द, शुद्धानन्द का ही विस्तार है। राग से उपजे प्रिय विरह में निकलने वाली अश्रुधारा और वेदना भी सुख देती प्रतीत होती है। अगर देखा जाए तो प्रेम राग का ही पूर्ण विकसित रूप है। राग और द्वेष से युक्त मानव हृदय किसी व्यक्ति विशेष की तरफ जब उन्मुख होता है, तो यह वासना रूप आसक्ति का लक्षण है। इस प्रयोजनयुक्त वासनात्मक स्थिति से प्रयोजनमुक्त भावनात्मक स्थिति को प्राप्त करना प्रेम है। प्रेम का प्रकाश हृदय में फैलते ही राग नष्ट होने लगता है। प्रेम का स्वाद, रस और अनुभव मिलते ही मनुष्य का हृदय अलौकिक सौंदर्य से भर उठता है, उसकी आत्मा तृप्त हो जाती है, तब उसमें न कोई वासनाएँ रहती हैं और न कामनाएँ। ऐसे निर्मुक्त हृदय में विकारों के रहने की संभावना समाप्त हो जाती हैं। मनुष्य निर्विकार एवं निष्कंठ होकर आनन्द रस से सराबोर होने लगता है। आनन्द के इस अद्भुत पल में जो शब्द निकलते हैं वो प्रार्थना बन जाती है, भाव विभोरता ध्यान की गहरी अवस्था बन जाती है, ऐसे में कवि के ये शब्द बड़े भले मालूम पड़ते हैं -**'साँसों की माला पे सिमरूं मैं पी का नाम'**

प्रेम के इस साहित्यिक विमर्श से परे उसके अलौकिकता पर भी पर्याप्त विचार किया गया है। देखा जाए तो प्रेम का स्वरूप उपनिषदीय कवियों द्वारा वर्णित ब्रह्म के स्वरूप से काफी मिलता-जुलता है। जिस प्रकार उपनिषदीय कवि नेति नेति कहते-कहते ब्रह्म के स्वरूप के विषय में बहुत कुछ कह गये। ऐसा ही कुछ प्रेम के सन्दर्भ में हुआ है। प्रेम कि अव्यक्तता को व्यक्त करते-करते हम कब इसकी मूर्ति गढ़ देते हैं पता ही नहीं चलता। शायद यही कारण है कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने प्रेम को अवबोध कहा है, जिसमें अपने प्रिय के साथ एक होकर ही उस परम अनुभव को जाना जा सकता है। इस एकात्मता में अपने स्व को मिटाकर अपने प्रियतम से एक्य होने की प्रबल चाहत होती है। प्रेम की इसी एकात्मकता को कबीर ने परम ज्ञान कहा है। कबीर के लिए प्रेम ही ज्ञान है और जिसने प्रेम को नहीं जाना, वह चाहे जितने धर्मशास्त्रों को पढ़ लें, वह अज्ञानी ही रहेगा।

प्रेम की इस दिव्य यात्रा में 'स्व' को मिटाना कोई दुखद अनुभव नहीं है। अगर ध्यान से देखें तो इसमें अस्तित्व के खतरे जैसी कोई बात ही नहीं है। ये इस प्रक्रिया का चमत्कार है, जहाँ प्रत्यक्ष रूप से तो हम स्वयं को मिटाते हैं, किन्तु परोक्ष रूप से प्रेम हमारे स्व को विरल कर समष्टि के साथ एकाकार करने का माध्यम बनता है। इस प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए गुरुदेव रवीन्द्रनाथ कहते हैं 'जब हम प्रेम की व्याप्तता में अन्य को समेटते हैं, तो वस्तुतः हम अन्य में अपने को देखते हैं और इस प्रकार अपने आत्म को और अधिक व्यापक बनाते हैं।' स्व के विस्तार से जो अनुभूति होती है, उसमें एक प्रकार का रस है, जिसमें डूबकर आनन्द मिलता है। इस अनन्त सागर में डूबा हुआ स्व एकात्मता को उपलब्ध होता है। एकात्मता का यह बोध ही है प्रेम का अवबोध।

सौंदर्यजन्य शाश्वत प्रेम

डॉ. अतुला भास्कर
-20 जोशी कालोनी
द माल, अमृतसर - 143001

सौंदर्य भावना मनुष्य में नैसर्गिक है। इसका जन्म मनुष्य के जन्म के साथ ही जुड़ा हुआ है। अनादिकाल से सौंदर्योपासना चलती आ रही है, अनवरत चलती रही है। सौंदर्य देखने के दृष्टिकोणों में परिवर्तन होता रहा है। परिवर्तित दृष्टिकोणों के कारण सौंदर्य के प्रतिमान बदलते रहे हैं। हीगल ने सौंदर्य का स्वरुप 'आइडिया' मे माना है। इससे पूर्व कांट ने सौंदर्य को वस्तु के मूल में उसकी 'बहुज्ञ मूल्यवत्ता' के रुप में स्वीकार किया था। टॉलस्टाय ने सौंदर्य का प्रतिमान दर्शक के दृष्टिकोण में माना है। सेंट विसेंट मिले के अनुसार सुंदरता वही है, जो आपको आनंद दे। भारतीय मनीषा का दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ है। साथ ही 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रुपरमणीयताया' (शिशुपाल वध चतुर्थ सर्ग-माघकृत) अर्थात् जो रूप प्रतिपल नए भाव के साथ प्रस्तुत है वही सौंदर्य है। इसे ही हिंदी के प्रसिद्ध महाकवि बिहारी ने इस प्रकार कहा है-

लिखन बैठि जाकी छवी गहि गहि गरब गरूर।
भय न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।।

इससे स्पष्ट है कि सौंदर्य को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। यह वह मिठाई नहीं जिसे खाया और तृप्त हो गए। यह तो ऐसा भाव है जो आपकी नवीनता के कारण कुछ और, कुछ और पाने की ललक के साथ जोड़े रखता है। सौंदर्य शब्द का मूल सुंदर में है। सुंदर का अर्थ अनेक प्रकार से स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है- 'सु' का अर्थ है- सुष्ठु अथवा भली प्रकार उन्द् अर्थात् आर्द्र करना, 'नन्दयति' प्रसन्नता अच्छी प्रकार प्रसन्न करने वाला। 'सुन्दराति इति सुन्दरम्' अर्थात् कर्तनी जैसी तीक्ष्णता करने वाला तत्व। इस प्रकार सौंदर्य अथवा सुन्दर तत्व में मोद तत्त्व की अनिवार्यता है तथा उसमें तीक्ष्णता के साथ गंभीरता भी होनी चाहिए।

सौंदर्य उच्छृंखल नहीं अनुरागमय होता है। इसमें आन्तरिक और बाह्य दोनों पक्ष विद्यमान है। विचार शरीर पर अपना शुभ अशुभ-प्रभाव छोड़ते हैं। जो व्यक्ति जिन विचारों को आंदोलित करता है, उसका व्यक्तित्व वैसा ही निर्मित होता है। यदि धन, काम और यश को साध लें तो जीवन में अभिनव आनंद और शांति का जन्म होता है। यह बहिरंग साधना है, जबकि अंतरंग साधना और भी गहरी होती है। इसमें शरीर, विचार और भाव को हम शून्य कर लेते हैं। जो व्यक्ति सौंदर्य का विचार करेगा, जिस व्यक्ति की चेतना निरंतर सौंदर्य के निकट चिंतन मनन करेगी उसके व्यक्तित्व में प्रेम का जन्म हो जाना बिलकुल स्वाभाविक है। सुंदरता की तलाश में चाहे हम सारी दुनिया का चक्कर लगा आएं अगर वह हमारे अंदर नहीं तो कही नहीं। जयशंकर प्रसाद रचित स्कन्दगुप्त नाटक में देवसेना प्रेम की परिभाषा सूत्रात्मक ढंग से प्रस्तुत करती हैं-प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी-हरी पत्ती के मिलने में एक लय है। पक्षियों को देखो उनकी चहचह, कलकल, छलछल में, रागिनी है। जहाँ हमारी सुंदर कल्पना आदर्श का नीड़ बनाकर विश्राम करती है, वह स्वर्ग है और वह इसी लोक में मिलता है। सौंदर्य दृष्टि व्यवहार दृष्टि से सर्वथा भिन्न होती है। अर्थात् वह निष्प्रयोजन और निष्काम, हिताहित अथवा स्वार्थ की भावना से मुक्त होती है। वह व्यक्ति संसर्गों से असम्पृक्त और सार्वभौम होती है। रागद्वेष से निर्लिप्त अर्थात् तटस्थ होती है। सौंदर्याभिव्यक्ति के अनेकानेक माध्यम हो सकते हैं। नृत्य, संगीत, चित्र, मूर्ति, काव्य आदि कलाओं के मूल भाव में सौंदर्य भाव है। काव्य का तो प्रयोजन ही सरसता के साथ मानव मन पर प्रभाव डालना है। काव्य और सौंदर्य एक दूसरे के पूरक हैं। काव्य सौंदर्य भाव की शाब्दिक अभिव्यक्ति है।

भर्तृहरि के 'श्रृंगार शतक' में सौंदर्यानुभूति की मूलभूत भावना काम और इसकी चर्वण से उत्पन्न रस का निरुपण है-वाचामगोचर चरित्र विचित्राय तस्मै नमो भगवते मकरध्वजाय' काम को सौंदर्य के प्राण के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए भर्तृहरि को वैदिक साहित्य से प्रेरणा मिली होगी। सौंदर्य के किसी ऐसे रूप की कल्पना करना संभव नहीं है, जिसमें प्रच्छन्न अथवा प्रकट, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से मानव भावना का संस्पर्श न हो। 'न भावहीनो ऽसित रसो, न भावो रसवर्जितः' (भरत) - अर्थात् न भाव के बिना रस की और न रस के बिना भाव की सृष्टि होती है। रस शास्त्रीय दृष्टि से श्रृंगार का मूल प्रेरक 'रतिभाव' या 'प्रणय' है। प्रेम को जीवन का सर्वोपरि तत्व माना गया है। उदात्त और उच्च दृष्टि को अपनाते हुए प्रणय सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक आदि सभी बाधाओं, सीमाओं व कुंठाओं से मुक्त होकर सहज स्वाभाविक एवं पूर्ण रूप से विकसित होता है। प्रणय का आरम्भ प्रायः सौंदर्यजन्य आकर्षण की सहज प्रेरणा से होता है तथा उसमें परिस्थितियों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया से उत्तरोत्तर गंभीरता का समावेश होता है। स्त्री हो या पुरुष - यदि किसी का किसी में सच्चा प्रेम है, उसमें काम गंध का जरा भी दोष नहीं है, अपितु प्रियतम के सुख के लिए व्याकुलता पूर्ण प्रयास है। वही पवित्र जीवन है। पवित्र भावना, पवित्र विचार, पवित्र वाणी और पवित्र शरीर है, जिसमें आत्मसुख की इच्छा सर्वथा प्रियतम के सुख की इच्छा में परिणत हो जाती है। भावना, विचार, वाणी और शरीर सभी में स्वाभाविक स्व सुख का बलिदान करके सतत् प्रियतम को सुखी करने के अखंड प्रयत्न में लग जाते हैं। ऐसे पवित्र भाव, विचार, वाक् और शरीर वाला प्रेमी ही यथार्थ प्रेमी है। इस प्रेम में जगत के भोगों से स्वाभाविक ही वैराग्य है-

दृष्टि का जो पेय है, वह रक्त का भोजन नहीं है।
रूप की आराधना का मार्ग आलिंगन नहीं है।
उर्वशी-रामधारी सिंह दिनकर

प्रेम ऐसा पदार्थ है कि यह जिसे प्राप्त होता है, उसके लिए समस्त विश्व ही प्रियतममय बन जाता है। विश्व नहीं रहता प्रियतम ही रह जाता है। 'जित देखूं तित श्याम' उसके नेत्र में विश्व के चित्र नहीं आते। यदि कभी किसी भी प्रेरणा से उसे जगत की स्मृति होती है, तो दूसरी ही क्षण उसे अपने प्रियतम में विश्व का भास होता है। श्री कृष्ण कहते हैं-

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि ए च मे न प्रणश्यति।। श्रीमद् भगवत गीता 6/30

अर्थात् जो सर्वत्र मुझको देखता है और सबको मुझमें देखता है. उसके लिए न तो मैं अदृश्य होता हूं और न ही वह मेरे लिए अदृश्य होता है यही रहस्य है-

'आशिकी से मिलेगा ए जाहिद/बंदगी से खुदा नहीं मिलता- दाग नवाब मिर्जा

ये परम रागमय विरागी पुरुष बड़े ही विलक्षण होते हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु की जीवन लीला के अन्तिम वर्ष इसी विलक्षण विरागमय राग का प्रत्यक्ष कराने वाले थे। वे धन्य हैं, जो इस प्रकार के प्रेम की कल्पना भी नहीं कर पाते हैं। प्रेम को अनाम ही रहने दे-इसे नाम देने से सीमा बंध जाती है। प्रेम निश्चित ही दीवाना है 'ए री मैं तो प्रेम दीवानी' प्रेम की रसधार का पान मानो अमृत का पान है, जिसे पीते ही परमानंद का अनुभव होता है-

मोहि मोहि मोहन का मन भयो राधिकामय।
राधा मन मोहि मोहि मोहन मई भई।। -देव

धन, संपदा,पद,प्रतिष्ठा एकत्रित करने के फेर में जीवन की असली संपदा से वंचित रह जाते हैं। प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी शाश्वत नहीं हैं। शेष सब क्षण भंगुर है। प्रेम एक अनूठा मार्ग है-जीने का, जानने का। शास्त्र ज्ञान और शब्द ज्ञान द्वारा बस प्रतीत होती है और जानने में कुछ आता नहीं। पोथियों के शब्द सुन्दर और प्यारे लगते हैं। दोहराने पर अच्छा लगता है। लेकिन प्रेम बुद्धि से नहीं जाना जाता, जाना जाता है हृदय से। तर्क से नहीं, प्रीति में रंगने पर संसार की नज़रों में उपहास का पात्र बन जाते हैं। स्वाभवतः ऐसा व्यक्ति वो काम करने लगता है, जो व्यावहारिक तौर पर गलत है और समाज के विरुद्ध है। प्रेम संसार के समझ में आता ही नहीं। संसार की समझ में घृणा आती हैं, प्रेम नहीं। जो बाहर है, संसार उसे समझ लेता है, लेकिन जो भीतर है और वास्तविक है, जो प्राणों का प्राण है, वह संसार की पकड़ से छूट जाता हैं दृश्य तो स्थूल है और अदृश्य सूक्ष्म-यही है आधार। संसार दृश्य पर उलझा रहता है, जबकि प्रेम के नेत्र अदृश्य को देखने लगते हैं। प्रेम अन्तस की दृष्टि को खोल देता है। यही कारण है प्रेम मर्यादामुक्त है। प्रेम प्रतिदान नहीं मांगता। वह स्वयं को मिटाकर दूसरे को बचाना चाहता है। प्रेम वाणी का विषय नहीं हैं-

इस अर्पण में कुछ और नहीं केवल उत्सर्ग छलकता है,
मैं दे दूं और न फिर कुछ लूं, इतना ही सरल झलकता है-
कामायनी - जयशंकर प्रसाद

प्रेम जितना यथार्थ और शुद्ध होता है उतना ही उसमें त्याग अधिक होता है। इसमें चालाकी और कपटता की गुंजाइश नहीं होती- **'अति सूधो सनेह को मार्ग है जहाँ नेकू सयानप बांक नहीं'-धनानंद**। वस्तुतः त्याग ही प्रेम का आधार है। प्रेम में अपने शुद्ध स्वार्थ को, अपने व्यक्तिगत लाभ को और अपने को सर्वथा भूल जाना पड़ता है। प्रेम का प्रादुर्भाव होने पर ये स्वयं ही विस्मृत हो जाते हैं। प्रेम में प्रेमास्पद से कुछ भी पाने की आशा नहीं रहती, वहाँ तो बस देना ही देना होता है- देह-प्राण-मन-धन-ऐश्वर्य-समृद्धिः जो चाहे सो ले लो देने में ही परम सुख, परम संतोष मिलता है प्रेमी को। आत्मविसर्जन ही प्रेम का मूल मंत्र है। प्रेमास्पद का हित और सुख ही प्रेमी का परम सुख है। इस प्रकार की स्थिति बातों से तो हो नहीं सकती। इसके लिए त्याग चाहिए। प्रेम का पता तो तब लगेगा जब उसकी प्रत्येक क्रिया से आपको त्याग की अनुभूति होगी। प्रेमास्पद भले ही उसे ना चाहे। बदले में चाहे प्रेम न करें, तिरस्कार करें, ठुकरा दें, पर प्रेमी का इन सब बातों की ओर देखने का चित्त ही नहीं होता। प्रेम का व्याख्यान नहीं होता। प्रेम का तो आचरण होता है और वह किया नहीं जाता-होता है- बरबस होता है और हो जाता है-

प्रेम मनुज का इतर मनुज से करता ईश्वर से संधान।
वही प्रेम है स्वयं सत्य जो मानव को करता भगवान।।

बीईंग माईंडफुल

प्रेम में पागल होना असल में करैक्ट हो जाना है। सुकरात, ईसा मसीह, बुद्ध, गांधी, यह सब प्रेम में पागल थे। दुनिया कहती थी कि ये दुनिया को उल्टी तरह से चलाने की कोशिश कर रहे हैं, पागल हैं। जबकि हक़ीक़त यह थी कि ये लोग दुनिया को उस सीधे रास्ते पर ले जाने की कोशिश कर रहे थे, जो सही था। जिस पर चलना लोग भूल चुके थे। ये पूरी दुनिया के प्रेम में पागल थे। इनके पागलपन की मजनूं के पागलपन से तुलना ही नहीं की जा सकती। मजनूं का प्रेम इब्तिदा थी और इन लोगों का प्रेम इंतिहा है। मजनूं का प्रेम व्यष्टि है जबकि इन लोगों का प्रेम समष्टि है। ये सब पागल प्रेमी दुनिया को हिंसा से दूर ले जाने की कोशिश करते रहे। क्योंकि हिंसा के समाप्त हुए बिना प्रेम उपजेगा ही नहीं। यह अलग बात है कि अंततः इन पागल प्रेमियों को हिंसा ने ही समाप्त कर दिया। हिंसा हर युग में प्रेम को समाप्त करती रही है और करती रहेगी। इसलिए, क्योंकि प्रेम के रहते उसका विस्तार, उसका फैलाव एकदम असंभव है। मगर यह भी सच है कि हर युग में प्रेम को फैलाने के लिए कुछ जुनूनी, कुछ पागल आते रहेंगे। और कहते रहेंगे –'इश्क़ ने 'ग़ालिब' निकम्मा कर दिया, वर्ना हम भी आदमी थे काम के'। यह जो निकम्मा हो जाना है, यही तो प्रेम है, दुनिया जिसे निकम्मा कहती है, प्रेम के लिये वही काम का आदमी होता है।

भगत सिंह ने लिखा था 'प्रेम हमें अंदर से सुंदर बनाता है'। यह अंदर से सुंदर बनाने की जो प्रक्रिया है, यही प्रेम का सबसे मज़बूत पक्ष है। अज्ञेय ने कहा था 'दुख इंसान को माँजता है' मुझे लगता है कि प्रेम भी यही करता है। फिल्म अनाड़ी का मशहूर गीत 'किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार' में राजकपूर के पैरों के नीचे एक ग्रास हॉपर आ जाता है, राजकपूर का पैर हवा में ही रुक जाता है, वो एक पत्ते पर उसे उठाते हैं और ले जाकर झाड़ियों में छोड़ देते हैं। उस दृश्य को फिर से देखिये और देखिये राजकपूर के चेहरे के भावों को। ऐसा लगता है कि कोई आकाश से उतरा हुआ फ़रिश्ता हो। यह समष्टि प्रेम में होने का परिणाम है। प्रेम ने माँज कर सुंदर बना दिया है। वही बात जो ऊपर ओशो ने कही 'प्रेम जोड़ देता है समस्त से, सबसे, अनंत से।' यह समस्त से जुड़ाव ही है, जो एक कमज़ोर से ग्रास हॉपर को पैरों तले कुचलने से रोक देता है। प्रेम सबको बचाना चाहता है। जो प्रेमी होता है, वो किसी एक के प्रेम में नहीं होता, वो सबके प्रेम में होता है। एक से प्रेम से लेकर सब से प्रेम तक की यात्रा को ही अंदर से सुंदर बनना कहते हैं। प्रेम हर समय बचाने की जद्दो जहद में लगा होता है। मदर टेरेसा या गांधी तक की यात्रा करते-करते प्रेम सारी दुनिया के दुख में हमें दुखी करने लगता है। यही सुंदर होना है। तो फिर असुंदर कौन है ? असुंदर वह है जो दूसरों के सुख में दुखी होता है और दुख में सुखी। सुंदर वह है जो दूसरों के सुख में सुखी और दुख में दुखी होता है। प्रेम हमारे मन को साफ़ करने के लिए ग्लेशियरों से पिघलता हुआ नीला पानी लाता है, हवा में फैले हुए परागकण लाता है, ऊँचे पहाड़ों के शिखरों से चिनार, देवदार के सूखे पत्ते एकत्र करके लाता है, और पूरे मनोयोग से हमें सुंदर बनाता है। इतना सुंदर कि सारी दुनिया हमें सुंदर लगने लगती है। प्रेम की पाठशाला में, मोहब्बत के मदरसे में शिक्षित होने वाला व्यक्ति ज्ञानी नहीं होता, विद्वान नहीं होता, वह सुंदर होता है, बस और बस सुंदर होता है। अंदर से सुंदर। जब हम अंदर से सुंदर होते हैं, तो हमें हर चीज़ सुंदर लगती है, हम सजीव-निर्जीव, हर चीज़ के साथ प्रेम में होते हैं। हमें झरने, नदी, पहाड़, तालाब, सागर, जंगल सब अपने लगने लगते हैं। जो अंदर से सुंदर हो जाएगा, वही इन्सान को केवल इन्सान के रूप में देखेगा, न कि धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों के आधार पर। और अंदर से सुंदर होने के लिए आपको प्रेम में होना ही पड़ेगा। जब तक आप इन्सानों को धर्मों और जातियों के नज़रिये से देख रहे हैं, तब तक मान कर चलिए कि आप और किसी भी अवस्था में भले हों, पर कम से प्रेम में तो नहीं ही हैं। मन में जब गाँठ लगी हो तो प्रेम का रेशम वहाँ हो ही नहीं सकता। रहीम ने कहा है –'जहाँ गाँठ तहं रस नहीं यही प्रीति में हानि'। गन्ने में पूरे तने में मीठा रस होता है, लेकिन ठीक उस जगह पर नहीं होता है, जहाँ गाँठ होती है। यह जो क्रूरता की गाँठ है, यह आपके अंदर प्रेम के रस को सुखा कर समाप्त कर देगी। प्रेम का रस और क्रूरता की गाँठ एक साथ किसी भी सूरत में नहीं रह सकते, 'प्रेम गली अति साँकरी, जा में दो न समाय', वाला मामला है। आप एक साथ प्रेमी और क्रूर दोनों नहीं हो सकते, हो ही नहीं सकते। आप एक साथ प्रेमी और हिंसक दोनों हो ही नहीं सकते।

तो फिर एक लड़का और एक लड़की जिस आकर्षण से बँधे हैं, उसे क्या प्रेम नहीं कहेंगे? क्यों नहीं कहेंगे, कहेंगे, लेकिन यह भी देखना पड़ेगा कि यह प्रेम बस उसी के साथ है, या उसके अलावा भी है। यह यात्रा केवल शरीर तक की है या इससे पार अनंत के विस्तार तक की है। शरीर बहुत जल्दी थक जाने वाला मुसाफ़िर है, जबकि मन तो अनथक यात्री है। जब सूफ़ी संत ख़ुदा के और मीरा कृष्ण के प्रेम में होती हैं, तो यह प्रेम की अनंत अवस्था होती है। किसी एक से विस्तार पाते-पाते उस तक पहुँच जाना जो अनंत है, जिसको किसी ने अब तक देखा भी नहीं है। ओशो इसी को कुछ यूँ कहते हैं 'जहाँ सीमा है, वहाँ अंत है, वहाँ मृत्यु है। जहाँ सीमा नहीं है, वह अनंत है, वहां अमृत है। क्योंकि जहाँ सीमा नहीं, वहाँ अंत नहीं, वहाँ मृत्यु नहीं।' हम किसी एक के प्रेम में हैं, और वहाँ से हम यदि आगे नहीं बढ़ रहे हैं, तो हम कदमताल ही करते रहेंगे, आगे नहीं बढ़ पाएँगे। प्रेम तो विस्तार का नाम है। प्रेम क्षितिजों के उस पार निहारिकाओं, आकाशगंगाओं तक फैलना चाहता है। उन सारी सूनी अँधेरी ख़लाओं की यात्रा करना चाहता है, जहाँ आज तक कोई यात्री नहीं पहुँचा है। वह अंतरिक्ष में गूँजते नाद की तरह हमेशा गूँजता रहना चाहता है। प्रेम निरंतरता चाहता है, जो निरंतर नहीं है, वो प्रेम नहीं है। प्रेम आता है तो फिर फैलता ही जाता है, वह रुकता नहीं है, मीरा कहती हैं न –'अब तो बेली फैल गई आनंद फल होई'। एक लड़का और एक लड़की प्रेम में हैं, तो लड़के को कहना ही होगा कि 'चलो दिलदार चलो, चाँद के पार चलो' और लड़की को उत्तर देना ही होगा 'हम हैं तैयार चलो'। यह जो चाँद के पार की यात्रा है, यही तो प्रेम है। चाँद के पार जाना अर्थात् उन दिशाओं में जाना, जहाँ पदचापों की आहटें अभी नहीं गूँजी हैं, जहाँ अभी किसी यात्री ने आकर अपना पड़ाव नहीं बनाया है। प्रेम एक निरंतर खोज है, खोज उस सबकी जो अज्ञात है। जो अज्ञात को खोजता है वही प्रेम होता है। मगर अब ऐसा नहीं है, अब यदि एक लड़का और लड़की प्रेम में होते हैं, तो उनकी दुनिया और ज़्यादा सीमित होने लगती है। बाक़ी सब कुछ उनके लिये अनुपस्थित हो जाता है। इसका मतलब यही है कि वे प्रेम की पहली ही अवस्था में अटके हुए हैं, उससे आगे नहीं जा रहे हैं। एक-दूसरे की उपस्थिति से शरीर में होने वाले रासायनिक परिवर्तनों का नाम प्रेम नहीं है, वह तो नितांत भौतिक क्रिया है, वह तो कमोबेश किसी की भी उपस्थिति से हो जाएगी, उसका किसी एक ख़ास से कुछ लेना-देना नहीं है। आपको ऐसा लग रहा है कि 'एक्स' की उपस्थिति से यह हो रहा है लेकिन 'वाय' या 'ज़ेड' के साथ भी आपको वैसा ही होगा। सोशल मीडिया पर लव कोट्स का आदान-प्रदान, मोबाइल पर लम्बी-लम्बी कॉल्स का अर्थ 'प्रेम में होना' जो लोग मान कर चल रहे हैं, उनको पता ही नहीं कि वो प्रेम को कितने संकुचित दायरे में क़ैद कर रहे हैं। यह जो कुछ है, यह एक तात्कालिक सुख है, क्षणिक आनंद है, यह निरंतर होने वाला या रहने वाला नहीं है। जो निरंतर नहीं है, वो प्रेम नहीं है। प्रेम आता है तो फिर फैलता ही जाता है, वह रुकता नहीं है, मीरा कहती हैं न –'अब तो बेली फैल गई आनंद फल होई'।

तो फिर प्रेम आख़िर है क्या? अगर प्रेम को किसी एक परिभाषा में बाँधना ही पड़ जाए, तो किस प्रकार बाँधा जाएगा? असल में तो प्रेम किसी एक परिभाषा में बाँधा जा ही नहीं सकता। वह इतना अपार और अनंत है कि वह किसी एक परिभाषा के दायरे में क़ैद हो ही नहीं सकता है। इसे हम 'गूँगे का गुड़' कह सकते हैं, जो खा रहा है उसी को इसका स्वाद पता है, लेकिन पूछो, तो कुछ नहीं बता सकता कि कैसा स्वाद है इसका। लेकिन बस यह समझना होगा कि जब तक आपको किसी पेड़ पर, किसी पौधे पर लगा फूल सुंदर लग रहा है, आप बैठ कर उसे निहार रहे हैं, अपने अंदर आनंद को अनुभूत कर रहे हैं, तब तक आप प्रेम में हैं। वह जो अंदर का आनंद है, वह आपके चेहरे पर भी दिखाई देगा, एक पारलौकिक आभा के रूप में। लेकिन जैसे ही आपके अंदर उस फूल को तोड़ने का विचार आता है, उसे सार्वजनिक से निजी करने का ख़्याल आता है, वैसे ही आपके चेहरे की आभा समाप्त होने लगती है और क्रूरता चेहरे पर दिखाई देने लगती है। आप चाहते हैं कि इस फूल को तोड़ कर अपने घर के गुलदान में सजाया जाए, कोट पर लगाया जाए, जुल्फ़ों में सजाया जाए। आप व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ रहे हैं। आप दो तरफ़ा नुकसान कर रहे हैं, फूल तो मरेगा ही, साथ में आपके अंदर का प्रेम, आपके अंदर का आनंद भी मर जाएगा। फिर जैसे ही आप उस फूल को तोड़ते हैं, वैसे ही आप क्रूर हो जाते हैं और क्रूर व्यक्ति कभी प्रेम में नहीं हो सकता। जो प्रेम में होगा, वह फूल तोड़ना तो दूर, फूल को हाथ लगाने के बारे में भी नहीं सोचेगा। शाहिद कबीर ने इसी को लेकर कहा है –'रंग आँखों के लिये, बू है दिमाग़ों के लिये, फूल को हाथ लगाने की ज़रूरत क्या है'। यही प्रेम है जो कहता है कि फूल को हाथ लगाने की ज़रूरत क्या है। प्रेम यथास्थिति का आनंद लेने की अवस्था है। जो कुछ जैसा है, जहाँ है, वहीं पर उसका आनंद लिया जाए। प्रेम आनंद को निजी नहीं करना चाहता, वह चाहता है कि आनंद सार्वजनिक हो, सार्वजनिक रहे। जब आनंद निजी से सबका होने लगे, तो समझना चाहिए कि हम प्रेम में हैं।

प्रेम में होने का आनंद वही जानता है जो प्रेम में होता है। यहाँ 'होता है' का अर्थ पुल्लिंग नहीं है, यह प्रेमी के लिए है, प्रेमी जो स्त्री भी हो सकता है और पुरुष भी। जो प्रेम में होता है, वो बरसात होते ही सब कुछ छोड़ कर भीगने निकल पड़ता है। देर रात तक जागता है, किताबें पढ़ता है और लगातार सुनता रहता है, बेगम अख़्तर को, फ़रीदा ख़ानम को, जगजीत सिंह को, लता मंगेशकर को। सुनता है और रोता है। रोता है, आनंद के कारण। गुलज़ार को सुनता है, गुलज़ार, जो कभी उसे समझ में आते हैं, कभी नहीं आते। जब समझ में आते हैं तो रोता है, नहीं आते तो और ज़्यादा रोता है। ग़ालिब को पढ़ता है, जो उतने ही समझ आते हैं, जितना आटे में नमक, लेकिन ग़ालिब के शेर उसे याद हो जाते हैं। उसे नहीं पता कि 'आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक, कौन जीता है तेरी जुल्फ़ के सर होने तक' का ठीक ठाक अर्थ क्या है, लेकिन वो इसे दिन भर गुनगुनाता रहता है। छत पर खड़े होकर दूर डूबते हुए सूरज को टकटकी बाँधे देखता रहता है। फिर रात को छत पर लेट कर चाँद को देखता है। सबसे लाल तारे मार्स को देखता है और उसके आकर्षण को अपने अंदर महसूस करता है। सबसे चमकीले तारे शुक्र को अपनी उँगलियों से सहलाता है, और उँगली के सिरे पर अंगारे की जलन महसूस करता है। किसी तेज़ गति से जाते पुच्छल तारे पर सवार होकर मार्स पर चला जाता है, वहाँ अपने अंश तलाश करता है। यह सब उसके लिए आनंद का कारण होते हैं। वह बार-बार अपने आप से पूछता है कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ, और बार-बार उसके अंदर से एक ही उत्तर आता है- अभी तुम प्रेम में हो, अभी तुम प्रेम में हो, अभी तुम प्रेम में हो...।

"समै-समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न होय मन की रुचि जैसी जितै, तित तेती रुचि होय"

डॉ. प्रशांत पाठक

सहायक प्राध्यापक, वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र, साँची बौद्ध - भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय

prashant.anuprabha@gmail.com

कवि बिहारी की उक्त पंक्तियाँ आत्मसात करें तो "प्रेम और सौंदर्य" पर कुछ लिखना शेष नहीं रह जाता

हिंदी साहित्य में इस विषय पर अनेक लेखकों और कवियों ने गद्य और पद्य लिखने में अपना पूरा जीवन लगा दिया उसके पश्चात भी 'इसमें और बहुत कुछ लिखना रह गया है', ऐसा मानकर वे संभवतः असंतृप्त होंगे।

वर्तमान हिंदी लेखन की परम्परा में यह विषय लगभग गौण-सा विषय माना जाता है, क्योंकि यहाँ तात्कालिक रूप से श्रृंगार रस का ही विचार मन में आएगा, परन्तु 'प्रेम और सौंदर्य' पर प्रकाशित किसी भी आलेख को देखकर सरसरी तौर पर पृष्ठ पलटता पाठक एक क्षण रुककर देखेगा अवश्य, यही इस विषय की खूबी है!

मनुष्य मस्तिष्क वही ग्रहण करता है जो अच्छा लगे, यह जन्मजात प्रवृति है। एक अबोध शिशु दीर्घकाल तक प्रेम का पात्र बना रहता है जो उसे माँ से बिना शर्त मिलता रहता है; उसके विकास का मूलभूत आधार 'प्रेम' ही है और जब उसकी दृष्टि विकसित होती है तो प्रेम प्रदान करने वाला हर व्यक्ति निसंदेह उसे 'सौंदर्य' से परिपूर्ण लगता है ।

'प्रेम और सौंदर्य' को अनुभव करने हेतु हृदय का शिशु की भांति निश्छल और कपटरहित होना पहली शर्त है... यह प्रथम अनुभूति शैशवकाल में ही चिरस्थाई हो जाती है, इस निर्मल आनंद का बखान शब्दों में संभव ही नहीं है, यह अनमोल प्रतीति मस्तिष्क पर इतने सुंदर रूप में अंकित हो जाती है कि 'प्रेम और सौंदर्य' के आने वाले समय के मापदंड निर्धारित करने का मानक स्तर यहीं तय हो जाता है, और भविष्य में यही अंतर्द्वंद्व का कारक भी बन जात्ता है, क्योंकि यह निर्मल प्रेम अनंत काल तक चलायमान नहीं है, मात्र इसकी स्मृति को मन जाग्रत बनाए रखने हेतु अन्यत्र खोजने में लग जाता है, क्योंकि क्रमशः विकास के साथ शिशु और माँ में अंतर बढ़ता जाता है, कब एक शिशु चलना प्रारंभ कर देता है, विद्यालय चला जाता है, कब नए संगी साथी बनते हैं, समय पता ही नहीं चलता। जब दंड की अनुभूति होती है तो शुद्ध प्रेम की वो निर्मल स्मृतियाँ अकस्मात आहत होती हैं। शिक्षक की प्रताड़ना या मित्रों का उलाहना हो बालक मस्तिष्क यह समझ ही नहीं पाता कि अब तक प्राप्त प्रेम में व्यवधान कहाँ से अवतरित हो गया, किन्तु सामाजिक विकास और सुशिक्षित बनाने हेतु चलने वाली यह परिमार्जन प्रक्रिया अब निरंतर चलने लग जाती है 'प्रेम और सौंदर्य' के आयाम अब नए रूप लेने लगते हैं, वह अब इस प्रेम को घर से बाहर प्राप्त करने की प्रक्रिया में लग जाता है।

विपरीत लिंग के प्रति नैसर्गिक आकर्षण एक नई जिज्ञासा को जन्म दे देता है, किशोरावस्था तक पहुँचते-पहुँचते उसकी प्रेम और सौंदर्य की दृष्टि नया ही रूप धारण कर लेती है।

भविष्य की कल्पना में खोये तरुण, सौंदर्य के नित नए बिम्ब प्रतिबिम्ब का दर्शन और अनुभव करने लगते हैं, कभी वो अकारण खिलखिला उठते हैं, कभी अकस्मात उदास हो जाते हैं, दोनों ही स्थितियां अविस्मरणीय सौंदर्य से परिपूर्ण होती हैं, प्रिय की एक झलक या स्मृति मात्र भी भाव विभोर कर कल्पनाओं में नए रंग भर देती है! परन्तु यह भी स्थाई नहीं रहता। जिज्ञासाएं अब जिम्मेदारी का रूप धारण कर शैक्षणिक, सामजिक या कर्मबंधन के रूप में प्रतिबिंबित होने लगती हैं।

कर्मस्थल पर कर्म संतुष्टि सौंदर्य के आयाम परिवर्तित कर देती है, कर्त्तव्य के प्रति प्रेम और उसके परिपूर्ण होने से उपजा सौंदर्यबोध एक अनोखी आत्मसंतुष्टि देता प्रतीत होता है। हाँ ये है शुद्ध सौंदर्य परन्तु परिवर्तन प्रतिपल प्रभावशील है, पता नहीं कब प्रणय बंधन सौंदर्य के प्रतिमान परिवर्तित कर नवीन परिपक्वता के साथ जीवन में सम्मिलित हो जाता है ।

शिशु आगमन के साथ सम्पूर्ण जीवन कथा वहीं पहुँच जाती है जहाँ से प्रेम की प्रथम अनुभूति हुई थी। यहाँ भूमिका परिवर्तित होकर अब सौंदर्य माँ अथवा पिता की दृष्टि से देखा जाने लगता है।

उत्तरोत्तर प्रेम तीसरी पीढ़ी में पहुँच जाता है। कहते हैं मूल से ब्याज अधिक प्यारा होता है। सम्पूर्ण प्रेम जगत अब बच्चों के बच्चों में लीन हो जाता है ।

परन्तु समय कहाँ थमता है, चहुँओर स्थापित परिजन अपने-अपने प्रेम में समाहित हो जाते हैं ; यहाँ से वैराग्य और ईश्वर के प्रति प्रेम उदय होता है, प्रकृति अधिक आकृष्ट करने लगती है, सूर्योदय भाव विभोर कर देता है। चहचहाते पक्षी शांति प्रदान करने लगते हैं। हिलते-डुलते वृक्ष विचारों को स्थिर करने लगते हैं। सूर्यास्त वैराग्य जगाता है, रात्रि के गहन अंधकार में टिमटिमाते असंख्य तारागण और आकाशगंगाएं अध्यात्म उत्पन्न करने लगती हैं.....

माँ के स्पर्श से उपजा प्रेम अनन्तः ईश्वर तक पहुँच जाता है।

उम्रदराज होते होते इन्द्रियां साथ छोड़ने लगती हैं, दृष्टि धुंधला जाती है, विचार डगमग, स्मृति विस्मृत और जिह्वा लड़खड़ाने लगती है, शब्द साथ नहीं देते ऐसे में भला प्रेम और सौंदर्य का बखान कैसे हो। संभवतः इस स्थिति में 'प्रेम और सौंदर्य' सम्पूर्ण अन्तर्निहित हो कर रह जाता हो जिसके लिए न दृष्टि चाहिए न शब्द न स्मृति, यही पराकाष्ठा है जो वर्णनातीत है और जो शायद सत्य का बोध कराती हो, जो शिव है और वही सुन्दर है..

'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' आत्मसात होता है, जो कहता है न मैं जन्म हूँ न मृत्यु हूँ , मैं पुण्य भी नहीं पाप भी नहीं मैं तो मात्र चिदानंद रूप हूँ...

यहाँ अद्भुत अनुभव वाली अवस्था निर्मित हो जाती है जो संभवतः समाधि, मोक्ष, तुरीय या निर्वाण हो बस व्यक्त नहीं की जा सकती, न शब्दों में बाँधी जा सकती। यह तो अध्यात्म की पराकाष्ठा है, जहाँ शून्य शिखर पर अनहद नाद प्रतिध्वनित हो कर अनंतकाल से इस ब्रह्मांड में विद्यमान ओंकार के साथ तादात्म्य स्थापित कर स्थिर हो जाता है।

प्रेम निर्लिप्त और सौंदर्य पवित्र

परिधि भंडारी
टीच फॉर इंडिया फेलो, बंगलौर
paridhi.na@gmail.com

प्रेम और सौंदर्य दोनों ही शब्द गहराइयों से परिपूर्ण हैं। जहां प्रेम निर्लिप्त, निस्वार्थ प्यार की भाषा है वहीं सौंदर्य- अनछुई, असीम पवित्रता। प्रेम सभी बंधनों से ऊपर है और अपने चारों और सिर्फ सुख और आनंद फैलाता है बिना किसी शर्त या अपेक्षा के। कृष्ण और सुदामा का प्रेम, मीरा का गिरधारी से प्रेम, महावीर का गौतम से प्रेम, यह सभी उदाहरण प्रेम के भिन्न-भिन्न रूपों (मित्रता, समर्पण, परकल्याण) की चरम सीमा को चरितार्थ करते हैं। प्रेम इस धरा की नींव है, जहां सभी जीवों का उदय हुआ है। यह वह एकमात्र धागा है जिसमें इन सभी जीवों और उनके आसपास के वातावरण को आपस में पिरोया हुआ है। यह प्रेम ही तो है, कि मोर बरखा को देखकर नाचने-झूमने लगता है। यह प्रेम ही तो है, जब इंसान पंछी को पिंजरे से निकालकर स्वच्छंद आसमान में उड़ा देता है। वह फूलों की डाल को खिलता देख आनंदित होता है और यह प्रेम ही तो है जब इंसान आसपास के अपरिचित पीड़ितों के उत्थान में अपना सर्वस्व लगा देता है।

प्रेम मासूमियत से भरपूर है और शायद इसीलिए ही हम इस मासूमियत के लेंस से सभी को उनके वास्तविक रूप में देखते हैं और उन्हें सहर्ष अपनाते हैं। उसी रूप में उनके गुणों की प्रशंसा करते हैं। एक मां के लिए सारे संसार में उसका बच्चा सबसे गुणवान और रूपवान है। यह प्रेम की मासूमियत ही है।

परंतु कुछ और गहराई से सोचें तो प्रेम के संदर्भ में एक और ध्यान देने योग्य बात है। वह यह है कि क्योंकि प्रेम दूध-सा सफेद, मीठा व शुद्ध है। इसमें किसी भी तरह की मिलावट; सूक्ष्म ही सही, इसके मायने बदल देती है। मिलावटें जैसे- राग, द्वेष, ईर्ष्या या तुलना इत्यादि। इन अशुद्धियों के रहते प्रेम की मिठास कम होने लगती है। उसके मायने बदलने लगते हैं। उदाहरण के तौर पर जब हम प्रेम की नजर से प्रकृति की रचनाओं को निहारते हैं तो हम उनके वास्तविक, असीम सौंदर्य की अनुभूति कर सकते हैं। पर यदि इस प्रेम में तुलना मिश्रित कर देते हैं तब अनजाने में हम इस सुंदर को परखने लगते हैं और यहीं से सौंदर्य के मायने बदल जाते हैं। सौंदर्य, सुंदरता में बदल जाती है। वह आंतरिक और ऊपरी सुंदरता में विभाजित हो जाती है।

मेरा व्यक्तिगत विचार है कि सौंदर्य, वह चाहे प्रकृति का हो या मनुष्य का, संपूर्णता बयान करता है। इसमें सुंदरता की तरह आंतरिक और बाह्य विभाजन की गुंजाइश नहीं है। यह अनेक गुणों का मिश्रण है। जैसे- प्रकृति का सौंदर्य कई चीजों के मिश्रण से निखरता है, संपूर्णता देता है- वातावरण की ठंडक, शांति, खुलापन, विशालता, पक्षियों की चहचाहट, चांद की चांदनी का अवनी पर बिखरना, धरती के गर्भ से फसलों का उपजना इत्यादि। इसी तरह एक स्त्री का सौंदर्य भी ऊपरी सुंदरता के साथ-साथ उसके स्वभाव, ठहराव, शिष्टता, हाव-भाव और बुद्धि के सम्मिलित प्रभाव से निखरता है।

अंततः इस लेखन के माध्यम से वही कथन दोहराना चाहती हूं कि प्रेम और सौंदर्य दोनों बहुत गहराई के विषय हैं और अगर इन गहराइयों को छुआ जाए तो वस्तुतः जीवन जीने के सही मायने मिल सकते हैं। रोजमर्रा जिंदगी की समस्याओं के हल मिल सकते हैं।

बीईंग माइंडफुल
अभी और यहीं!

Subscribe Now

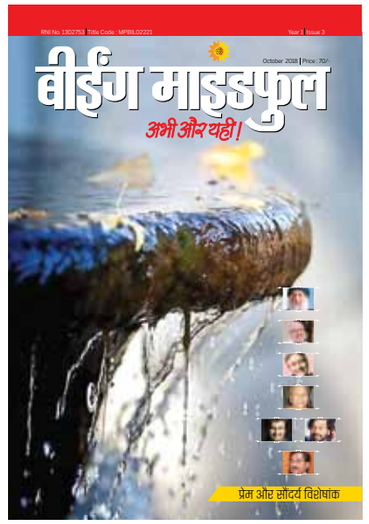

Name .....

Address .....

.....

Phone ..... Mobile .....

Email .....

Type of Subscription	Price
☐ Monthly	40/-
☐ Quarterly (3 Issue)	120/-
☐ Half Yearly (6 Issue)	240/-
☐ Annual (12 Issue)	480/-

*70/- Per Month Courier Charges Apply

Amount

Payment Mode
☐ Cash ☐ Cheque/DD
☐ Card ☐ PayTM

- Account Name
BEING MINDFUL
- Name of Bank
CORPORATION BANK
- Branch
MP NAGAR, BHOPAL
- Account/No.
510101006337892
- IFSC Code
CORP0000653

Date .....

Signature .....

“

To be beautiful means to be yourself. You don't need to be accepted by others. You need to accept yourself.

-Thich Nhat Hanh

”

रब को जो मंज़ूर था सो हो गया...

ग़ौसिया खान
असिस्टेंट प्रोफेसर
बीएसएसएस कॉलेज, भोपाल
ghousiyakhan08@gmail.com

अभी देखी कहाँ हैं आपने सब ख़ूबियां मेरी’
निगाहें ढूंढती हैं आपकी, बस ख़ामियां मेरी’

.....

‘मेरा क़िरदार दुनिया में शहादत से मुनव्वर हो’
‘नज़र आएं फ़लक पर सबको रौशन सुर्ख़ियाँ मेरी’

.....

‘वहां बरसों तलक फूलों की खेती होती रहती है’
‘बरस जाती हैं जिन खित्तों पे जाकर बदलियाँ मेरी’

.....

‘मैं हर नेकी को अपने दुश्मनों में बाँट देती हूँ ’
‘समर आवर रहा करती हैं इस से नेकियाँ मेरी ’

.....

‘ज़माना चाहे जो समझे अना के साथ जिंदा हूँ’
‘तुम्हें भी जीत लेगी एक दिन ये ख़ूबियाँ मेरी’

.....

‘किसी भी मौके पर अब तलक हारी नहीं हूँ मैं’
‘मेरा ज़ेवर रहा है दोस्तों खुद्दारियाँ मेरी’

.....

‘जिसे तुम राख समझे हो अभी तक आग है उसमे’
‘कुरेदो मत जला देगी तुम्हें चिंगारियाँ मेरी’

.....

‘सबीन अक्सर मैं दस्तर ख़्वां से उठ जाती हूँ बिन खाये’
‘किसी भूखे के काम आ जाएँ शायद रोटियाँ मेरी’

.....

‘दिल शिक़स्ता हौसला कम क्या करें’’
‘आप ही समझाएं अब हम क्या करें’’

.....

‘आपकी पहलूशीनी ख़ूब है’’
‘आप ही बोलें के जानम क्या करें’’

.....

‘सांस की आवाज़ तक तो रोक ली ’’
‘गुफ़्तुगू इससे भी मद्धम क्या करें’’

.....

‘रंज-ओ-ग़म से मुनसलिक है ज़िन्दगी’’
‘मौत बरहक है तो मातम क्या करें’’

.....

‘रब को जो मंज़ूर था सो हो गया’’
‘जाने वाली चीज़ का ग़म क्या करें”

.....

‘हसरतें तो थीं बहुत लेकिन सबीन’’
‘रास आया ही न मौसम क्या करें’’

प्रेम.....भावना नहीं आपका अस्तित्व है

गुरमीत सिंह सलूजा
सिटी इंजीनियर प्रोजेक्ट,
नगर निगम, भोपाल
salujauadd10@gmail.com

प्रेम को परिभाषित करने के लिए सर्वमान्य तथा सार्वभौमिक एकल परिभाषा अभी तक देखने में नहीं आई है। अलग-अलग देशों में अलग-अलग विचारकों तथा बुद्धिजीवियों ने भिन्न कालखंडों में प्रेम की अपने ही दृष्टिकोण से व्याख्या की है। सर्वाधिक प्रचलित दृष्टिकोण के अनुसार स्त्री व पुरुष के मध्य स्वभाविक आसक्ति को बहुधा प्रेम के रूप में परिभाषित किया जाता है। माँ का शिशु के प्रति स्नेह भाव, पारिवारिक सदस्यों का आपसी लगाव व स्नेह, किसी हीरो/हीरोइन के प्रति दीवानगी, व्यक्तिगत हॉबी, इच्छाओं को पूरा करने की दीवानगी, सम्मान प्राप्त करने का भाव,अंहकार का तुष्टिकरण इत्यादि की क्रियाओं को भी प्रेम के रूप में व्यक्त किया जाता है।

प्रेम वास्तव में क्या है? आसक्ति है, श्रद्धा है, स्नेह है, वासना है, वात्सल्य है, आकर्षण है, आस्था है, इच्छा है, दीवानगी है, क्या है? क्या इसे किसी सर्वमान्य परिभाषा से प्रकट किया जा सकता है। कोई मैथेमैटिक्स समीकरण बनाया जा सकता है अथवा विज्ञान, के रसायन शास्त्र/भौतिकी के सिद्धांतों से व्यक्त किया जा सकता है। कई रसायन विज्ञानियों ने प्रेम को मात्र शरीर की रासायनिक क्रियाओं का परिणाम बताया है, दार्शनिकों ने भी अपनी स्वतंत्र व्याख्या की है, मनोवैज्ञानिक प्रेम को, इमोशन व हार्मोन्स से जोड़ते है। फिल्मों में प्रेम को नायक व नायिका के आकर्षण के रूप में दर्शाया जाता है। उपरोक्त समस्त भाव निरपेक्ष प्रेम का प्रतिरूप नहीं हो सकते हैं, इन भावनाओं में प्रेम का अंश अवश्य निहित हो सकता है,परंतु शुद्ध प्रेम या बेशर्त प्रेम के परिचायक तो कदापि नहीं हैं।

प्रेम का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व है, जो यूनिवर्स में अनंत काल से स्वमेव निरन्तर स्वयं प्रकाशित है। प्रेम उत्पन्न करना, प्रेम हो जाना, प्रेम प्रदर्शित करना वास्तव में अलग भावनाएं हैं, जिनमें प्रेम की अंश मात्रा भी निहित होती है, वह यह मात्रा तथा गुणवत्ता मानव के विचारों, धारणाओं पर निर्भर होती है। प्रेम को समझने से पहले सृष्टि के प्रादुर्भाव व प्रक्रिया को गहराई से समझना तथा विवेकपरक दृष्टिकोण रखना आवश्यक है। सृष्टि के अस्तित्व में आने के कारण व प्रक्रिया को वैज्ञानिकों ने अपने चिंतन व शोध से व्यक्त किया है, परन्तु अभी भी ऐसे कई कारक हैं, जिनको विज्ञान अभी समग्र रूप से व्याख्या करने में समर्थ नहीं हैं। यद्यपि महान वैज्ञानिक आइंस्टीन इससे सहमत थे कि सम्पूर्ण सृष्टि ऊर्जा का ही रूप व रूपांतरण है,परन्तु इस ऊर्जा की गुणवत्ता, चरित्र ,मात्रा, कार्यपद्धति का विश्लेषण, शोध तथा विश्वशनीय परिणाम की अभी प्रतीक्षा है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों, मनीषियों, विचारकों, संतों ने अपने 'इनर विज्डम' से सृष्टि के प्रादुर्भाव व परिचालन को काफी स्पष्ट किया है व जैसे-जैसे वैज्ञानिक शोध हो रहे हैं, इन व्याख्याओं की पुष्टि की होती जा रही है, जो हमारे पूर्व में विभिन्न माध्यमों से अवगत कराए गए हैं।

अगर हम वैज्ञानिकों की धारणाओं तथा ऐतिहासिक मनीषियों के द्वारा प्रकट सिद्धान्तों को एक साथ मनन करते हैं, तो यह पुष्टि तो होती ही है कि सम्पूर्ण जगत ऊर्जा का ही स्वरूप है। सृष्टि के रचियता स्वयं ही प्रेम स्वरूप हैं, अर्थात दिव्य शक्ति जिन्होंने समस्त ब्रह्मांड की रचना की है, वह स्वयं दिव्य ऊर्जा का रूप में है, इसी में प्रेम भी इसी दिव्य ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण अंश है। अर्थात प्रेम स्वयं ही ईश्वरीय स्वरूप है और जब हम इस दिव्य प्रेम की अनुभूति में होते हैं तो वास्तव में हम ईश्वर की अनुभूति कर रहे होते हैं, जिसको शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। यह एक परमानंद की अवस्था है, जिसको अनुभव करने के बाद समस्त सांसारिक सुख गौण हो जाते हैं। आप स्वयं ही प्रेमरूपी अस्तित्व को धारण कर रहे हैं, परन्तु इस दिव्य अनुभूति से दूर हैं। आपकी जीवात्मा, जिसमें प्रेम की ऊर्जा भी सन्निहित है, परमपिता की दिव्य ऊर्जा का अंश है। जीवात्मा में सन्निहित विशुद्ध प्रेम की उपस्थिति से ही जगत के समस्त प्राणी, प्रेम की ओर स्वयं ही प्राकृतिक रूप से आकर्षित होते हैं। प्रेम, आत्मा का मूलभूत स्वरूप है, जब भी जहां भी जीवात्मा को प्रेम उपलब्ध होता है, स्वभाविक आकर्षण उस तरफ हो जाता है।

प्रेम की दिव्य ऊर्जा जो कि ईश्वरीय ऊर्जा का ही एक रूप है, भविष्य में अगर वैज्ञानिक इसके मापन में सफल हो जाते हैं, तो जीवात्मा द्वारा धारित प्रेम के स्वरूप, मात्रा, चरित्र का आकलन करना संभव होगा। इन दिव्य ऊर्जा तरंगों को वैज्ञानिक भाषा में -वेवलेंथ, फ्रीक्वेंसी, वाइब्रेशन, एम्प्लीटयूड इत्यादि कह सकते हैं। इनसे अगर हम परिचित हो सके तो संभवतः मानव की आत्मिक उन्नति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। यद्यपि दिव्य प्रेम को अनुभव व आकलन करने की शक्ति व क्षमता जीवत्मा में उपलब्ध है,परन्तु हमारे मन में जमा अवांछित नकारात्मक कचरे के कारण हम आत्मिक प्रेम व परमानंद तक पहुँच बनाने में प्रायः असफल हो जाते हैं। वास्तव में अधिकांश लोग तो आत्मिक प्रेम की चमत्कारिक व अलौकिक शक्ति से अनजान हैं। एक बार जिसने इस अमृत रूपी प्रेम के सागर में डुबकी लगा ली तो जीवन यात्रा में की जा रही भागदौड़ व तनाव की व्यर्थता का सच उसके सामने आ जाएगा ।

प्रेम की ऊर्जा वास्तव में ईश्वर की प्रतिनिधि है, जब अलौकिक प्रेम का अनुभव होगा तो मानो ईश्वर से साक्षात्कार होगा और तभी प्रेम के छदम् रूपों,जैसे शारीरिक आकर्षण, वासनाएं, दीवानगी, अहंकार, हॉबी,मोह,बंधन की वास्तविकता सामने आ सकेगी। प्रचलित प्रेम की धारणाएं और उनसे प्राप्त होने वाला क्षणिक सुख व्यर्थ लगने लगेगा।

जीवत्मा की मूल स्थिति प्रेम ही है यह ऊर्जा ईश्वर का स्वरूप होने से शाश्वत तथा अनंत है। आइंस्टीन के सिद्धान्त के अनुपालन में प्रेम न तो उत्पन्न किया जा सकता है व न ही नष्ट हो सकता है। हर व्यक्ति के पास इसका असीम खजाना है, बस जरूरत इसको पहचानने की है। निर्मल भाव से आत्मसाक्षात्कार किये जाने की आवश्यकता है।

पढ़ने व सुनने में यह सब सैद्धांतिक लगता है कि आत्मसाक्षात्कार कैसे करें, दिव्य प्रेम का अनुभव कैसे करें। वास्तव में आत्मसाक्षात्कार एक अत्यंत कठिन प्रक्रिया है। इतना आसान नहीं है स्व से साक्षात्कार..? सबसे बड़ी रुकावट है, हमारी अपनी धारणाएं, हमारे विचार। हमने अपने भीतर जो अहंकार, असीमित इच्छाएं, लालच, मोह, वासना जैसी जो नकारात्मक भावनाएं संग्रहित की हुई है, वही सबसे बड़ा अवरोध है। स्वयं के साक्षात्कार का मार्ग बंद है,आत्मा में संचित प्रेम से अनजान, कस्तूरी मृग की भांति भटक रहे हैं। आवश्यकता है, सर्ववप्रथम अपनी नकारात्मक धारणाओं को दूर करने की। जैसे ही अन्तःकरण में जमा कचरा साफ होना प्रारंभ होगा,रास्ता मिलना प्रारंभ हो जाएगा। अपने आप मेडिटेशन, ध्यान की अवस्था की ओर आप अग्रसर होने लगेंगे, अन्तःकरण आपको अपनी ओर आकर्षित करने लगेगा और आप प्रेममय होने लगेंगे। जब आप स्वयं प्रेम का स्त्रोत बनने लगेंगे तो आनंद की अनुभूति स्थायी होने लगेगी, तब आपकी प्रेम के बाहरी साधनों पर निर्भरता कम होती जाएगी। एक चमत्कार खुद के व्यक्तित्व में महसूस होने लगेगा।

तो आइए इस अलौकिक ईश्वरीय प्रेम के स्वरूप में स्थित हो कर परमात्मा के अमूल्य उपहार को जीवन में अंगीकृत कर लें और स्वयं ही प्रेम का अविरल, सात्विक प्रवाह सभी ओर करें और **'जिन प्रेम कियो, तिन्ही प्रभु पायो'** की अमृत वाणी को जीवन में साकार करें'।

प्रेम स्वयं एक सौंदर्य

प्रेम और सुंदरता क्या है? इस बारे मे सभी के अलग-अलग विचार हैं। क्या सुंदरता से प्रेम उत्पन्न होता है? या प्रेम खुद ही एक सुंदरता है। जिन्दगी खूबसूरती से सराबोर है। भंवरे का फूलों के ऊपर मंडराना, बारिश की धरती पर पड़ती हुई बूंदें, हवा का धीरे से स्पर्श होना, हंसता हुआ चेहरा यह सब कितना खूबसूरत है।

वन्दना नौहोरिया
1372/17, फरीदाबाद
vnohria1@yahoo.co.in

सुंदरता आंखों से भी देखी जाती है। आंखें आपके दिल का रास्ता बताती है और दिल प्रेम का स्थान है। यदि नारी में शील है तो यह गुण उसकी सुंदरता को बढ़ा देता है। हर नारी के चेहरे में सुंदरता होती है उस समय यदि वह धीर और शील गुणों से परिपूर्ण है तो उसकी तुलना आसमान में चमकने वाले तारे से कर सकते हैं।

फटे-पुराने कपड़े पहने एक छोटे से बच्चे की सुंदरता देखते ही बनती है। ईमानदारी तो अपने आप मे एक सच्ची सुंदरता है।

सुंदरता तो ईश्वर को पहचानने का एक माध्यम है। सुंदरता और प्रेम साथ-साथ ही उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति हर सुंदर चीज से प्रेम करता है। प्रेम स्वयं ही एक सौन्दर्य है। जैसे-शंकर और पार्वती का प्रेम एक अद्भुत सौन्दर्य है। हालांकि रौद्र भी एक सौन्दर्य है। जैसे-मां काली का सौन्दर्य। यह प्रकृति सौन्दर्य से परिपूर्ण है। प्रकृति हर प्राणी को कुछ न कुछ देती है तथा हर प्राणी प्रकृति से प्रेम करता है। प्राकृतिक सौन्दर्य अद्भुत है। हम प्रकृति की सृष्टि नहीं कर सकते पर इतनी कल्पना कर सकते है कि प्रकृति के यह अद्भुत सौन्दर्य की सृष्टि किसी अद्भुत शक्ति ने की है। वह अद्भुत शक्ति प्रेम और सुन्दरता से परिपूर्ण है। प्रेम और सौन्दर्य दोनों ही अमूर्त विचार है। जो मूर्त प्राणियों मे देखने को मिलते हैं। यह कलाकृति सुंदर है, यह मूर्ति सुंदर है। हम अलग-अलग वस्तुओं को एक ही नाम सौन्दर्य से बुलाते है। इन सब सुन्दर वस्तुओं में से हम सौन्दर्य प्रत्यय को अलग कर लेते हैं। यह प्रत्यय ही विज्ञान है जो नित्य है सार्वभौम है। और सभी विशिष्ट वस्तुओं का सामान्य प्रत्यय है। सुंदरता देखने वाले पर निर्भर करती है अतः सुंदरता और प्रेम दोनों ही विषयगत हैं। "सच्चा प्रेम ईश्वर की तरह होता है, जिसके बारे मे बातें तो सभी करते हैं परंतु महसूस कुछ ही लोग करते हैं।" लिखावट सुंदर होती है हर अक्षर, अक्षरों से गुंथा हुआ शब्द तथा शब्दों से गुंथी हुई वाक्यों की रचना, वाक्यों से लिखा गया लेख सुन्दर होता है।

महान दार्शनिक प्लेटो का कहना है कि प्रेम, सौन्दर्य और सत्य यह प्रत्यय बुद्धि के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। लेकिन एक प्रत्यय समस्त प्रत्ययों में समन्वय स्थापित करता है और वह है- शुभ का प्रत्यय। यह शुभ का प्रत्यय किसी विशेष वस्तु से संबंधित नहीं है, अपितु सभी प्रत्ययों में इसी की अभिव्यक्ति होती है। यह प्रत्यय ही सत्य, ज्ञान, सौन्दर्य तथा नैतिक शुभत्व का मूल आधार है। केवल प्रतिभाशाली व्यक्ति ही बुद्धि द्वारा शुभ के प्रत्यय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और जो व्यक्ति इसका ज्ञान प्राप्त कर लेता है उसे स्वतः समस्त सद्गुणों का वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो जाता है तथा उसका आचरण सद्गुणयुक्त हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति स्वयं सद्गुण युक्त होने के कारण दूसरों को भी सद्गुणी होने में सहायता दे सकता है। प्रेम के साथ जैन दर्शन के पाँच महाव्रतों को जोड़ा जा सकता है। यह पाँच महाव्रत हैं:-

1 अहिंसा

मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को दुख न पहुँचाना तथा दुख पहुँचाने की भावना भी न रखना अहिंसा है। अहिंसा के व्रत का पालन हम तभी कर पाएंगें जब सभी जीवों से हम भय और क्रोध छोड़कर प्रेम करेंगे। तभी यह सृष्टि और उसके जीव सुंदरता को प्राप्त कर पाएंगे।

2 सत्य

जैसा देखा और सुना गया उसका ज्यों का त्यों वर्णन करना ही सत्य भाषण है। जैन दर्शन में सत्य अहिंसा की रक्षा के लिए बताया गया है।

3 अस्तेय -

चोरी के विचार को हमेशा के लिए त्यागना ही अस्तेय है। जो व्यक्ति दूसरों के धन का हरण करता है, वह उसके जीवन का ही हरण कर लेता है।

4 ब्रह्मचर्य

इस अवस्था में सभी प्रकार की वासनाओं और कामनाओं को त्यागना पड़ता है। इसके व्रत से मनुष्य में ओज, तेज और पौरुष आदि आ जाते हैं।

5 अपरिग्रह

विषय वासनाओं के प्रति लगाव न होना अपरिग्रह है। अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना ही अपरिग्रह है। यदि हम वस्तु के संग्रह में लगे रहेंगे तो दूसरे लोग उस वस्तु के उपभोग से वंचित रह जाएंगे तथा समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाएगी तथा यदि हम दूसरे व्यक्तियों से प्रेम करेंगे तो हम आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करेंगें।

ईसा मसीह का यह कहना "जीवों से तुम प्रेम करो" का यही अर्थ है कि हम जब सब जीवों से प्रेम करना सीख लेंगें तो ईश्वर की अनुभूति कर सकेंगे जो आनंद की अवस्था ही होगी। आनंद, सुख, सौन्दर्य पर्यायवाची शब्द हैं।

हवाओं में बिखर जाए न साँसों में भरी नफ़रत

सीमाहरि शर्मा

7डी, 402, रीगल टाउन, अवधपुरी,
पिपलानी, भेल, भोपाल, 462022
seemaharisharma@gmail.com

अभी तुम
अगर तुम नफ़रतों में जी रहे हो,
प्यार को समझो
ज़रा मुश्किल लगेगा पर,
असम्भव भी नहीं इतना

अभी तुम दूर हो ख़ुद से
अभी समझा न पाओगे
तुम्हारी बात का जो मर्म है
बतला न पाओगे
हवाओं में बिखर जाए न
साँसों में भरी नफ़रत
असर सदियाँ सहेंगी फिर उन्हें
बहला न पाओगे
हृदय के द्वार का क्यों ?
सो रहा प्रतिहार को समझो
ज़रा मुश्किल लगेगा पर
असम्भव भी नहीं इतना

पता चलता नहीं है नेह की
नदियाँ न जाने कब
बुझातीं प्यास अन्तस् की
सभी खारी हुईं होंगी
सहेजीं जो विरासत प्यार की
गहरे मनस्तल में
अहं के द्वार की लघुता से वो
हारी हुईं होंगी
मनस के बदलते निश्छल मधुर
व्यवहार को समझो
ज़रा मुश्किल लगेगा पर
असम्भव भी नहीं इतना

कठिन है भूलकर ख़ुद को
कि केवल प्यार हो जाना
नहीं हो चाहना कोई
कि बस दातार हो जाना
समझ कर सत्य के स्वर दम्भ का
स्वीकार हो जाना
धरातल एक पर आकर
वही आकर हो जाना
उसी क्षण जीत जाओगे
हृदय की हार को समझो
ज़रा मुश्किल लगेगा पर
असम्भव भी नहीं इतना

अग़र तुम नफ़रतों में जी रहे हो
प्यार को समझो ।

विषवत कष्ट निगलता चल मन यायावर चलता चल

हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'

7डी, 402, रीगल टाउन, अवधपुरी,
पिपलानी, भेल, भोपाल, 462022

चुभते हों कंटक पैरों में, चुनते उन्हें निकलता चल।
प्रसून-प्रस्तर पथ जीवन पर, मन यायावर चलता चल।।
क्रमिक आवृति है सुख-दुख की,
पल-पल पलकें बन्द खुलें।
पुलकित अति आह्लादित सुख में,
दुख में धारे अश्रु ढुलें।
शीतल, मधुर, अमिय सुखरस तो,
विषवत कष्ट निगलता चल।
प्रसून-प्रस्तर पथ जीवन पर,
मन यायावर चलता चल।।1।।

रूपा, रूप-सुरा यौवन-मद,
मय निमग्न नयना पीते।
द्रव्याशक्त, द्रवित-दुर्दिन अब,
कण्ठ-शुष्क, नयना-रीते।
यौवन-पन मदमस्त रहा तो,
जरा-जीर्ण में जलता चल।
प्रसून-प्रस्तर पथ जीवन पर,
मन यायावर चलता चल।।2।।

बढ़े क्रमिक तम घोर अमावस,
चढ़े पूर्णिमा तक चंदा।
मन अपना मथुरा वृंदावन,
मन का हरि गौरखधंधा।
संयोगों में लवलीन रहा,
मन वियोग भी सहता चल।
प्रसून-प्रस्तर पथ जीवन पर,
मन यायावर चलता चल।।3।।

समयचक्र गढ़ता संज्ञायें,
ऋतु बसंत, पतझर,पावस।
शुष्क-स्रोत, उफनते-सरोवर,
शीत शांत, भीषण-आतस।
कलरव में आह्लादित मन अब,
नीरवता में बहता चल।
प्रसून-प्रस्तर पथ जीवन पर,
मन यायावर चलता चल।।4।।

नियति के दो-रंगी पहलू,
धूप जहाँ, है छाँव संग।
आभा में मन पुलकित था पर,
तम में मुकुलित शिथिल अंग।
उदित काल मुदित आह्लादित,
अस्त सांध्य में ढलता चल।
प्रसून-प्रस्तर पथ जीवन पर,
मन यायावर चलता चल।।5।।

मुखड़ा अंतर्मन दर्पण यह,
बिम्बित भाषित करे सत्य।
प्रकट भाव पट हटा दिखाता,
गुप्त शेष फिर क्या नेपथ्य।
योग-युक्ति, संयम दृढ़ता से,
शान्ति वरण तू करता चल।
प्रसून-प्रस्तर पथ जीवन पर,
मन यायावर चलता चल।।6।।

सौंदर्य मन की प्रेम कहानी!

डॉ. अजय वर्मा

सह प्राध्यापक (दर्शनशास्त्र)
जेएनयू, नई दिल्ली
ajayverma@jnu.ac.in

इसमें कोई संदेह नहीं कि सौंदर्य अनुभूति प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक परम वांछनीय अनुभव है। इस कथन में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हमारा संपूर्ण जीवन जाने-अनजाने इस अनुभूति की खोज में ही अपने होने का अर्थ पाता है। इसके अतिरिक्त सौंदर्य न केवल एक अनुभूति है वरन् अवलंब तथा कारक भी है। हम जहां सौंदर्य पाते हैं मन वहां विश्राम पाने लगता है तथा अंततः इस अनुभूति में अवस्थित होने की चेष्ठा करने लगता है। सौंदर्य प्राप्त कर मन की इस ठहराव तथा विश्राम की विशुद्ध अनुभूति को ही हम प्रेम की संज्ञा देते हैं। किंतु जो विषय सौंदर्य को प्रेम से एक अलग अवधारणा के रूप में प्रस्तुत करता है, वह यह है कि सौंदर्य अनुभूति तथा जाता है। क्या सौंदर्य वस्तुओं के स्वभाव में अवस्थित है, जिसके कारण वे वस्तुएं सौंदर्यवान प्रतीत होती हैं या फिर सौंदर्य हमारे नजरिए पर निर्भर करता है। यदि सौंदर्य वस्तुओं में अवस्थित है तो वह सब मनुष्यों को समान रूप से क्यों दिखाई नहीं पड़ता। हम प्रायः अपने जीवन में पाते हैं कि विभिन्न व्यक्तियों को विभिन्न वस्तुएं पसंद आती है। यदि सौंदर्य वस्तुओं में अथवा वस्तुगत होता है तो उसकी कोई वस्तुगत परिभाषा होनी चाहिए। यदि ऐसा होता तो यह परिभाषा व्यवसायिक जगत के लिए विशेष रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण होती। सौंदर्य क्या है? इस विषय पर विज्ञान जगत में बहुत से शोध किए जा चुके हैं। इसके लिए कुछ गणतीय समीकरण खोजने का प्रयास भी किया गया है, जिसका अर्थ है कि किसी एक अनुपात में व्यवस्थित एक अमुख संरचना में वह कृतियां सुंदर सौंदर्यपूर्ण प्रतीत होती हैं तथा वे वस्तुयें जो इस अनुपात के अनुरूप नहीं है, वह सही मायनों में सौंदर्यपूर्ण नहीं है। किंतु हम अपने अनुभव से जानते हैं; वस्तुएं सुंदर होने के लिए प्रायः कोई निश्चित अनुपात लिए हुए नहीं होती। प्रत्येक वृक्ष अन्य वृक्ष से आकार में, बाहरी संरचना में, भिन्न होता है। प्रत्येक बादल दूसरे से भिन्न आकर लिए होता है। आकाश का कभी कोई निश्चित आकार नहीं होता, किंतु यह सभी विषय हमें अत्यंत सुंदर प्रतीत होते हैं। जापानी संस्कृति में सौंदर्य- बोध का एक अनूठा उदाहरण मिलता है, जिसे वाबी-साबी कहते हैं। यह शब्द एक ऐसे सौंदर्य बोध का प्रतीक है, जो किसी निश्चित संरचना में व्यवस्थित या आबद्ध नहीं होता। कई बार हमें धरती पर बेतरतीब बिखरे हुए पत्ते अथवा पत्थर एक अलग प्रकार के सौंदर्य का बोध कराते हैं। इसी प्रकार के सौंदर्य बोध को जापानी परंपरा में वाबी-साबी का नाम दिया गया है।

किंतु यदि सौंदर्य विषयगत रूप से किसी वस्तु में स्थित नहीं होता तो क्या वह व्यक्ति सापेक्ष है। सौंदर्य बोध को समझने के लिए यह पहल ज्यादा सुसंगत प्रतीत होती है। बचपन में जो वस्तुएं हमें खुशी का आभास देती हैं, वही वस्तुएं किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते अरूचि की श्रेणी में आ जाती हैं। व्यस्तता के क्षणों में जिन वस्तुओं की तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता विश्राम के क्षणों में वही वस्तु सुंदर प्रतीत होने लगती है। जिससे यह सिद्ध होता है कि जब तक मन को अवकाश न हो, जब तक मन स्वतंत्र तथा स्वच्छंद न हो, सौंदर्यबोध की अनुभूति का होना संभव नहीं। इससे लगता है कि शायद सौंदर्य मन की स्थिति अथवा अवस्था का नाम है। किंतु, यदि ऐसा है तो हम कभी भी स्वयं को शर्तरहित खुश क्यों नहीं कर पाते। ऐसा क्यों होता है, प्रेम तथा प्रसन्नता जो सौंदर्यबोध से फलित होती है प्रायः परिस्थिति- जन्य होती है। यह जानकर लगता है कि, हो सकता है सौंदर्य एक मन की अवस्था हो। किंतु उसके उत्प्रेरक तत्व शायद कहीं न कहीं हम से बाहर कहीं अतिरिक्त रूप से हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं। सौंदर्य की यह समझ कहीं न कहीं हमें किसी कारण से ज्यादा तर्कसंगत प्रतीत होती है। किंतु यदि सौंदर्य परिस्थितिजन्य है, तो इसका अर्थ यह होगा कि हम वे परिस्थितियां उत्पन्न करने में सक्षम हो जाएं, जो हमें सौंदर्य से होते हुए प्रेम तथा प्रसन्नता की ओर ले जाता हों तो शायद हमें जीवन का ध्येय प्राप्त हो ही जाए। हम में से अधिकांश सौंदर्य की ऐसी ही समझ लेकर जीवन में आगे बढ़ते हैं। हमे अपने आसपास देखने की कोशिश करते हैं तथा जानने की कोशिश करते हैं कि किन परिस्थितियों में प्रायः व्यक्ति सौंदर्य तथा प्रसन्नता पाता है। हम पाते हैं, कि विवाह तथा संतान से प्रायः लोग खुश प्रतीत होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि दांपत्य में सौंदर्य है। लोग अपने मैत्री संबंधों में सुख पाते प्रतीत होते हैं, जिसके कारण उन संबंधों की घनिष्ठताओं को बढ़ाने के क्रम में हम पार्टी, उत्सव आयोजित करते हैं तथा सारी ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं, कि जिससे प्रायः माना जाता है सुख की उत्पत्ति होती है। परिणामस्वरुप कार्य- कारण संबंध के क्रम में हम निष्कर्ष निकालते हैं कि क्योंकि क्रियाकलापों को कर प्रायः मनुष्य खुश होता है तो हम भी उस प्रसन्नता को प्राप्त कर चुके हैं। किंतु प्रायः यह खुशियां जो परिस्थितियों से जन्म लेती हैं उन परिस्थितियों के साथ ही समाप्त हो जाती हैं और मन फिर सौंदर्य की डिमांड- अर्जी भेजता रहता है। हम चाहते हैं कि सौंदर्य तथा प्रेम उत्प्रेरक तत्व तक सीमित न रहकर मन के स्थाई भाव बने। किंतु यह स्थाई भाव तभी बन सकते हैं जबकि उनके कारक तत्व स्थाई हों। ऐसे में हमें ढूंढना चाहिए कि मन के निकट ऐसा कौन सा कारक तत्व है, जिससे सदैव उसका सानिध्य अविरल रूप से बना रहता है। इस विषय में हम सोचें तो हम पाएंगे कि मन के निकट सदैव उसके सानिध्य में हम स्वयं ही होते हैं। किंतु मन के सौंदर्य को परिस्थितिजन्य मान कर हम सदैव मन को स्वयं से नहीं बाह्य वस्तुओं से उसका साक्षात्कार कराते रहते हैं। किंतु मन एक ऐसी बंधु, सखा, मित्र तथा प्रेमिका की भांति है जो केवल हमारा ध्यान तथा सानिध्य चाहता है तथा उस निकटता तथा सानिध्य को पाते ही अपने स्वभाव में आने के लिए स्वयं को स्वच्छंद पाने लगता है। उसे मानो अचानक अपना स्वयं का घर मिल जाता है। सौंदर्य तथा प्रेम हमें भारी-भरकम शब्द लगने लगते हैं जिनके लिए हम जीवन भर जाने क्या- क्या कार्यक्रम तथा क्रियाकलाप करते हैं। किंतु मन जहां सौंदर्य बसता है, केवल हमारा सानिध्य मात्र चाहता है, जिससे हम उसे अधिकांश जीवन भर वंचित रखते हैं। सौंदर्य, मन की शायद यही छोटी सी एक प्रेम कहानी है।

प्रेम का फूल तोड़ो मत; सौंदर्य गंवा देगा

विनय गोपाल त्रिपाठी

शोधार्थी, श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

hncgoa89@gmail.com

प्रेम वह है, जिसमें किसी वस्तु से प्रेम होने पर उसके कुशलक्षेम की चिन्ता होती है न कि उसका उपयोग करने की ललक। जैसा कि महात्मा बुद्ध ने कहा है - यदि आपको कोई फूल सुन्दर लगता है और वह आपको अच्छा लगता है तो आप उसे तोड़ लेते है, किन्तु यदि वह प्रिय है तो आप उसे तोड़ेंगे नहीं। उसकी सुन्दरता बनी रहने के लिए उसका गुलाब के पेड़ से जुड़ा रहना अत्यन्त आवश्यक है। अतः आप उसे पानी से सींचेंगे ताकि उसकी वह सुन्दरता बनी रहे। ठीक उसी प्रकार जीवन में आप जिस भी व्याक्ति से प्रेम करते हैं, वह उसके गुणों के कारण करते है। और जो उसका स्वाभाविक गुण है उसके कारण प्रेम करते हैं। इसलिए प्रेम में स्वतन्त्रता अत्यन्त महत्वपूर्ण चीज़ है। यदि आप केवल दैहिक आकर्षण के कारण प्रेम करते हैं तो वह उसी प्रकार से समाप्त हो जाएगा जिस प्रकार से सुन्दर फूल को तोड़ने के बाद कुछ समय बाद वह अपनी आभा और सौन्दर्य खो देगा।

किन्तु वर्तमान समय में, उदाहरण के लिए यदि कोई किसी से प्रेम करता है तो प्रायः वह जैसे ही आपका प्रिय बनता है आप उस पर शर्तें थोपने लगते हैं। आप उससे अपेक्षा करने लगते है कि वह अमुक व्यक्ति से मिलें तथा अमुक व्यक्ति से न मिलें। उसके हर हाव-भाव पर आपकी पैनी दृष्टि होती है। अपेक्षाओं का अम्बार इतना विकराल रूप ले लेता है कि संबंधों की डोर को टूटने में अधिक देर नहीं लगती।

सिनेमा जगत की इस चकाचौंध भरी दुनिया से प्रभावित युवा ऐसा उन्मत्त है कि जैसे प्रेम केवल वासनाओं की पूर्ति मात्र का माध्यम बन कर रह गया है। आज किसी के साथ तो दस दिन बाद किसी और के साथ, नकली प्रेम के दिखावे का संबंध बनता-बिगड़ता रहता है परन्तु क्या हम वास्तव में प्रेम को समझ सकें हैं?, मुझे लगता है, नहीं। जीवन में व्यक्ति के हाथ में केवल उसके कृतित्व यानी किए जाने वाले कार्य ही है, जिसके माध्यम से वह अपने प्रेम को प्रकट कर सकता है। किन्तु आज कल केवल जैसे क्षुधा पूर्ति के लिए ही संबंध मात्र बन कर रह गए हैं। किसी से किसी चीज़ की जरूरत हो तो संपर्क साधना और उसके बाद ईद का चाँद बनने का चलन बन चुका है।

हमें वास्तव में यह समझना पड़ेगा कि न हमारे हाथ में मृत्यु की तिथि निर्धारण की क्षमता है और न ही किसी के जीवन की अवधि बता सकते हैं। यह जीवन एक ट्रेन की यात्रा की तरह है। किन्तु इस यात्रा में आपके पास आपके यात्रा के प्रारंभ का निश्चय करना संभव नहीं है। न ही आपकी यात्रा के अंतिम पड़ाव का ज्ञान आप कर सकते हैं। किन्तु इन दोनों के मध्य में जीवन के अनुभव का निर्माण करने की क्षमता आपके अन्दर है। और इसके लिए महत्वपूर्ण चीज़ आपका व्यवहार और आपका जीवन के प्रति दृष्टिकोण ही निर्धारित करता है। इसलिए हमें जो अपने नियन्त्रण में हो उसे बिल्कुल जीवन्त रूप से करने का प्रयास करना चाहिए और वह है, अपना व्यवहार और दृष्किोण।

मैने प्रायः लोगों को किसी की मृत्यु के पश्चात उसकी प्रशंसा करते हुए सुना है और मुझे आश्चर्य भी होता है और नहीं भी। क्योंकि यदि आदर्श रूप से मानव को परिभाषित किया जाए तो उसमें दूसरे प्राणियों के प्रति संवेदना का होना अनिवार्य है। परन्तु वह संवेदना विकसित होना भी सरल नहीं है, इसलिए आश्चर्य भी नहीं होता है। वास्तव में बुद्ध ने जो कहा है कि दुःख शाश्वत सत्य है और हर प्राणी इसका अपने जीवन में हर क्षण अनुभव करता है कभी कम मात्रा में, तो कभी असह्य मात्रा में और जब तक हम इस चीज़ को न केवल जानेंगें किन्तु अनुभव करेंगे तब तक हम एक दूसरे के प्रति संवेदना युक्त नहीं हो सकेंगे। यह ही प्रेम के लिए महत्त्वपूर्ण है, संवेदना का होना। यदि यह होगा तो हम किसी के दुःख का कारण बनने से बचेंगें और शोषण की जो मानसिक प्रवृत्ति लोगों में व्याप्त है वह दूर हो सकेगी तथा प्रेम के वास्तव स्वरूप को जो कि त्याग और समर्पण पर आधरित है को पा सकेंगे। यह समाज और व्यक्ति सभी के लिए हितकारी होगा।

सौन्दर्य की जो परिभाषा आज अलिखित रूप से युवाओं में पायी जाता है वह प्रायः भौतिक रूप पर आधरित होती है। और जो कि कुछ समय में नष्ट हो जाएगी यानी क्षणिक है। अतः जो शाश्वत है वह है व्यक्ति का कृतित्व और व्यवहार जिसका कि व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी यश रहता है उसे पाने का वर्तमान समय के युवाओं को प्रयास करना चाहिए।

LOVE & BEAUTY

Dr. Shalini Saxena (Professor)
Govt. M.L.B.College Bhopal
drshalinisaxena@yahoo.com

There are a thousand definitions of beauty and there are many degrees of beauty. Beauty is in the eye of the beholder. It is much easier to become infatuated with someone who possesses beauty. Beauty generates love. Love seeks beauty. Love is synchronous with beauty.. Beauty brings immeasurable enhancement to life. There can be no superb creativity outside the sphere of beauty. It is beauty that does not allow life to shrink. It is beauty that inspires us to do even what seems to be impossible. The more intense the beauty, the more intensive and deeper will be the love. But when we love someone we see nothing wrong in them. Even if we see a fault in them, we justify it .We think we have not done enough for them and the more we do, the more we want to do for them. They are always in our mind. Ordinary things become extraordinary. When we love someone, we want to see them happy always and we want them to have the best. Love and beauty go hand in hand. If something is beautiful, you cannot hate but love it. When you love this creation, you see it as beautiful. When you are tired of this creation, you find it ugly. That is why to appreciate beauty, first we must understand love. Usually when we love something, we want to possess it. If we appreciate a painting, we want to buy it and keep it in our home. If we find a beautiful garment, and although we know we will wear it only for a couple of times, we buy it and put it in the wardrobe. We have known only one way of loving — love it, possess it and forget it. Whoever we love, we try to dictate terms to him. In a very subtle way we try to rule him. And whatever we try to control turns ugly. We have never loved someone and not tried to possess him. It begins in childhood. When the second baby comes, the first baby wants all the attention. "Why did you bring this baby home? Give it away." Many children say, "You belong to me and me alone." It is a deep feeling, a deep impression, this fear of losing our place in the heart of someone we love. First comes attraction. When it becomes a little difficult to attain whatever we are attracted to, then we start loving it. If we simply get whatever we are attracted to — just like that, quickly , we do not develop love for it. A longing must arise. That leads to love. But love brings the fear of loss. Yet, a love which has the fear of loss does not blossom. It leads us to other ugly sensations and feelings. Jealousy comes. There is someone you love very much ie. a friend, a boyfriend, a girlfriend , but his or her attention is on someone else. See what is happening in your stomach , it is churning. Much ugliness arises because there is fear of loss. Have you thought about why we love someone? Is it because of their qualities or is it because of a sense of kinship or intimacy? You can love someone for their qualities and not have a sense of intimacy. This type of love gives rise to competition and jealousy. If love is based on the qualities of a person, that love is not stable. After some time the qualities change and the love becomes shaky. However, if you love someone because they belong to you, then that love remains for lifetimes. Loving someone because they belong to you, great or otherwise, is unconditional love. Love that is centered becomes bliss. We always love our children because they belong to us ,whether they are good looking or not so good looking .And when there is so much love you take total responsibility for any misunderstanding. We may feel dismay on the surface, not our heart, we arrive at a perfect understanding. We are in a state where all problems and all differences slide away and only love shines through. Most of the times, people love us because we give them comfort. If someone doubts our love then we have to constantly prove it, this becomes a heavy burden on us. Our nature is to shed burden, so when love is questioned, we don't feel comfortable. Therefore, do not ask for proof that the other person loves you. Love needs no proof. Actions, words cannot prove the love.

WHAT IS MORE IMPORTANT LOVE OR BEAUTY?

First beauty wins, then love . However, beauty fades and it all comes down to love. You can love a person because they are physically beautiful however hopefully the person also has beauty inside as it keeps the relationship stable most of all when their beauty fades. I love a guy that is sharp and has a strong personality (a leader); and just like me a family oriented person and nerds at heart. Love still conquered me than beauty, because if you have love you see the beauty of that person and that makes them the most beautiful person among the other. On the other hand beauty can really do every head turn and makes people smile for that moment but it takes beyond beauty or LOVE to keep that moment last forever. Love is far more important than beauty. Beauty is such a temporary thing that lies in the eyes of beholder. You can be truly loved by someone without even caring about a thought if you look beautiful. When a person loves you ,he/she will find beauty in every stupid gesture of yours .Love conquers all. I am in relationship from past more than 25 years of my life with this amazing man (My Husband) who no matter how I look? loves me, and after 25 years his love is going on increasing. Beauty never attracts love but love attracts beauty. Beauty does generally fade with time, while emotional connections can flower greatly over time when properly tended. But this does not mean that you should be with a partner you find unattractive.

But I believe that love & beauty are no equals , simply because Love is an ageless natural unconditional feeling & omnipresent in all forms of life. Imagine , Life without Love Unbelievable, Colourless, Boring & Scary, isn't it. Love is colour & essence of life.

क्या प्यार से अधिक कुछ सुन्दर है ?

डॉ. रीना वालिया

प्रिंसिपल,ज़ेनिथ पब्लिक स्कूल,
जालंधर
reena_walia@yahoo.com

ये बिलकुल सही है कि प्रेम बिना जीवन नहीं! जिन्दगी की डोर बस इसी एक धागे से बंधी है! पृथ्वी के समस्त कार्य, विधि, केवल और केवल इस एक भाव से चलते हैं! मनुष्य के जन्म से मरण तक और मृत्यु के पश्चात् भी बस यही एक चीज़ है जो मरती नहीं। प्रेम पूजा है,साधना है, एक बहुमूल्य वस्तु है, निर्मल और शीतल है, भेदभाव से परे है, असीम है, अपार है, उल्लेखनीय है, अतुल्य है! प्रेम सौंदर्य है! प्रेम के विषय में जितने भी विशेषण प्रयोग किए जाएं कम हैं, क्योंकि ये वो क्षितिज है, जिसका कोई सिरा नहीं, वो समुद्र जिसका जल कभी सूखता नहीं अपितु प्रयोग से बढ़ता है। सृष्टि का कण-कण सौंदर्य से भरा हुआ है। असीम प्रेम बिखेरती वसुंधरा मनो बाहें फैला कर हमारा अभिनन्दन कर रही हो। कौन है जो ये सौंदर्य से परिपूर्ण प्रेम बरसा रहा है।

'हरी भरी वसुंधरा पे नीला नीला ये गगन,
ये किस कवि की कल्पना का चमत्कार है?
ये कौन चित्रकार है, ये कौन चित्रकार?'(1)

ये चमत्कार संसार के रचयिता का है, जिन्होंने प्रेम से सौंदर्यपूर्ण इस धरा का निर्माण किया है। अगर यह धरती प्रेम से नहीं बनाई जाती तो क्या सुंदर होती? कदापि नहीं। कुम्हार जब बर्तन बनाता है तो उस में अपना दिलो-जान लगा देता है और तब सुंदर बर्तन आकर लेता है। उसी प्रकार प्रभु ने प्रेमपूर्वक इस सुन्दर धरती का निर्माण किया और इसे संजोया|

'जिसकी रचना इतनी सुन्दर है, वो कितना सुंदर होगा'(2)

इसका अनुमान तो हम लगा ही सकते हैं। धरा के विधाता का ये प्रयोजन प्रेम और सुंदरता को समर्पित है! तभी तो ये फूल- पत्तियां, सूरज की किरणें, बादलों के बदलते रंग, पहाड़, वादियां सभी इतनी मनमोहक हैं। कमाल की बात तो ये है कि इन चौरासी लाख योनियों के अलग-अलग साँचे जिन में ये सुंदर जीव-जंतु ढले हुए हैं। अद्भुत और असीम।

भगवान ने सभी को ये जो सुन्दर वर्चस्व दिया है, ये केवल प्रेम से सक्षम हो सकता है।

इसी योजना की एक कड़ी है माता-पिता जो बच्चों का अस्तित्व बनाते हैं, तभी तो धरती पे उन्हें परमेश्वर का स्थान दिया गया है। माँ नौ महीने गर्भ में बच्चे को अपने हर कतरे से सींचती है और तब इंसान नामक पौधे का जन्म होता है। इस पौधे की देख-रेख पिता रूपी माली करता है और जैसे ही ये पौधा एक वृक्ष का आकार लेता है तो सब से अधिक ख़ुशी माता-पिता को होती है। माता-पिता जो सब से पहले गुरु होते हैं, बच्चे को संस्कार और प्रेम से परिपूर्ण जीवन का सुंदर वरदान देते हैं| जब बड़े हो कर वो बच्चे स्वयं माता -पिता बन जाते हैं तो वे भी वही ममतामय आशीर्वाद अपनी संतान को बांटते हैं। ऐसे ही दुनिया का चक्र चलता है। माँ के प्रेम की तो कोई तुलना ही नहीं है| इस प्रेम को सर्वश्रेष्ठ माना गया है|

इंसान तो क्या, देव भी इस प्रेम को प्रणाम करते हैं| हनुमान जी भी जब सीता मैया से मिले थे तो ऐसे ही प्रेममय आशीर्वाद से ओतप्रोत हो गए थे|

'अब कृत कृत्य भयऊँ मैं माता||
आसिष तब अमोघ बिख्याता||' (3)

'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भयो ना कोई!
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े तो पंडित होए! '(4)

किसी भी कार्य को अगर प्रेम से किया जाए तो वो सफल होता है।

प्रेम एक ख़ामोशी है जो सुनने और कहने में यकीन नहीं रखती, बस शांतिपूर्वक अपना कार्य करती जाती है, ये एक अहसास है जो आत्मा से महसूस किया जाता है।

केवल पुरुष और स्त्री के संबंध को प्रेम का नाम नहीं दिया जा सकता|

खुशवंत सिंह जी कि एक लघु कहानी है- जिसमें वे बताते हैं कि उनकी दादी के निधन के बाद वे सभी पक्षी शोक मुद्रा में चुपचाप बैठे रहे जो उनके हाथ से दाना खाते थे। क्या ये प्रेम नहीं? ये मूक पक्षी भी प्रेम की भाषा भली-भांति समझते हैं|

वक़्त की रफ्तार में भी प्रेम सदा रहता है| उसका सौंदर्य अपने अंदर समेट लेना चाहिए जिसने जिंदगी का फलसफा सिखाया|

प्रसिद्ध पंजाबी(सूफी) कवि बुल्लेशाह का मानना है-

हम सारी दुनिया में घूम आते हैं पर अपने दिल में झाकंते भी नहीं, दुनिया को खुश करने की होड़ में अपने आप को भूल ही जाते हैं|(९)

हम न कुछ लें कर आये थे न ले कर जायेंगे , बस प्यार के दो मीठे बोल ही हमारे साथ रह जाएंगे।

प्रेम से हम और हमसे सौंदर्य| इसी अंदरूनी सौंदर्य को महसूस करना है| सुंदर भाव, सुंदर विचार, सुंदर मन तो जग भी सुंदर| बाहरी सुन्दरता से केवल किसी को मोह लिया जा सकता है परन्तु आन्तरिक प्रेम और सुन्दरता से जिस ने जग को जीत लिया, वही सिकंदर|

बस इसीलिए प्यार बांटते चलो| ये ही सौंदर्य का प्रतीक है| इस के परे कुछ भी नहीं|

हम सारी दुनिया में घूम आते हैं पर अपने दिल में झाकंते भी नहीं, दुनिया को खुश करने की होड़ में अपने आप को भूल ही जाते हैं|

लोकमानस का सौन्दर्य

डॉ. अनीता शर्मा
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
एम.जी.एस.एम. जनता कॉलेज,
करतारपुर, ज़िला जालन्धर

भारतीय साहित्य में नौ रसों को मान्यता प्रदान की गई है और इनमें से शृंगार को 'रसराज' होने का गौरव प्राप्त है। इसके अन्तर्गत प्रेम और सौन्दर्य का विवेचन किया जाता है। आचार्य भोज ने शृंगार को एकमात्र रस घोषित किया है। साहित्यकार जो भी कहें, सच तो यह है कि प्रेम और सौन्दर्य ऐसे भाव हैं जो मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी, जड़-चेतन सभी को प्रभावित करते हैं। दक्षिण भारत के मन्दिर अजन्ता एलोरा की गुफाएं तराशे जाने के बाद नए अर्थ प्रदान करने लगे। यह प्रेम और सौन्दर्य का ही विस्तृत रूप है। सौन्दर्य या सुन्दरता क्या है? इस संदर्भ में सभी की राय कभी भी एक समान नहीं हो सकती। एक मां के लिए उसका बच्चा सबसे सुन्दर है, उसके नैन-नक्श चाहे कैसे भी हों। इसी प्रकार एक प्रेमी के लिए उसकी प्रेमिका ही विश्व सुंदरी है। कहते हैं लैला काली थी, लेकिन मजनूं की नज़र में वह खूबसूरती का पैमाना थी। बिहारी लिखते हैं-

लिखन बैठि जाकी छबि,गहि-गहि गरब गरूर।
भय न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।

प्रेम और सौन्दर्य सम्पूर्ण सृष्टि की आधारशिला हैं। यदि हम अपने परिवेश, अपने समाज और संस्कृति की ओर ध्यान से देखें तो यही पता चलेगा कि लोकमानस की जड़ों में यह जल की भान्ति जीवन का संचार करता है। लोककाव्य, लोकगीत, लोकजीवन प्रेम और सौन्दर्य की मिठास से भरा पड़ा है। प्रेम की ऊर्जा से ही प्रकृति निरन्तर पल्लवित, पुष्पित और फलित होती है। प्रेम करना या किसी के प्रेम में संलिप्त होना दुनिया का सबसे खूबसूरत अहसास है। अनादिकाल से सन्त, महात्मा, साहित्यकार, मनोवैज्ञानिक एवं कलाकारों ने अपने-अपने ढंग से इसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है, किन्तु प्रेम तो अपने आप में अनूठा है। उसे किसी परिभाषा में कैसे बाँध सकते हैं? किसी के लिए रूप की रमणीयता महत्व रखती है

तो कोई आत्मिक प्रेम को वरेण्य मानता है। मीरा, कबीर, तुलसी, जायसी सभी ने 'प्रेम' की बात की। ओशो 'प्रेम' के इसी गहन अर्थ को अपनाने पर बल देते हुए कहते हैं- 'जिन्होंने यह प्रेम किया, उन सब ने यही कहा कि वहाँ हार नहीं है, वहाँ जीत ही जीत है। वहाँ दुख नहीं है, वहाँ आनन्द की परत दर परत खुलती चली जाती है।

इसी संदर्भ में महाकवि दिनकर की अमर कृति 'उर्वशी' का उल्लेख करना जरूरी हो जाता है। यह अतिन्द्रीय सौन्दर्य तथा उदात्त प्रेम का ही काव्य नहीं है, बल्कि काम से अध्यात्म तक की महायात्रा का प्रेरक आख्यान भी है। इसमें मानव के जीवन-दर्शन की छोटी-छोटी धाराएँ मिलकर एकरूप हो जाती हैं। दिनकर स्वयं कहते हैं- 'इन्द्रियों के मार्ग से अतीन्द्रीय धरातल का स्पर्श, यही प्रेम की आध्यात्मिक महिमा है।' काम से अध्यात्म की यात्रा ही भारतीय जीवन-दर्शन का शाश्वत स्वरूप है। सूफी कवियों ने इसी को 'इश्के हकीकी' और 'इश्के मिजाजी' की संज्ञा दी है। स्पष्ट है कि 'सौन्दर्य' बीज है तो प्रेम पल्लवित पुष्पित वृक्ष है। दोनों परस्पर पूरक की भूमिका सदियों से निभाते आ रहे हैं।

संस्कृत भारत की अनेक भाषाओं की जननी है। संस्कृत में प्रेम और सौन्दर्य पर विपुल साहित्य-रचना हुई। हिन्दी का रीतिकालीन साहित्य प्रेम और सौन्दर्य के अलग-अलग रंगों की छटा बिखेरता है। इसी प्रकार पंजाब में रचा गया साहित्य लोकजीवन में गहरी पैठ बना चुकी प्रेम और सौन्दर्य की अनुभूति को शब्दों में पिरोता है। पंजाब में विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत जिन्हें 'घोड़ियाँ' और 'सुहाग' कहा जाता है, त्यौहारों के गीत, बोलियां, टप्पे, लोकथाएं, लोकजीवन से जुड़ी रस्में, रहन-सहन, लोकसाहित्य, अर्थात् जीवन के प्रत्येक पक्ष में प्रेम और सौंदर्य के दर्शन होते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक के अवसरों पर गाए जाने वाले गीत लोकजीवन का आईना हैं। बेटी विवाहयोग्य है। संकोच के कारण वह पिता के सामने बैठकर नहीं कह पाती कि उसे सुन्दर और सुयोग्य वर चाहिए। ऐसे में लोकपरम्परा से प्राप्त गीत उसकी मनोकामना को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

बीबी चंदन दे ओहले-ओहले क्यों खड़ी?
मैं तो खड़ी सां बाबल जी दे पास, बाबल वर लोड़िए
ज्यों तारेयां विच चन्न, चन्नां विचों काहन, कन्हैया वर लोड़िए।

अर्थात् वर चाँद जैसा, कृष्ण जैसा होना चाहिए। इसी प्रकार नायिका फुलकारी बनाते हुए, चरखा चलाते हुए भी प्रियतम के प्रेम में मग्न है।

चरखा मेरा रंगला, विच सोने दीयां मेखां
वे मैं तैनूं याद करां, जद चरखे वल देखां

अर्थात् चर्खे में सोने की कीलें लगी हैं। उस सुन्दर चर्खे को देखकर प्रियतम की याद ताज़ा हो जाती है। पंजाब में विवाह के अवसर पर लड़के वालों पर व्यंग्य करने के लिए चुहलबाज़ी करते हुए सिठनियां गाई जाती हैं, जिनमें दुल्हन के रूप सौन्दर्य को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है।

कुड़ी तां साडी तिल्ले दी तार ए
मुंडा तां दिसदा कोई युमियार ए, जोड़ी तां फबदी नहीं।

अर्थात् दुल्हन दूल्हे से कहीं अधिक सुंदर है, इसलिए दूल्हा फीका पड़ रहा है।

सहेलियाँ चाहे कितनी भी चुहलबाज़ी करें, वर पक्ष इसका बुरा नहीं मानता। यही इन रस्मों और गीतों का सौन्दर्य है। पंजाबी लोकगीतों का एक रूप 'ढोला' भी है, जिसे ढोलक के साथ गाया जाता है। इनमें भी प्रेमी-प्रेमिका या पति-पत्नी का परस्पर आकर्षण ही मूलभाव होता है।

बाज़ार विकेंदी खण्ड वे
तूं मिश्री ते मैं गुलकन्द वे
दोवें चीज़ां मिट्ठीआं वे ढोला।

अर्थात्, मेरा-तुम्हारा रिश्ता मिश्री और गुलकन्द जैसा मीठा है।

पंजाब के लोकनृत्य गिद्दा, भांगड़ा, सम्मी, लुड्डी, झूमर, किकली तथा लोकनाटक स्वांग, नौटंकी, लीला नाटक सामूहिक रूप से लोकमानस से जुड़े अहसास को प्रत्यक्ष या सांकेतिक रूप से साकार करते हैं। गिद्दे में मस्ती से नृत्य करती हुई महिलाएँ खुलकर अपना सुख-दुख बयान करती हैं। इनमें सास, ननद, जेठानी तो निशाने पर रहती हैं पर पति के प्रति कोमल भावनाएं ही उमड़कर सामने आती हैं। प्रियतम का आकर्षण ऐसा है कि घूँघट करने के बावजूद भी आँखें उसी को ढूँढती हैं-

ईंर के, ईंर के, ईंर के नी
अक्खां जा लड़ियाँ, घुंड चीर के नी।

प्रेम और सौन्दर्य पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सन्तान, भाई-बहन, माता-पिता तथा जन्मभूमि भी इसके दायरे में आते हैं। ससुराल में बैठी नायिका को सावन के महीने में अपनी सखियाँ, अपना मायका, अपना बचपन सब कुछ याद आता है और वह दूर परदेस में बैठे पक्षियों को अपनी व्यथा सुनाती है-

''उड़ जा चिड़िए! उड़ बहि जा रेते
मेरी अंबड़ी बाज़ों नी कौन करदा चेते?
मेरे बाबल दित्तड़ी दूर ए।''

भाई के प्रति बहन का प्यार कभी लोरी तो कभी किकली के माध्यम से साकार होता है।

नी वीर मेरा क्यों रोवे
सोने दे कटोरे विच मुँह धोवे।

भाई के प्रति प्रेम में ममत्व भाव अधिक है तो देवर के प्रति सखाभाव की प्रधानता है। भाभी देवर से मज़ाक करते हुए कहती है कि तुम अपनी तैयार हो चुकी फसल की रक्षा के लिए स्वयं जाओ। मैं धूप में अपने सौन्दर्य को नष्ट नहीं करूंगी-

तेरे बाजरे दी रावी, देओरा मैं न बँहदी वे।

पंजाब में प्रचलित लोककथाएँ- जिनमें परी कथाएँ, भूत-प्रेत कथाएँ, नीति कथाएँ, दन्तकथाएं, पुराण-कथाएं, लोककथाएँ आदि शामिल हैं, इनमें भी कथातन्तु कहीं न कहीं प्रेम और सौन्दर्य के साथ ही जुड़ते हैं। इनमें वर्णित सौन्दर्य मन और कर्म के धरातल को भी स्पर्श करता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि प्रेम और सौन्दर्य मानव मन की सहज अनुभूति हैं। इनका विस्तार उस के नित्यप्रति के क्रियाकलाप के साथ-साथ उसकी सभ्यता, संस्कृति एवं समाज तक व्याप्त रहता है। यह विशाल एवं गहन गम्भीर सागर के समान है। इसमें जितना गहराई से प्रवेश किया जाएगा उतने ही जीवन के अनमोल मोती प्राप्त होंगे। ये अनुभूतियाँ युगों से हमारे जीवन का अभिन्न अंग रही हैं। इन्हीं के साथ ही मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल एवं सुरक्षित रहेगा।

इश्क़े-मिज़ाजी इश्क़े-हक़ीक़ी

मनोज कुमार मिश्र
शोध छात्र, दर्शनशास्त्र विभाग,
इ.वि.वि., इलाहाबाद
mkumar.au1110@gmail.com

किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति हमारा लगाव उस व्यक्ति या वस्तु को सुंदर बना देता है और कभी-कभी सुंदर व्यक्ति या वस्तु के प्रति हमारा स्वाभाविक लगाव स्थापित हो जाता है। अतः इसका निश्चय कठिन है कि पहले प्रेम है या फिर सौन्दर्य, किंतु यह निश्चित है कि सौन्दर्य एक आत्मनिष्ठ व कालसापेक्ष प्रत्यय है, जो समय के साथ घटता-बढ़ता रहता है।

सौन्दर्य को आत्मनिष्ठ कहने का एक मात्र अभिप्राय यह है कि सुन्दरता हमारे अंदर है बाहर नहीं। एक ही व्यक्ति या वस्तु, जब तक हम उस पर अनुरक्त थे सुंदर लगती है और हम उस पर मर-मिटने को अमादा रहते है, सब कुछ कुर्बान करने को तत्पर रहते हैं।

''हैं तेरी अदाएं कि अंजता की गुफाएं
कुर्बान हैं सौ ताजमहल तेरे बदन पर"

दूसरे ही क्षण विरक्त की स्थिति में उस व्यक्ति या वस्तु के संबंध में घृणा-सी हो जाती है और हम उस व्यक्ति या वस्तु को ही समाप्त कर देना चाहते हैं।

''ठुकरा के मेरा प्यार मेरा इंतकाम देखेगी''

तय है, जहां सौन्दर्य पहले होता है और प्रेम बाद में, वहां प्रेम की भी एक आयु सीमा निश्चित हो जाती है और सौन्दर्य के सामाप्त होते ही प्रेम भी समाप्त हो जाता है। किंतु इसके विपरीत जहां प्रेम महत्वपूर्ण होता है वहां सौन्दर्य मायने नहीं रखता और प्रेम दीर्घायु को प्राप्त कर एक मिसाल कायम करता है।

''दर्पण तुम्हें जब डराने लगे
जवानी भी दामन छुड़ाने लगे
तब तुम मेरे पास आना प्रिये
मेरा दर खुला है खुला ही रहेगा
तुम्हारे लिए...."

मन में इस प्रश्न का होना स्वाभाविक है कि आखिर प्रेम व सौन्दर्य है क्या? यहां मैं स्पष्ट करता चलूं कि सौन्दर्य व प्रेम दोनों अपरिभाष्य हैं। हम जब भी सौन्दर्य (Beauty) की बात करते हैं, वह सौन्दर्य न होकर सुन्दरता (Beautiful) होती है । इसी प्रकार प्रेम के भी दो रूप हैं इश्के-मिज़ाजी व इश्क़े-हक़ीक़ी। इश्के हक़ीकी स्पिनोजा का प्रेम है, जो कि अपरिभाष्य है। यहां प्रेम व सौन्दर्य की चर्चा इश्के मिजाजी व सुंदरता के ही अर्थ में की जा रही है।

सुंदरता है क्या? क्या सुंदरता की पहचान महज चमड़ी की सफेदी है, जो अपनी हिरनी जैसी चाल, इतराती मदभरी आंखों, तराशी हुई संगमरमरी देह रूपी ज्वाला से सबको झुलसादे तथा सबके चरित्र चिंतन को अपने हावभाव से दूषित कर दे।

नहीं, "सुंदरता व्यक्ति के व्यक्तित्व में निहित गुणों का समुच्चय है, जो उच्च मानवीय गुणों से युक्त है, दया, क्षमा, दानशीलता आदि सद्गुण जिसके आभूषण हैं, जिसकी विशालता के चलते अनेक जिंदगियां विकसित हुई हों, वहीं सुंदरता है।"

प्रायः हम वासनाओं को भड़काने वाली रूप राशि के अभाव में किसी व्यक्ति या वस्तु को असुंदर कह बैठते हैं, किंतु ध्यान रहे रूप राशि भले ही दो लोगों में क्षणिक आकर्षण पैदा करती हो, पर संबंधों की डोर मृदुल व्यवहार बिना कहां जुड़ पाती है? क्या कभी चरित्र की उज्वलता के अभाव में विश्वसनीयता पनपी है?

इसके विपरीत प्रेम एक व्यापक शब्द है, किंतु कुछ लोग उसे भावात्मक उत्तेजना मात्र कहकर परिभाषित करते हैं, जिनके अनुसार प्रेम नर नारी के बीच दैहिक आकर्षण के अतिरिक्त और कुछ नही हैं। पर दैहिक आकर्षण से अलग करके ही हमें प्रेम के स्वरूप को समझने का प्रयास करना चाहिये, तभी हम प्रेम के विराट् शक्ति-स्वरूप तथा उसके प्रभाव को समझ सकेंगे। एलाइड स्टीवेंसन प्रेम कों परिभाषित करते हुए कहते हैं "प्रेम का अर्थ भावुकता या अधिकारपूर्ण भावना नहीं है, अपितु दूसरों के वैशिष्ट्यों की सतत् पहचान और निरंतर उनके भले की कामना है।"

माता-पिता का अपने बच्चे के प्रति प्रेम जहां बच्चे के हित चिन्ता के रूप में दिखता है, वहीं बच्चे का माता- पिता के प्रति प्रेम आदर व सम्मान के रूप में प्रकट होता है। इसी प्रकार पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति प्रेम जिम्मेदारी व समझ पर आधारित होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रेम वह रचनात्मक अभिव्यक्ति है, जिसमें हित चिन्ता, आदर, सम्मान, जिम्मेदारी व समझदारी के भाव निहित हैं।

प्रेम एक प्रकार का उत्प्रेरक है, जो प्रेरित करता है और कार्य करने की एक बड़ी क्षमता प्रदान करता है। 'ये दिल आशिकाना' फिल्म (कुक्कू कोहली द्वारा निर्देशित) में इसे बखूबी समझा जा सकता है। जहां करन और पूजा को दो प्रेमी के रूप में फिल्माया गया है। पूजा की फ्लाइट हाईजैक हो जाने पर करन जान की परवाह किए बिना पूजा और अन्य को अपहर्ताओं से मुक्त कराते हुए बचाता है तथा सबकी नजरों में हीरो बन बैठता है। शायद यह उन दोनों के बीच का प्यार ही था, जो उसे इस मुकाम तक पहुंचा देता है।

प्रेम उत्थानकारी है, विकासकारी है, इसे और अधिक स्पष्ट करने के लिए अश्विनी चौधरी द्वारा निर्देशित फिल्म 'गुड बॉय बैड बॉय' को लिया जा सकता है। जहां राजू मल्होत्रा व राजन मल्होत्रा एक पोल के दो ध्रुव की तरह हैं। एक खेलकूद में अच्छा है तो दूसरा पढ़ने में। दोनों के जीवन में एक लड़की आती है। वह राजू को क्विज कम्पटीशन में व राजन को डांस कम्पटीशन में अव्वल स्थान दिलाती है। यह दोनों के प्रेम का ही परिणाम है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रेम विकासशील है।

इसके विपरीत सौन्दर्य विनाशकारी सिद्ध होता है। संभवतः लंका के विनाश का कारण सीता का सौन्दर्य ही था, जिस पर अनुरक्त हो रावण अपना सर्वस्व खो बैठता है। समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत पान का हल निकालने के लिए भगवान विष्णु को भी सौन्दर्य का सहारा लेना पड़ता है, जिसमें फंस राक्षसगण अमृतपान से वंचित रह जाते हैं। यही नहीं भस्मासुर से शिव के रक्षणार्थ एक सौन्दर्य को ही आगे आना पड़ता है, जिस पर अनुरक्त हो वह अपने सर पर ही हाथ रख भस्म हो जाता है।

वैसे प्रेम व सौन्दर्य के कितने भी अलग-अलग कसीदे क्यों न पढ़ लिए जाए, एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। जहां प्रेम है वहां सौन्दर्य होना स्वाभाविक है, भले ही वह व्यक्ति या वस्तु कितनी ही बुरी क्यों न हो? प्रेम मानो समस्त बुराइयों का हरणकर उस व्यक्ति या वस्तु को पवित्र बना देता है, सुंदर बना देता है। किंतु सौन्दर्य में भी प्रेम हो यह आवश्यक नहीं। "संभव है प्रेम के रस का पान कर चुका मन सौन्दर्य के रस से विमुक्त हो जाए।"

जीवन की चिड़िया

जीवन की धारा में, हम सभी बहे जा रहे हैं
उस चिड़िया को क्या देखना, वह तो रोज ही मेरे घर आती है
मैं जब भी उस दरवाजे से दफ़्तर के लिए निकलता, वह चिड़िया उसी दरवाजे पर बैठी
मिलती और मेरे पास आते ही उड़ जाती है।
फिर एक दिन.....वह नहीं आई
पर मैं तो पहले ही दफ्तर के लिए लेट था,
निकल गया बिना पलटे, बिना यहाँ वहाँ देखे
आज रिटायर हुए एक साल हो चला है, और जहाँ से सदा निकलता था, उसी दरवाजे पर बैठा अखबार पढ़ता हूँ
पता नहीं आज, अचानक उस चिड़िया की याद क्यूं आ गई
बार-बार दरवाजे पर नजर जाती है कि शायद अब वह चिड़िया उड़ कर आएगी, पर वह नहीं आती
अब जिंदगी की शाम ढलने को है, हाथ में अखबार को छोड़ कुछ नहीं मिलता
यह साठ साल की जिंदगी चंद पल-सी लगती है, कब निकल गई पता ही नहीं चला
उस चिड़िया की तरह न जाने कितने सौंदर्य से मैं अछूता ही रह गया
वह चिड़िया रोज दस्तक देती, पर मैं तो अपने में गुम रहता,
आज लगता है, ना जाने किस-किस ने दस्तक दी होगी, पर मेरा जीवन उन सबसे वंचित ही रह गया
वह नए दिन की सुबह की धूप, वह दूध वाले की घंटी , वह माँ की लकड़ी की टक-टक , बच्चों की किलकारी...
सब कुछ... सब कुछ याद है... पर जिया-सा नहीं लगता
काश वह चिड़िया एक बार फिर आ जाती और मैं उसे देख थोड़ा रो लेता...।

शशि भूषण सिंह,
भोपाल
s.shashibhushan@gmail.com

Love doesn't need to be perfect,
It just needs to be True

pinterest

अपेक्स बैंक
मध्यप्रदेश राज्य सहकारी बैंक मर्यादित

प्रदेश में कृषि क्रांति के सूत्रधार
मुख्यमंत्री का सपना हो रहा साकार
स्वर्णिम मध्यप्रदेश की पहचान बना समृद्ध किसान

0 % ब्याज दर पर

65 लाख किसान परिवारों को वर्ष 2017-18 तक
25 हजार करोड़ के फसल ऋण वितरण का लक्ष्य.
समस्त सहकारी बैंकों में एन.ई.एफ.टी. एवं
कोर बैंकिंग की सुविधाएं लागू

समृद्धि आपकी, योजनाएं हमारी
क्यों देखें महज सपने, आइये करें उन्हें साकार

केन्द्र/राज्य शासन/शासकीय निगम, मण्डल, बोर्ड, समस्त सहकारी संस्थाओं एवं राष्ट्रीकृत बैंकों के कर्मचारियों हेतु रियायती ब्याज दर पर ऋण सुविधा

ब्याज दर **10.5%**

- वाहन ऋण
- भ्रमण ऋण
- त्यौहार ऋण
- आवास ऋण
- उपभोक्ता ऋण
- अचल सम्पत्ति के बंधक पर ऋण
- व्यक्तिगत ऋण
- उच्च शिक्षा ऋण
- चिकित्सा ऋण

अपेक्स बैंक की समस्त शाखाओं में
आपका हार्दिक स्वागत है

अपेक्स बैंक

विद्या परम् दैवतम्
Responsibility • Respect • learning

Nursery to IX & XI (All Subject)

the best way of education...

KDPS
kamla Devi Public School
(A Senior Secondory' Co-ed., English Medium School)

Affiliatd to CBSE No. 1030680
ISO certified 9001:2008

kamla Devi Public School, Behind BMHRC,
Near Korond Mandi, Chhola Over Bridge Road, Bhopal (M.P.)
Web.: www.kdpsbpl.in, E-mail : Kdps.bpl@gmail.com
Phone No. : 0755-2970179 Mob. No. : 7440447043/44/45

MADAN MAHARAJ COLLEGE

Successfully running since last 18 years
Accredited by NAAC with "B" gaade, College code : p087

Facilities
- Competent Teaching Staff
- Scholarship Facilities available for SC,ST, OBC & Minority Student.
- Rich Automated Digital Library
- Modern & well equipped Science Lab & Computer Lab.
- Language & IT Labs.
- Affordable Fee Structure.
- Indoor & Outdoor Sports, Wi-fi Campus
- Canteen & Bus Facility
- N.S.S.

Courses Offered
- **B. Com. (Plain)**
- **B. Com. (Computer)**
- **B.B.A.** • **B.C.A.**
- **B.Ed.** • **M.Ed.**
- **D.El.Ed.**

Madan Maharaj College
(Recognised by NCTE, Approved by Govt. of M.P. & Affiliated to Barkatulla University, Bhopal)
Behind BMHRC, Near Karond Galla Mandi,
Chhola Over Bridge Road, Bhopal
Contact : 0755-2970174, 9826036019, 9303115138
E-mail : mmcbpl1999@gmail.com, web. : mmcbhopal.com

विम्मी मनोज
vimmiemanoj@yahoo.com